Sunita Bharti

Achievements & Awards

Theatre

Direction

1. Yakshini (Educational & Public museology) - 3 shows produced by Govt. of Bihar & ICCR
2. Andha-Yug (By Dharmveer Bharti)- Asstt. Dir.
3. Vijay Vibhuti (By Dr. C. N. Singh) – Asstt. Dir.
4. Naya Bangla (By Anil Kumar Mukharji)- Asstt. Dir
5. Nadi Ka Pani - Asstt. Dir
6. Do Hichkiyan (By Dr. C. N. Singh)- Prod. Asstt.

Acting

1.Yakshini (By Arvind Kumar) 3 shows
2.Andha-Yug (By Dharmveer Bharti) 3 shows
3.Khamosh Adalat Jaaree Hai (By Vijay Tendulkar)
4.Nag-Mandal (By Girish Karnad)
5.Gora (By Ravindranath Tagore) 2 shows
6.Meenu (By Ravindranath Tagore)
7.Badnaam (By Ravindranath Tagore) 2 shows
8.Kadambini (By Ravindranath Tagore) 2 shows
9.Kanchanrang (By Shombhu Mitro) 2 shows
10.Bhamashah (By Dr. C. N. Singh)
11.Shershah (By Dr. Chaturbhuj) 2 shows
12.Ghar-Jamai (By Premchand)
13.Sadgati (By Premchand) 2 shows
14.Vadh-Sthal-Se-Chhalang (By Hrishikesh Sulabh) 2 shows
15.Kabira Khada Bazar Men (By Bhishma Shahni)
16.Ashok (By Dr. Siddhnaath Kumar)
17.Sur-Sundari (By Dr. Shanti Jain)
18.Tukdon-Tukdon Me Aurat 2 shows
19.Veergati
20.Doshi Kaun (By A. K. sinha)
21.Kursi Puran
22.Accident (By S. P. Singh)
23.Bhrun Hatya: Ek Abhishap
24.Pande Ji Ka Patara
25.Parinda Ud Gaya By Dr. Dinanath Sahni)
26.Madhuyamini (Maithili)
27.Lorhanath (Maithili)
28.Naya Bangla (By Anil Kumar Mukharji)
29.Gandhi Ke Charan Champaran Me (A. P. Sinha)
30.Others…..

Costume

1. Teesree Kasam (By Fanishwar Nath 'Renu')
2. Chakravyuh
3. Kaumudi Mahotsav (By Dr. Ram Kumar Verma)
4. Yakshini (Arvind Kumar)

Street Theatre

1.Mission 1000 Ton (For Cleanliness Campaign By daily "Dainik Jaagran")
2.Swachhata Abhiyan (For Cleanliness Campaign By Madhyam Foundation)
3.Sanskarika (For Ethics and Education by FACES)

Television/Film

TV Serial :

1. **Balchanma (**Telecast on DD Kisan & DD Bihar)
   Played mother of eponymous protagonist
   Directed by Lal Vijay Shahdeo (a Cannes FF Nominee in 2016)
   Based on Baba Nagarjun's novel "Balchanma"
2. **Krishi Darshan**: (Telecast on DD Kisan & DD Bihar)
   A Serial on Agricultural Information written, acted and anchored by Sunita Bharti

Telefilm :

1. **Kharij** (Telecast on DD National & DD Bihar)
   Written by Subhash Sharma
   Directed by Ajay Kant Sharma

Testimonials/ Media Reports

A report by Charusmita (Dainik jagran, Patna)

नाटकों को शिक्षा का पर्याय बना रहीं सुनीता

बेमिसाल

• चारुस्मिता

यक्षिणी नाटक की धोबिन और यक्षिणी किसे याद नहीं होगी। यह रंगमंच के क्षेत्र में ऐसा प्रयोग था जिसने हर वर्ग के दर्शकों को जोड़ा। सुनीता भारती रंगमंच की एक ऐसी कलाकार हैं जिन्होंने पहली बार शिक्षा में नाटक का प्रयोग किया। रंगमंच के बैकग्राउंड से न होने के बावजूद उन्होंने नाटक को एक ऐसी दिशा दी है जिससे वह युवाओं को अपनी धरोहरों से जोड़ रही हैं। एक रिपोर्ट।

कहते हैं अगर आपमें सीखने की ललक है तो उम्र मायने नहीं रखती। पटना की मूल निवासी सुनीता की न तो बचपन से कभी रंगकर्म में रुचि रही और न ही उनके घर में कला का माहौल ही था। उनका बचपन धनबाद के मैथन में गुजरा। शिक्षा दीक्षा के बाद उनकी शादी भौतिकी के लेक्चरर अरविंद कुमार से हुई। पति के कला के क्षेत्र में गहरे रुझान के कारण जब वह पहली बार नाटक देखने गईं तो उनका रंगमंच पर दिल आ गया। कालिदास रंगालय में 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन चल रहा था जब सुनीता को लगा कि यह एक ऐसा माध्यम है जिससे वह कई समसामयिक मुद्दों पर काम कर सकती हैं और लोगों को जागरूक भी कर सकती हैं। इसके बाद शुरू हुआ उनके रंगमंच का सफर।

40 नाटकों में किया अभिनय

उस वक्त उनकी उम्र 29 की रही होगी जब उन्होंने थिएटर की तरफ रुख किया। वह बताती हैं कि उन्हें अभिनय ने इस कदर अपनी ओर खींचा कि उन्होंने बिहार स्कूल थिएटर में एडमिशन ले लिया। सद्गति के बाद थिएटर जगत में उनकी काफी चर्चा हुई। इसके बाद इनका सफर जो शुरू हुआ वह अब भी चल रहा है। नागमंडल, गोरा, यक्षिणी सहित अभी तक उन्होंने करीब 40 नाटकों में अभिनय किया है। इसके अलावा वह दूरदर्शन पर भी कई नाटकों में अभिनय कर चुकी हैं जिसमें डी डी किसान, कृषि दर्शन प्रमुख है। स्मिता पाटिल, हबीब तनवीर, नाना पाटेकर, रोहिणी हसन जैसे शख्सियतों को अपना आदर्श मानने वाली सुनीता बताती हैं कि अभी तो सफर की शुरुआत हुई है मंजिल मिलनी अभी बाकी है।

युवाओं को करती हैं जागरूक

सुनीता युवाओं को अपने धरोहरों के बारे में जागरूक करती हैं। शिक्षा में नाटक के प्रयोग से युवाओं को अपने धरोहर से जोड़ने का काम इन्होंने ही शुरू किया है। इसमें वह शहर के पुरातात्विक धरोहरों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए नाटक की प्रस्तुति करती हैं। फाउंडेशन फॉर कल्चर, एथिक एंड साइंस इनकी एक संस्था है जिसके माध्यम से वह कॉलेज और स्कूल के छात्रों को जोड़ती हैं। इस संस्था में वह युवाओं को जोड़कर उन्हें अभिनय के साथ अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां भी सिखाती हैं। इसी क्रम में इनका यक्षिणी नाटक काफी दिनों तक चर्चा का विषय भी रहा था। इसमें इन्होंने नाटक के माध्यम से यक्षिणी जैसी प्राचीनतम मूर्ति के बहाने पटना के तत्कालीन इतिहास को भी दिखाया था। इस नाटक में वह यक्षिणी और बुलकनी धोविन की भूमिका में थीं। उनके इस नाटक का मंचन पटना म्यूजियम के सौ साल होने पर किया था। इसे इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन के द्वारा भी दिखाया गया। वह बताती हैं कि इस संस्था का मुख्य उद्देश्य युवाओं को अपने स्वर्णिम इतिहास के बारे में कला के माध्यम से जोड़ना है। यक्षिणी के बाद बुद्ध के अस्थि कलश पर नाटक की योजना है इससे लोग बुद्ध के बारे में विस्तार से जान पाएंगे।

पटना रंगमंच हिंदी बेल्ट का सबसे बड़ा केंद्र है। रंगमंच के साथ यहां साहित्य की गतिविधियां भी खूब होती हैं। मुझे अभिनय के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में पटना रंगमंच का भरपूर सहयोग रहा है। यहां रोजाना किसी न किसी केंद्र पर नाटक का मंचन होता है। गंभीर रंगकर्म होने की वजह से कलाकारों के अभिनय में निखार आता है।
पंकज त्रिपाठी, अभिनेता

पटना रंगमंच से जुड़ने के बाद ही मेरे जीवन को नई दिशा मिली। यहां जुड़ने की वजह से अभिनय की दुनिया से परिचय हुआ। दूरदर्शन के कई प्रतिष्ठित सीरियल में काम करने का मौका मिला। पटना में रंगमंच का माहौल होने की वजह से रोजाना नई बातें सीख रही हूं। नाटकों के लिए युवा भी जागरूक हैं।
सुनीता भारती, टीवी अभिनेत्री

अभिनय के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए पटना रंगमंच से बढ़कर कोई स्कूल नहीं हो सकता। यहां के रंगमंच से देश के नामचीन रंगकर्मी जुड़े हुए हैं। रोजाना किसी न किसी नाटक का मंचन होने की वजह से कलाकारों के सीखने के लिए यहां बहुत कुछ है। पटना रंगमंच से जुड़ने की वजह से ही मुझे फिल्मों में काम करने का मौका मिला।
बुल्लू, फिल्म अभिनेता

Media Reports -- Direction (Theatre)

1. Yakshini (By **Arvind Kumar)** : Direction/Acting/Costume
First Hindi play based on ancient artifact of archaeological importance

जागरण सिटी
पटना
www.jagran.com

'यक्षिणी' ने सुनाई संग्रहालय की कहानी

पटना संग्रहालय के शताब्दी वर्ष समारोह के अंतिम दिन आयोजित हुए कार्यक्रम, कलाकृतियों के साथ प्रतियोगिता आयोजित

पटना संग्रहालय के शताब्दी वर्ष पर आयोजित समारोह में नाटक का मंचन करते कलाकार • जागरण

ये थे कलाकार

बुलकनी : सुनीता भारती
जानकी : रितु राज
अकलू : चंदन कुमार
बहरुद्दीन : आर नरेंद्र
नरेंद्र : शुभम सिंह
प्रो. समादार : कुमुद रंजन
वाल्श : अंशुमन
डी बी स्पूनर : अभिनव कश्यप
देवी माधवी : सुनीता भारती
राजशिल्पी भद्रक : आमिर हक

मंच परे कलाकार

प्रकाश एवं ध्वनि : गुंजन कुमार
वस्त्र निर्माण : मोहम्मद सदरूद्दीन
मंच सामग्री : विषयेंद्र नारायण सिंह

यक्षिणी के उद्भव गाथा बताते कलाकार • जागरण

पटना संग्रहालय के 100 वर्ष पूरा होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के समापन दिवस पर दो सत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो द्वारा संग्रहालय की कलाकृतियों के ऊपर कला लेखन एवं पाठ प्रतियोगिता आयोजित हुई। दूसरे सत्र में स्कूल ऑफ थिएट्रिकल आर्ट, फेसेस और पटना संग्रहालय के द्वारा यक्षिणी नाटक का मंचन किया गया। प्रथम सत्र में छात्र-छात्राओं भाग लिया। इसके साथ ही पेंटिंग प्रतियोगिता भी हुई। जिसके बाद त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो की ओर से पुरस्कार वितरण किया गया। इस अवसर पर मधुबनी पेंटिंग की कलाकार उषा झा, लेखक ममता मेहरोत्रा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहीं। कलाकृतियों और पुरावशेषों के ऊपर अंजलि यादव, प्रियंका वर्मा, सुनीता कुमारी, प्रीति सेन, शिशिर कुमार, प्रीति मधुलिका ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया। इस दौरान यक्षिणी पर लिखी कविता पर शॉर्ट फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। साथ ही धुएं के सिग्नल से मोबाइल सिग्नल का सफर पर भी प्रजेंटेशन हुआ। अवसर पर उषा झा ने विरासत और कला के संगम पर बात की। ममता मेहरोत्रा ने भी कवियों की रचनात्मकता की प्रशंसा की।

लक्ष्मी की प्रतिमा मान कर होने लगी यक्षिणी की पूजा...

अरे...यहां तो सांप था...कही मेरे बच्चे को काट लेता तो मैं क्या करती...बुलकनी का ये संवाद पूरे परिसर में दर्शकों की उत्सुकता को बढ़ा देता है। मंच पर अंधेरा छा जाता है और कपड़े धोने वाले पत्थर के अगल-बगल खुदाई की जाती है। संवाद और प्रकाश संयोजन के सुगम संयोग ने यक्षिणी के उद्भव गाथा को कालजयी बना दिया। मौका था पटना संग्रहालय और फेसेस के द्वारा यक्षिणी नाटक के मंचन का। दो भागों में प्रस्तुत नाटक में यक्षिणी के मिलने से लेकर कलाकृति के म्यूजियम में रखे जाने की यात्रा दिखाई गई। नाटक में दीदारगंज के स्थानीय लोगों के द्वारा यक्षिणी की मूर्ति पर कपड़ा धोने को खूबसूरत ढंग से दिखाया गया। मंचन में यह भी दिखाया गया कि किस तरह 1917 में निकाली गई इस मूर्ति को लक्ष्मी की प्रतिमा मानकर पूजा-अर्चना की जाने लगी थी। प्रस्तुतिकरण को पटना यूनिवर्सिटी के छात्र नरेन्द्र और प्राध्यापक प्रो. समादार, मिस्टर वाल्श, गुलाम रसूल, डॉ. स्पूनर सहित सभी पात्र वास्तविकता की ओर ले जाते हैं। दूसरे भाग में यक्षिणी के मूर्तिकार और इसकी प्रेरणा के बारे में दिखाया गया है। यह भाग कल्पना के आधार पर यक्षिणी से संबंधित कई महत्वपूर्ण सवालों का तर्कपूर्ण उत्तर दे गया। माधवी और भद्रक के इर्द-गिर्द घूमती इस कहानी में सात्विक प्रेम कथा दिखाई गई।

पटना LIVE पटना
हिन्दुस्

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को हुई पेंटिंग प्रतियोगिता, यक्षिणी पर नाटक का हुआ मंचन

म्यूजियम की कलाकृतियों को कागजों पर उकेरा

पटना | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को म्यूजियम परिसर में बच्चों ने पेंटिंग के जरिए म्यूजियम का महत्व बताया। म्यूजियम की अद्भुत कलाकृतियों को पेंटिंग के जरिए कागजों पर उकेरा।

समारोह के तीसरे दिन बुधवार को म्यूजियम की कलाकृतियों के ऊपर कला लेखन, पाठ एवं पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें राजधानी के कई स्कूलों के बच्चे शामिल हुए। बच्चों ने पेंटिंग में पटना म्यूजियम के पुरावशेषों और चित्रों, दुर्लभ सिक्कों, पांडुलिपियों, पत्थर और खनिज, तोप और शीशा की कलाकृतियों को दर्शाया। इसमें म्यूजियम की खास वैशाली में लिच्छिवियों द्वारा भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद बनवाए गए प्राचीनतम मिट्टी के स्तूप से प्राप्त बुद्ध के दुर्लभ अस्थि अवशेष वाली कलश मंजूषा, काफी पुराने चीड़ के एक वृक्ष का जीवाश्म और चामर ग्राहिणी यक्षिणी (दीदारगंज-यक्षिणी) एक विश्व-विख्यात कलाकृति जिसे देखने के लिए विदेश से भी लोग आते हैं उसे पेंटिंग में दिखाया गया। त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो की ओर से विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

यक्षिणी के मिलने से म्यूजियम आने तक की कहानी : समापन समारोह के दूसरे सत्र में पटना म्यूजियम की शान यक्षिणी नाटक का मंचन किया गया। इसमें चामर ग्राहिणी यक्षिणी के मिलने से लेकर पटना संग्रहालय तक आने की कहानी प्रदर्शित की गई।

दो भागों में प्रदर्शित नाटक को दर्शकों ने खूब सराहा। पहले भाग में यक्षिणी कैसे मिली इसे दिखाया गया और दूसरा भाग मौर्य काल की पृष्ठभूमि पर है। चामर-धारिणी जैसे कालजयी कलाकृति का मूर्तिकार कौन था और इसकी प्रेरणा कौन थी। नाटक में कल्पना के आधार पर तर्क के साथ इसका जवाब दर्शकों को मिला। दो घंटे तक चलने वाले इस नाटक में बुलकनी का प्रदर्शन सवश्रेष्ठ रहा। बुलकनी का किरदार सुनीता भारती ने निभाया। इस नाटक के लेखक अरिवंद कुमार और निर्देशक सुनिता भारती थी। मिथिलेश कुमार सिन्हा ने पुरोहित और अमात्य हर्षदिव के पात्र को जीवंत किया। चंदन कुमार ने बकलू ग्रामीण मजदूर और महानायक जयराम की भूमिका निभायी। उन दोनों को सर्वश्रेष्ठ कलाकार के खिताब से नवाजा गया। इस नाटक द हेरिटेज कंसोर्टियम पश्चिम पटेल नगर के संवेदक विभाष कुमार ने संस्था फेसेज को एक सुंदर प्रस्तुति के लिए 21 हजार रुपए का दान सुनीता भारती को प्रदान किया गया। भारतीय कला भवन वाराणसी के पूर्व निदेशक डॉ. डीपी शर्मा ने नाटक की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रस्तुति अपने जीवन काल में यक्षिणी के ऊपर नहीं देखी। इस मौके पर पुस्तक यक्षिणी का विमोचन हुआ। फेसेज यक्षिणी नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मिथिलेश कुमार सिन्हा एवं चंदन कुमार को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को चामर ग्राहिणी यक्षिणी के मिलने से लेकर पटना संग्रहालय तक आने की कहानी नाटक के जरिए प्रदर्शित की गई। • हिन्दुस्तान

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को किया पुरस्कृत

अंत में मंगलवार को आयोजित निबंध लेखन वाचन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसका चयन निर्णायक मंडल ने किया। मंडल में काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ वितरंजन प्रसाद सिन्हा, संग्रहालय के पूर्व निदेशक उमेश चंद्र द्विवेदी, पटना संग्रहालय के शोध सहायक शिव कुमार मिश्र, भैरव लाल दास शामिल थे। धन्यवाद शंकर सुमन ने किया।

top

2. MAI HOON PATNA SANGRAHALAY (by Arvind Kumar) : Director/producer/singing

संस्कृति एवं पुरातत्व विषय लेकर इसलिए पढ़ना चाहते हैं कि वे अपने देश के अतीत के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकें व उसके साथ-साथ उन्हें नौकरी भी मिल जाये. वर्तमान में किसी भी विवि, राज्य शासन के

पुरातत्व निधि उजागर करने की आवश्यकता है

आगे डॉ शर्मा ने कहा कि हमारे देश के पुरातत्व निधि को उजागर करने के लिए आज बड़ी आवश्यकता है कि विभिन्न राज्यों के संस्कृति एवं

व विकसित कर हजारों देशी व विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है. मैंने सिरपुर, राजीम, मटकुदीप, करकाभाट आदि स्थलों की खुदायी की है. वे हूबहू बिहार के उत्खननों से प्राप्त अवशेषों से मिलते जुलते हैं, जो इस बात का प्रमाण है

प्रस्तुत किया. इस अवसर पर पुरातत्व निदेशक डॉ अतुल कुमार वर्मा, डॉ चितरंजन कुमार सिन्हा, जया पार्थव, विभास कुमार, सत्येंद्र झा, डॉ शिवकुमार मिश्र समेत कई जाने माने पुरातत्वविद व प्राचीन इतिहास के विशेषज्ञ मौजूद थे.

'मैं हूं पटना संग्रहालय' से बताया, विस्तृत इतिहास

पटना. एकल अभिनय 'मैं हूं पटना संग्रहालय' के माध्यम से पटना म्यूजियम के जन्म से लेकर सौ साल पूरा होने तक की पूरी कहानी बहुत ही रोचक ढंग से कही गयी. साथ ही, इसमें म्यूजियम की विभिन्न दीर्घाओं और यहां संग्रहित पुरावशेषों की विशेषताओं को भी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया. पूरे अभिनय के दौरान अभिनेता बुल्लु की भाव भंगिमा और प्रस्तुति इतनी जानदार थी कि मौके पर मौजूद दर्शक उसे एकटक देखते रहे. रंग बिरंगी रौशनी और कंप्यूटर के माध्यम से स्क्रीन पर दिखाये गये स्व सचिदानंद सिन्हा और पटना हाइकोर्ट के उस हिस्से की तसवीर जहां सौ वर्ष पहले पटना म्यूजियम की स्थापना की गई थी, भी रोचक लग रही थी. बीच बीच में बज रही म्यूजिक और तालियों की गड़गड़ाहट भी आकर्षक ऑडियो इफेक्ट पैदा कर रही थी.

कार्यक्रम में कोरस गायन ने भी बांधा समां

बुल्लु कुमार के एकल अभिनय के बाद फेसेस के सचिव सुनिता भारती और शालिनी के द्वारा गाया गया कोरस गीत 'सौ वर्ष से खड़ा हुआ मैं पटना संग्रहालय हूं...' भी आकर्षक रहा. गीत के बोल में पूरे पटना संग्रहालय के इतिहास को संक्षिप्त रूप से समेटने का प्रयास किया गया है, जो प्रशंसनीय बन पड़ा है. धुन इतनी कर्णप्रिय है कि हॉल में उपस्थित कई श्रोता खुद ब खुद इसे गुनगुनाने लगे.

प्रस्तुति देते अभिनेता बुल्लु.

3. ANDHA YUG (Dharmveer Bharti) : Asst. Director

एक्टिविटी PATNA, THURSDAY, 12/02/2015 2

यह अजब युद्ध है, नहीं किसी की भी जय

DRAMA

डीबी स्टार » पटना

यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा...

इन पंक्तियों से महाभारत युद्ध की विभीषिका को बुधवार को कालिदास रंगालय में दिखाया गया। मौका था यहां डॉ चतुर्भुज की स्मृति में शुरू हुए छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव 2015 के पहले दिन हुए नाटक अंधा युग के मंचन का। नाट्योत्सव का आयोजन मगध कलाकार और कला जागरण के संयुक्त तत्वाधान में किया गया है। धर्मवीर भारती के लिखे इस नाटक को बिहार आर्ट थियेटर की ओर से वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार ने निर्देशित किया था। नाटक में महाभारत के

ये थे कलाकार

सुनीता भारती, उदित कुमार, चक्रपणि पाण्डेय, डॉ शंकर सुमन, मो. दानिश, सुजित कुमार शर्मा, नीरज कुमार, नीरज सिंह, वैभव विशाल, रंजन कुमार, प्रवीण कुमार।

निर्देशक सुमन कुमार
सहायक निर्देशक सुनीता भारती
प्रस्तुति प्रभारी प्रदीप गांगुली
प्रस्तुति नियंत्रक कुमार अनुपम
प्रकाश- उपेंद्र कुमार, राजकुमार शर्मा

अठारहवें दिन की शाम की कहानी से लेकर श्रीकृष्ण की मृत्यु तक को दिखाया गया।

नाटक अंधा युग के मंचन से पहले हुई गणेश वंदना

नाटक अंधा युग

नाटक नाटक अंधा युग कालिदास में अलोक चन्दा, राम कृपाल यादव, ऋषिकेश सुलभ, ध्रुव कुमार।

डॉ चतुर्भुज रंग पत्रकारिता सम्मान से किए गए सम्मानित

पटना। छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव 2015 के पहले दिन इस वर्ष के डॉ चतुर्भुज रंग पत्रकारिता सम्मान से दैनिक भास्कर के पत्रकार साकिब इकबाल खां को वरिष्ठ साहित्यकार ऋषिकेश सुलभ के हाथों सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव, बिहार राज्य संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक चन्दा, मगध कलाकार की अध्यक्ष डॉ मिथलेश कुमारी मिश्र, सचिव डॉ अशोक प्रियदर्शी, कला जागरण के अध्यक्ष गणेश सिन्हा, सचिव सुमन कुमार, वरिष्ठ रंगकर्मी अमीय नाथ चटर्जी, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा समेत बड़ी संख्या में शहर के रंगकर्मी और बुद्धिजीवी मौजूद थे।

गांधी चौक का हुआ मंचन

नाटक में दिखी देवन मिसिर की बुद्धिमानी

top

4. NAYA BANGLA (Anil Kumar Mukherjee) : Asst. Director

विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों के 264 कैडेटों ने भाग लिया। साथ ही गणतंत्र कुमार, जेडब्ल्यू में सौम्या कुमारी, ड्रॉल में सिपिन कुमार, अमित कुमार मंडल, एमएम मिश्रा सुमन, टीओ रविशंकर, सूबेदार मेजर ललन कुमार उपस्थित थे। अपना इतिहास एवं मगही कविता पालतू कुत्ता सुनाया। सचिव प्रमोद कुमार समेत दर्जनों संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

कालिदास रंगालय रंग सृष्टि की ओर से चल रहे नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन सुमन कुमार के निर्देशन में 'नया बंगला' ने दिखाया

अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण बर्बाद होता परिवार

पटना • डीबी स्टार

महत्वाकांक्षा अच्छी बात है लेकिन यह महत्वाकांक्षा जब अर्थहीन बन जाए तो फायदे की जगह नुकसान पहुंचाती है। इसी अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण कई परिवार बर्बाद हो चुके हैं। ऐसे ही एक परिवार की कहानी दिखी बुधवार की शाम कालिदास रंगालय में मंचित नाटक 'नया बंगला' में। यहां रंग सृष्टि की ओर से चल रहे नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन इसका मंचन किया गया।

नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से मंचित इस नाटक के निर्देशक थे सुमन कुमार। नाटक का मुख्यपात्र हरेंन्द्रनाथ पत्नी रुकमणी और दो बच्चों अमित और अरुणा के साथ रहता है। परिवार खुशहाली से भरा जीवन बिताता है। वहीं जीवन नाम के एक बांग्लादेशी शरणार्थी को वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त करता है साथ ही अपने घर में आश्रय भी देता है। हरेंद्रनाथ ने ठेकेदारी से अच्छा पैसा कमाने के बाद शहर के पॉश इलाके में नया बंग्ला बनवाता है। धन देख रूकमणी मध्यम वर्ग की जीवन शैली को छोड़ उच्च वर्गीय तौर तरीकों को अपनाने की कोशिश करने लगती है। इसके कारण पति-पत्नी में काफी तकरार भी होती है।

वैचारिक असंतुलन का परिणाम यह होता है कि अमित नशेबाज और अरुणा चरित्रहीन हो जाती है। रुकमणी मुहल्ले में रहने वाले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कृष्णकांत से फ्लर्ट करने लगती है। साथ ही जीवन के साथ भी उसके अनैतिक संबंध हो जाते हैं। बाद में रुकमणी को अपने कामों के कारण शर्मसार होना पड़ता है। इसके बाद वह जीवन पर आरोप लगा घर से निकाल देती है। बेसहारा जीवन भविष्य और चरित्र इस प्रकार हनन सह नहीं पाता और आत्महत्या कर लेता है। पूरा परिवार एक अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण बर्बाद हो जाता है।

कलाकार

- सुनीता भारती, गुंजन कुमार, आमिर हक, रिया कुमारी, नीतिश कुमार, शंकर सुमन
- नाट्यकार - अनिल कु. मुखर्जी
- सहायक निर्देशक - सुनीता भारती
- निर्देशक - सुमन कुमार

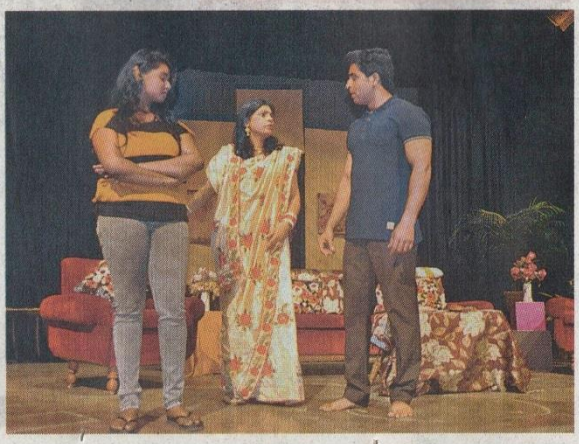

प्रभात खबर
prabhatkhabar.com
लाइफ@प

बहुरंगरूपिया महोत्सव . बंगला नाटक का हुआ मंचन

हाइ क्लास बनने के चक्कर में बरबाद हो गया परिवार

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

कई लोग मिडिल क्लास से जब हाइ क्लास की ओर मुड़ते हैं, तो उनका मानसिक संतुलन भी बिगड़ने लगता है. पैसों की लत और बड़े-बड़े शौक की आदत लोगों को उनकी स्थिति के साथ-साथ उनके चरित्र को भी बदल देता है. मिडिल क्लास से अचानक हाइ क्लास में जाने वाले हरेंद्र नाथ के परिवार की कुछ ऐसी ही कहानी देखने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर यहां बुधवार को रंगश्रृष्टी द्वारा चार दिवसीय त्रैभाषिक रंग-संगम दूसरे बहुरंगरूपिया महोत्सव 2016 के तीसरे दिन कला जागरण पटना द्वारा नया बंगला नाटक का मंचन किया गया, जिसमें एक परिवार की कहानी को नाटकीय अंदाज में बखूबी दर्शाया गया. नये जमाने की सोच में परिवार के बिगड़ते हालात के कई दृश्यों को कलाकारों ने बेहतर तरीके से पेश किया. नाटक में कई दृश्य और डायलॉग्स को सुन दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी. नया बंगला अनिल कुमार मुखर्जी द्वारा लिखित एक पारिवारिक व सामाजिक नाटक है, जिसका निर्देशन सुमन कुमार द्वारा किया गया.

मंच पर :

■ **रुकणी**- सुनीता भारती ■ **हरेंद्र**

मध्य वर्गीय जीवन शैली को तुच्छ समझने लगती है

नाटक में हरेंद्रनाथ और उसकी पत्नी रुकमणी के साथ दो बच्चे अमित और अरुणा भी रहते थे . यह एक छोटा सा परिवार भी रहता है . यहां एक बंगलादेशी शरणर्थी है, जिसे वे अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए नियुक्त किया है, जिसे अपने घर में आश्रय भी देता है . हरेंद्रनाथ की आर्थिक स्थिति अच्छी होती जाती है, क्योंकि वह हरेंद्रनाथ ने स्थिति में जब रुकमणी के पास ज्यादा पैसा आ जाता है, तो वह मध्य वर्गीय की जीवन शैली को तुच्छ समझने लगती है और उच्च वर्गों के तौर-तरीकों को नकल कर हाइ क्लास कहलाने के लिए जोर-शोर से तैयारी करने लगती है . अपनी लाइफ स्टाइल को बिल्कुल बदलने लगती है . इस कारण दोनों पति और पत्नी में तकरार भी होता है . फिर ही नहीं इधर रुकमणी मोहल्ले में रहने वाले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कृष्णकांत से फ्लर्ट करती है . ऐसे में वह जीवन के साथ भी अनैतिक संबंध बना लेती है, लेकिन जब बेटे अमित को इस बात का पता चलता है, तो रुकमणी को शर्मशार होना पड़ता है, फिर भी वह झूठा इल्जाम लगा कर जीवन को घर से भगाने का हुक्म सुनाती है . बेसहारा जीवन अपने

[top](#)

5. VIJAY VIBHUTI (Dr. C. N. Singh): Asst. Director

हिंसा से कभी दिल नहीं जीत सकते

DRAMA

डीबी स्टार। » पटना

हिंसा न कभी किसी घटना का समाधान हो सकती है और न ही हिंसा से कभी किसी का का दिल जीता जा सकता है। मगध सम्राट अशोक जो मानता था कि राजाओं के लिए सत्य और अहिंसा अर्थहीन शब्द है उसे भी अंत में अहिंसा की शरण में आना पड़ा। यह बात कह गया मंगलवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक विजय विभूति। बिहार नाट्यकला प्रशिक्षणालय, पटना की प्रस्तुति इस नाटक के निर्देशक थे उपेंद्र कुमार। नाटक में अहिंसा के महत्व को सम्राट अशोक के प्रसंग में दिखाया गया।

यह थी कहानी

नाटक में दिखाया गया कि धर्मांतरण के पूर्व मगध सम्राट अशोक एक क्रूर और अति-महत्वाकांक्षी शासक था। वह मानता था कि सम्राट कभी अहिंसक नहीं हो सकता है। एक बार सम्राट अशोक बुद्ध का संदेश लेकर आने वाले भिक्षु का उपहास करते हैं, निराश भिक्षु अशोक के दरबार में यह कह कर चला जाता है कि - समय आने पर आप स्वयं अहिंसा के महत्व को समझेंगे।

कुछ दिनों बाद सम्राट अशोक अपनी असीमित युद्ध लिप्सा के अधीन हो कालिंग पर चढ़ाई करते हैं। युद्ध में लाखों जाने जाती है जिसे देखकर अशोक का क्रूर हृदय भी द्रवित हो उठता है। वह युद्ध समाप्ति की घोषणा करते हैं और इस भीषण रक्त-पात के लिए स्वयं को दोषी मानते हुए पश्चाताप करते हैं। तब उन्हें बौद्ध भिक्षु की बात याद आती है जिसे उन्होंने दरबार में उचित सम्मान नहीं दिया था। उनका हृदय परिवर्तित हो जाता है और वह बौद्ध धर्म की शरण में जाने की घोषणा करते हैं। वह मानते हैं कि धरती और संपति नहीं बल्कि उनके हृदय का परिवर्तन ही कालिंग - विजय की सच्ची विभूति है।

निर्देशक और प्रकाश परिकल्पना	उपेंद्र कुमार
नाट्यकार	डॉ छोटू नारायण सिंह
सहायक निर्देशक	सुनीता भारती
मंच परिकल्पना	प्रदीप गांगुली
रूप सज्जा	चंदना घोष
प्रस्तुति नियंत्रक	अशोक घोष
प्रस्तुति प्रभारी	अरूण कुमार सिन्हा
संगीत संयोजन	अरविंद कुमार सिंह
प्रकाश संचालन	राजकुमार शर्मा

यह थे कलाकार

युवराज कुमार, दीपक मिश्रा, रंजन कुमार, सोनू शंकर, भावना शर्मा, वैभव विशाल, रणविजय सिंह, चक्रपाणि पाण्डेय, प्रवीण कुमार, मुन्ना राय और सुनीता भारती।

top

6. NADI KA PANI (Dr. C. N. Singh) : Asst. Director

पटना LIVE

पटना

कालिदास रंगालय में माध्यम फाउंडेशन के कलाकारों ने डॉ. चतुर्भुज लिखित नाटक 'नदी का पानी' का किया अभिनय

जमींदारी ठसक और किसानों का दर्द मंच पर

रंग में कलाकार

पटना | कार्यालय संवाददाता

खेतों में पानी नहीं है हुजूर...पानी बिन फसल खत्म हो जाएंगे...हम भूखे मर जाएंगे...हमारे बाल-बच्चे क्या खाएंगे...हम लगान कैसे देंगे...गांव के किसान रो-रो कर यह बातें कह रहे थे, मगर जमींदार उलटे गरज रहा था। कह रहा था- लगान तो देना ही पड़ेगा। रो कर दो या गा कर दो...। यह सब कुछ इस अंदाज में मंच पर हो रहा था कि दर्शक खामोश होकर बस टकटकी लगाए हुए थे। अरसे बाद माध्यम फाउंडेशन के कलाकार अपने रंग में दिखे। डॉ. चतुर्भुज लिखित नाटक 'नदी का पानी' को कालिदास रंगालय में अपने अभिनय से जीवंत कर दिए।

बढ़िया प्रस्तुति : धर्मेश मेहता के निर्देशन में यह नाटक हुआ। नाटक अपने पहले दृश्य से ही दर्शकों को बांधने में सफल रहा। इस बार मंचीय व्यवस्था भी ठीक-ठाक लगी। खासकर जमींदार के महल को दिखाने के लिए प्रोजेक्टर का प्रयोग ठीक लगा। जमींदारी ठसक का अहसास दर्शकों ने जरूर महसूस किया। जमींदार की भूमिका निभा रहे गुंजन कुमार ने बुलंद आवाज व बेहतरीन अभिनय से नाटक को रोचक बना दिया। झगरू (आर नरेंद्र), मंगरू (कुमुद रंजन लेखू) का अभिनय भी बढ़िया रहा। स्वतंत्रता से पहले की कहानी मंच पर सफल होती दिखी।

मंचन

- कालिदास रंगालय में हुआ 'नदी का पानी' नाटक का मंचन
- डॉ चतुर्भुज लिखित नाटक धर्मेश मेहता के निर्देशन में मंचित

नाटक के कलाकार

गुंजन कुमार (यशवंत राव), सरविंद कुमार (रहमत अली), दीपक सिंह (मि.रेनर), सुनीता भारती (रानी), राकेश कुमार (कड़े खां), आर. नरेंद्र, कुमुद रंजन लेखू, आनंद वर्धन, मो.सद्दरुद्दीन, पारस झा, आशुतोष कुमार, नयन सिंह, दीपक कुमार, अजय कुमार श्रीवास्तव, रणधीर सिंह

परदे के पीछे : सेट डिजाइन- विमलचंद्र विश्वर्मा, सेट निर्माण- बिरवल, संजय महतो, म्यूजिक- गुंजन कुमार, कॉस्ट्यूम- मो.सद्दरुद्दीन, मेकअप- आकाश कुमार, प्रकाश परिकल्पना- उपेंद्र कुमार, सहायक निर्देशक- सुनीता भारती, निर्देशन- धर्मेश मेहता।

बुधवार को कालिदास रंगालय में डॉ. चतुर्भुज लिखित नाटक 'नदी का पानी' का मंचन करते माध्यम फाउंडेशन के कलाकार।

किसानों का दर्द : कैसे नदी के पानी के लिए गांव का जमींदार किसानों को तड़पाता है, नदी पर खुद का अधिकार जताता है और आखिर में किसानों की कैसे जीत होती है, इन सब चीजों को कलाकारों ने मंच पर खूबसूरती से उतारा। नाटक में एक ऐसे गांव की कहानी दिखाई गई जहां के किसान पानी के लिए परेशान थे क्योंकि गांव की नदी पर जमींदार का अधिकार था। आखिर में जमींदार की पत्नी किसानों के साथ मिल जाती है। वफादार रहमत अली भी जान-जोखिम में डाल कर किसानों का साथ देता है। ऊधर जमींदार को यह सब पता नहीं चलता है। वह बस यहीं चाहता है कि अंग्रेजी राज बनी रहे और मेरी जमींदारी चलती रहे। लेकिन पानी की टकराहट आखिर कार आंदोलन में बदल जाती है और अंत में किसानों की जीत होती है।

top

Media Reports -- Acting (Theatre)

1. ANDHA YUG (Dharmveer Bharti) : Asst. director & Acting (Gandhari) 3shaows

2nd Show

प्रभात खबर
www.prabhatkhabar.com
सिटी लाइफ

बिहार आर्ट थियेटर ने किया नाटक का मंचन

नाटक अंधा युग का दृश्य !

कौन बचाये अंधे युग से

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अंधा युग कभी नहीं जा सकता. अंधा युग तब भी था, जब महाभारत युद्ध चल रहा था और आज भी है. गांधारी और धृतराष्ट्र ही तरह आज के जमाने में भी सरकारें अंधी बन कर चल रही हैं. ऐसी ही कुछ बातों को बिहार आर्ट थियेटर रेपेटरी द्वारा गुरुवार को नाटक 'अंधा युग' द्वारा प्रस्तुत किया गया. धर्मवीर भारती द्वारा लिखित इस नाटक को 20वीं सदी का सर्वश्रेष्ठ हिंदी नाटक भी घोषित किया गया. निर्देशक सुमन कुमार ने नाटक को बेहतर दिखाने के लिए सेट पर विशेष ध्यान दिया.

नाटक की शुरुआत दो प्रहरी के बातचीत से शुरू होती है. वे आपस में महाभारत की बातें कर रहे थे. 'यह महायुद्ध के अंतिम दिन की संध्या है. चारों ओर उदासी गहरी छायी है. कौरव के महलों का सूना गलियारा है. घूम रहे केवल दो बूढ़े प्रहरी'. दोनों प्रहरी के संवाद ने दरसा दिया था कि यह कहानी महाभारत के आखिरी दिन की है. इस संवाद के तुरंत बाद ही मंच पर दिख रहे दो प्रहरी ने सूत्रधार बनने का काम किया और नाटक अंधा-युग के बारे में दर्शकों को बताया.

नाटक का मंच सज्जा ही नाटक की कहानी कह रहा था. एक तरफ बैठे गांधारी और धृतराष्ट्र, तो दूसरी तरफ कथा को गायन के रूप में कहनेवाले कलाकार. बिहार आर्ट थियेटर के नये और पुराने स्टूडेंट्स ने मिल कर इस नाटक को पूरा किया. नाटक के निर्देशक वरिष्ठ रंगकर्मी और वरिष्ठ निर्देशक हैं, जिस कारण नाटक में काफी गंभीरता दिखायी दी. मंच से लेकर मंच के पीछे (ग्रीन रूम) तक इसी गंभीरता ने कठिन नाटक को भी हल्का बना दिया.

यह है कथा वस्तु

यह नाटक महाभारत के अठारहवें दिन के शाम से लेकर प्रभास क्षेत्र में कृष्ण की मृत्यु तक की कहानी है. प्रतीक-शैली की इस नाटक में धृतराष्ट्र महत्वाकांक्षा और स्वार्थ जैसी अंधी प्रवृतियों के प्रतीक हैं. अंधा-युग हर उस युग की कहानी है, जिसमें इस प्रकार की अंधी प्रवृत्तियां पनपती हैं, और समाज से प्रकाश की लौ लुप्त हो जाती है. आज जहां भी युद्ध होता है, वहां पर सबसे पहले मानवता, मूल्य और मर्यादा ही मरती है. यही महाभारत में भी हुआ था. मर्यादा और नैतिकता को अनसुनी करनेवाले धृतराष्ट्र को पुत्र-शोक की भयानक अग्नि में जलना पड़ता है. विह्वल गांधारी पुत्र दुर्योधन के अस्थि शेष को देख धैर्य और विवेक खो देती है और कृष्ण को इसका उत्तरदायी समझते हुए उन्हें शाप देती है, जिसे कृष्ण स्वीकार भी कर लेते हैं. वे कहते हैं कि चेतन सत्य के प्रतीक हैं, जो सब में मौजूद हैं. यह कहानी एक व्याध के हाथों कृष्ण की मृत्यु के बाद खत्म होती है.

यह संवाद रहा बेहतरीन

- टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी है मर्यादा, उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है. पांडव के कुछ कम, कौरव ने कुछ ज्यादा. यह रक्तचाप अब कब समाप्त होना है. यह अजब युद्ध है. नही किसी की भी जय. दोनों पक्षों को खोना ही खोना है. अंधों से शोभित था युग का सिंहासन. दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन. अधिकारों का अंधापन जीत गया. जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था, वह हार गया... द्वापर युग बीत गया.
- अठारह दिनों के इस भीषण संग्राम में, कोई नहीं केवल मैं ही मरा हूं करोड़ों बार. जितनी बार, जो भी सैनिक भूशायी हुआ, कोई नहीं था, वह मैं ही था - कृष्ण

ये कलाकार थे मौजूद

नाटक में लगभग सभी कलाकारों ने बेहतर अदाकारी की. इनमें सुनिता भारती, नंदलाल सिंह, उमंग कुमार, रविशंकर, डॉ शंकर सुमन, मुहम्मद दानिश, सुजीत कुमार शर्मा, नीरज सिंह, मनीष कुमार, अरुण सावली, प्रवीण कुमार, नीरज कुमार, नीतीश कुमार, अलका शर्मा मौजूद थीं. रूप सज्जा में अशोक घोष मौजूद दिखे. नाटक के सहायक निर्देशक रविशंकर थे.

top

2. NAG MANDAL (Girish Karnad) : Acting (Rani)

गणेश स्तुति से किया। इसके बाद गतभाव, गत निकास, कविता आदि कलाकार अक्षरा सिंह मौजूद रहे।

पीड़ा • समाज में स्त्रियों को लंबे समय से दोयम दर्जे का बनाकर रखा गया

नाटक नागमंडल में नारी के शोषण की अंतहीन दास्तान

KALIDAS

पटना • डीबी स्टार

समाज में स्त्रियों को लंबे समय से दोयम दर्जे का बनाकर रखा गया है। पुरुष लाख कुकर्म कर ले लेकिन स्त्रियों से हमेशा चरित्रवान होने की उम्मीद करता है। महिलाओं के चरित्र पर बात-बात में सवाल उठाए जाते रहे हैं। इन बातों को रविवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक नागमंडल में दिखाया गया। माध्यम फाउंडेशन की प्रस्तुति और गिरीश कर्नाड द्वारा लिखित इस नाटक की परिकल्पना और निर्देशन राकेश कुमार का था।

नाटक नागमंडल लोककथा पर आधारित था, इसके मूल में इच्छित रूप धारण करने वाले नाग की कहानी है। नाटक की मुख्य पात्र एक ऐसी स्त्री है जो नैतिकता नाम पर मानसिक यातना को झेलने को विवश है।

नाग स्त्री के पति का रूप धारण उससे शारीरिक संबंध स्थापित कर लेता है। नाटक में परपुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित होने से नारी की दुविधामयी स्थिति को दिखाया गया। वह अपने पति की उपेक्षा से आहत है। नाटक में धारित गर्भ के कानूनी और नैतिक पक्षों की पड़ताल भी दिखाई गई। नाटक में नाग को पुरुष के विकृत भावों का प्रतीक मानकर नारी के असहाय बोध और दांपत्य जीवन के अंतरद्वंद्व को दिखाया गया।

यह थे कलाकार

राहुल कुमार, सौरभ कुमार, संटू कुमार, शिवम कुमार, आदित्य राज सिंह, चित्रा श्रीवास्तव, सुनीता भारती, विवेक कुमार, विभा सिन्हा, गुंजन कुमार आदि।

कालिदास रंगालय में नाटक नागमंडल के मंचन के दौरान अभिनय करते कलाकार।

प्रयास करना चाहिए. यह सपना आदि मौजूद थे.

'नागमंडल' से दिखी नारी संघर्ष की कथा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

पति से उपेक्षित एक औरत की भावनाओं को लेकर गिरीश कनार्ड द्वारा गढ़ा गया नाटक 'नागमंडल' रिश्तों के धरातल पर मायावी दुनिया को भी जीवंत करता है. यह रिश्ता, खास कर पति-पत्नी के संदर्भ में बुने गये ताने-बाने की कहानी है जिसे बड़े ही नाटकीय तरीके और साफगोई से बयां किया गया है. रविवार को माध्यम फाउंडेशन द्वारा कालिदास रंगालय में इसे पेश किया गया. राकेश कुमार द्वारा निर्देशित इस नाटक में एक ऐसी औरत की कहानी है, जिसका पति उसे पसंद नहीं करता और अपनी मालकिन के प्रेम में फंसा हुआ है. वह अपनी पत्नी से हमेशा मारपीट करता है. पड़ोस में रहने वाली एक अंधी औरत उसकी पत्नी को टोकती है. इसके बाद उसे पति को अपने वश में करने के लिए टोटके से सम्मोहित करने की जुगत बताती है, मगर वह फेल हो जाती है. इसके बाद उसे एक तरल पदार्थ देती है और उसे उबाल कर पिलाने को कहती है. औरत तरल पदार्थ को उबालती है, मगर वह जहर की तरह लगता है. और वह डर के कारण अपने पति को नहीं गर्भवती हो जाती है मगर पति के इस दोहरे रूप से अनजान रहती है. जब वह गर्भवती होने की बात पति से बताती है तो वह उसे ताने देता है, पंचायत में उसे कसम खाने कहा जाता है, तब नाग ही उसे कहता है अग्नि नहीं नाग को पकड़ कर कसम खाना. कसम खाते हुए वह बोलती है आज तक मैंने अपने पति और नाग के सिवाय किसी को स्पर्श नहीं किया. इसके बाद गांव के लोग इसे देवी का अवतार मान लेते हैं और गांव की रक्षा करने को कहते हैं.

निर्देशक राकेश कहते हैं कि पति बुरा होकर भी बुरा नहीं मगर औरत बुरी न होते हुए भी बुरी, आखिर क्यों? वह कहते हैं कि यह नाटक औरत के उसी द्वंद्व को लेकर बुना गया है जिसका संताप वह युगों से झेलती आ रही है. मंचन के जरिए समाज में नारी संघर्ष की कथा का वर्णन किया गया. नारियों पर होने वाले उत्पीड़न को दिखाया गया.

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

अस्तित्व की लड़ाई लड़ती सकीना

पटना. पूरे मोहल्ले के लड़के सकीना के हुस्न के दीवाने रहते हैं. उसके घर के आगे-पीछे लड़के मंडराते हैं, तरह-तरह की बातें बनाते हैं, लेकिन

top

3. KHAMOSH ADALAT JARI HAI… (Vijay Tendulkar) : Acting (Leela Benare)

वासना के दंश से बेजान जिंदगी

'तुम्हें जीवित छोड़कर तुम्हारे गर्भ में पल रहे जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाए, ताकि तुम्हारे पाप कर्मों का सबूत भावी पीढ़ी के लिए मौजूद न रहे।' जज के इस फैसले के रूप में बुधवार को ये पुरुष प्रधान सोच उभर कर सामने आई। कालिदास रंगालय में मौका था नाटक 'खामोश, अदालत जारी है' के मंचन का। शहर में पच्चीस साल बाद हुई इस प्रस्तुति को कला जागरण के कलाकारों ने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को समर्पित किया।

क्यों कुछ नाटकों का नाम स्वर्ण अक्षरों मे लिखा जाता है। क्यों उसे दुनिया भर के लोगों से सराहना मिलती है। और क्यों कुछ नाटक हरेक काल में सार्थक होते हैं। ये सारी बातें विजय तेंदुलकर लिखित इस नाटक को देखकर सभी अपने आप ही समझ आ जाती है। नाटक के निर्देशक सुमन कुमार ने कहा कि इतने दिनों बाद इस नाटक की प्रस्तुति स्त्रियों को उसका हक दिलाने की एक कोशिश है।

उभरा स्त्री जीवन का दर्द

एक स्त्री के लिए अपने मन से फैसले लेना व उस पर अमल करना कितना मुश्किल होता है, यही इस नाटक के केंद्र में है। साथ ही एक स्त्री को केंद्र में रखकर नाटक पुरुष प्रधान सोच व स्त्री के लिए हीन भाव से ग्रसित समाज को भी प्रमुखता से उजागर करता है।

एक स्त्री की अपनी देह ही किस तरह से उसकी दुश्मन हो जाती है। समाज में ही नहीं घर में भी उसकी अस्मत पर खतरा मंडराता रहता है। वह किसी की वासना की शिकार होती है। फिर समाज की अदालतें चलती हैं। सुनवाई होती है और होती ही रहती है। स्त्री पिसती रहती है, लेकिन फैसले कभी नहीं आते। नाटक की मुख्य पात्र लीला बेणारे भी ऐसी ही पात्र है जो समाज के अधिकांश स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है।

कालिदास रंगालय में नाटक 'खामोश! अदालत जारी है' का मंचन

कालिदास रंगालय में 'खामोश! अदालत जारी है' का मंचन करते कलाकार जागरण

संवादों में स्त्री मन की झलक

नाटक के अधिकांश संवादों से एक स्त्री का अंतर्मन झांकता प्रतीत होता है। 'यह बीसवीं शताब्दी के सुसंस्कृत मानव के अवशेष हैं। देखो ये चेहरे कितने जंगली लग रहे हैं। होठों पर घिसे पिटे खूबसूरत औपचारिक शब्द हैं और भीतर है अतृप्त और विकृत वासनाएं।' ऐसे संवादों ने लोगों को अपने वास्तविक चेहरे से रूबरू कराया। 'यह शरीर मुझे चाहिए, मेरे बच्चे के लिए। उसे मां चाहिए, पिता का हकदार है वह। उसे घर चाहिए, संरक्षण चाहिए, प्रतिष्ठा चाहिए।' ऐसे संवादों में स्त्री की सामाजिक जिम्मेदारी भी झलकी।

ये रहे मंच के कलाकार

लीला बेणारे	सुनीता भारती
बालू रोकड़े	नीतीश कुमार
मिसेज काशीकर	अनुप्रिया
काशीकर	डॉ. शंकर सुमन
कर्णिक	चक्रपाणि पांडेय
सुखात्मे	एस रिज्वानुद्दीन
सामंत	वीर प्रसाद सिंह
पोंक्षे	पुष्कर दयाल
अन्य	आशीष राज, विकास कुमार

नेपथ्य के कलाकार

प्रदीप गांगुली, आदिल रशीद, उपेंद्र कुमार, अरविंद कुमार, राजेश कुमार, संजय कुमार, विनोद कुमार, मो. जईम, दिव्य रतन, सुनील भगत, धर्मेश मेहता, सुनीता भारती, गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, कुमार अनुपम, अरुण कुमार सिन्हा, गुप्तेश्वर कुमार, सुधा खेतान, रमेश सिंह आदि नेपथ्य सहयोगी थे।

जब बकरी ने दिखाई राह...

D2Hshop.com DEALS TO HOME

पोषक शिक्षक ही होते हैं।

विषय पर आयोजित संगोष्ठी में आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव ने कही। यह सम्मेलन बिहार हिन्दी

योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवादज्ञापन प्रबंधमंत्री कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

देने का काम करते हैं।

श्री यादव ने कहा कि बिहार के

सचिव शिव कुमार, प्रदेश महासचिव मनोज कुमार एवं सुजीत कुमार शामिल थे।

नाटक 'खामोश अदालत जारी है' का मंचन

पटना (एसएनबी)। बिहार आर्ट थियेटर के कलाकारों ने कला जागरण के तत्वावधान में नाटक 'खामोश अदालत जारी है' का मंचन बुधवार को कालिदास रंगालय में किया गया। जिसमें स्त्री को खुद के बारे में भी फैसला नहीं ले पाने की समस्या को दिखाया गया। नाटक के लेखक विजय तेंदुलकर हैं। निर्देशन सुमन कुमार ने किया। नाटक में कलाकार संवाद भूल रहे थे। मंच पर एक अजीब सी भाग-दौड़ की स्थिति बनी हुई थी।

नाटक का कथासार-इस नाटक में अपने आप में एक नाटक चलता है। एक नाटक मंडली ने समय बिताने के लिए खेल-खेल में मुख्य पात्र लीला बेणरे पर भ्रूण हत्या का आरोप लगा कर मुकदमा चलाया जाता है। इस दौरान उसकी जीवन कहानी सामने आती है। जिसमे स्त्री दमन की तस्वीर उजागर होती है। लीला दो बार प्रेम करती है।पहला प्रेमी उसका मामा है जो उसकी भावनाओं और शरीर से खेल कर भाग जाता है। जिससे लीला को सदमा लगता है। वह आत्महत्या का असफल प्रयास करती है। दूसरा प्रेमी प्रोफेसर है जिस पर वह अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है। उसका बच्चा जो अभी पेट में ही है उसे वह जीवन देना चाहती है। अपने सुसंस्कृत समाज के दोस्तों से सहयोग की याचना करती है। लेकिन उसके यही दोस्त खेल के बहाने निर्ममता से अपमानित और तिरस्कार कर अस्मिता का चीर हरण करते हैं। इस हालात में कोई मदद नही करता बल्कि सब मजा लेते हैं। अदालत से लीला बरी नहीं होती है।

भाग लेने वाले कलाकार :

लीला बेणारेः सुनीता भारती
काशीकरः शंकर सुमन
सुखात्मेः एस रिज्वानुल्ला
कार्निकःचक्रपाणि पाण्डेय
बालू रोकड़ेः नीतीश कुमार
पोंक्षेः पुष्कर दयाल
मिसेज काशीकरः कुमार अनुप्रिया
सामंतः वीर प्रसाद सिंह
रूप सज्जाः आदिल रशीद, उपेन्द्र कुमार
संगीत संयोजनः अरविन्द कुमार

कालिदास रंगालय में नाटक खामोश अदालत जारी है में भाग लेते कलाकार।

नाटक 'बकरी' का मंचन

पटना (एसएनबी)। नाटक 'बकरी' में रूप में दिखा धर्म पर राजनीति करने वालों का चेहरा। किस तरह राजनेता रीती-रिवाज और धर्म को अपने फायदे का इस्तेमाल करते हैं। नाटक का मंचन बुधवार को प्रेमचंद रंगशाला में किया गया।

मौका था एएमटी के तत्वावधान में चल रहे रंग धमाका महोत्सव का।

नाटक का कथासार- मुख्य किरदार ठाकुर दुर्जन सिंह जो चतुर और दुष्ट है। उसके साथ सत्यवीर और कर्मवीर भी उसके जैसे धूर्त और लालची हैं। इनका सिपाही भी अपने लाभ के लिए उन्ही का साथ देता है। ये चारों जनता को लूटने की साजिश रचते हैं। योजनानुसार एक बकरी को लेकर उसे गांधी जी की बकरी यानि देवी मैया बनाकर पेश करते हैं। पढ़े-लिखे और विद्रोही है। वे अंधविश्वास का विरोध करते हैं। लेकिन गांव वाले इसे समझ नही पाते हैं। बकरी की मालकिन और युवकों को जेल में डाल दिया जाता है। इधर ग्रामीण सबकुछ चढ़ावे में लूटा देते हैं। मगर फिर भी वे चारों का मन नही भरता और वे राजनीति का खेल खेलते हैं और वोटों के बदौलत जीत भी जाते हैं। अंत में सच्चाई सामने आती है जिससे चारों की सत्ता जलकर खाक हो जाती है।

भाग लेने वाले कलाकार-

नट : रोहित चन्द्रा
नटी : माला सुमन
दुर्जन सिंह : सुरेश कुमार हज्जु
कर्मवीर : रौशन कुमार
सत्यवीर : राहुल कुमार रवि
दिवान : सत्यजीत केसरी
युवक : कुंदन कुमार
विपती : विभा कुमारी सोनी
भिश्ती : अजीत कुमार
बाबा : रवि राज
काकाः ब्रजेश शर्मा, नवनीत कुमार गिरी
काकीः ज्योति रॉय

top

4. GORA (Rabindranath Tagore) : Acting (Charu)

LKING ABOUT .... PATNA TIMES, THE TIMES OF INDIA 3

Photos: Tahir Hadi

Bringing alive 19th century Bengal

The Madhyam Foundation recently staged a play based on Rabindranath Thakur's novel Gora at a city auditorium. The play, sponsored by the Union cultural ministry, was inaugurated by art, culture and youth department minister **Shiv Chandra Ram**.

Directed by **Dharmesh Mehta**, the play depicted the social, political and religious scenes of Bengal in the 19th century. The story revolved around the early days of Bengal when people were busy in self-searching, resolutions, conflicts and self-discovery.

The lead actors of the play, **Vivek Kumar** and Dharmesh Mehta (also the director), enthralled the audience with their strong performance. The theatre was packed capacity and theatre enthusiasts were engrossed in the play. **Shamita Mehra**, a school teacher who had come to watch the play, said, "I came with my family to enjoy this play because I think theatre always has something new to teach. The play was informative and educative as well. Children can benefit a lot by watching such plays." Adding to her, another member from the audience, **Sanjay Singh** said, "I really appreciate this play because a lot of people were not aware about what it showcased. The theme and storyline were quite different and interesting. My curiosity was intact throughout the play. It also had a great connect with the audience."

Talking about the best part of the play, **Sanju Jain** explained, "I liked the scene when it was disclosed that during the adverse situation in Bengal, Krishnadayal had to adopt Gora as his son. Since Gora belonged to a European nation, his spiritual ideologies were different from his father's. But this truth was hidden from Gora for very long."

— Swati.Savarn@timesgroup.com

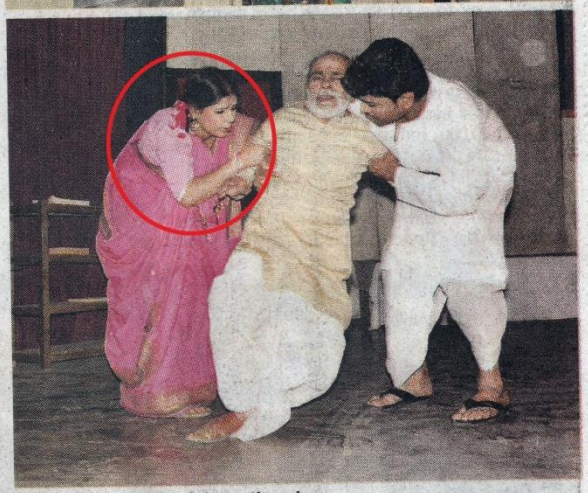

Scenes (also above) from the play

पटना पटना, शुक्रवार, 8 जनवरी, 2016 10

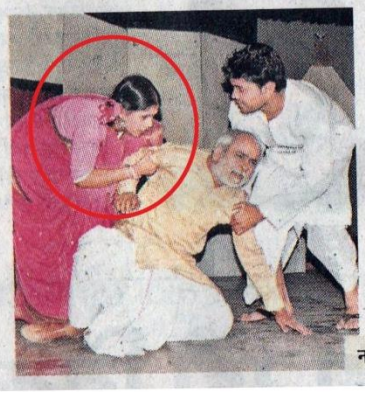

गोरा में दिखा... इंसान को धर्म में मत बांटो

पटना |रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यास गोरा पर आधारित नाटक का गुरुवार को लगातार दूसरे दिन कालिदास रंगालय में मंचन हुआ। धर्म के नाम पर तरह-तरह की सामाजिक बुराइयों को सही ठहराने की कोशिश की जाती है। धर्म में व्याप्त इन्हीं कुसंगतियों पर प्रहार करता यह नाटक लगातार दूसरे दिन अपने प्रयास में सफल दिखा। राजधानीवासियों को समाज में जाति और धर्म के नाम पर भेदभाव से दूर रहने को जागरूक करता और इंसान को इंसान मानकर उसे हिंदू, मुसलमान या जाति के आधार पर बांटने की बजाए मानवता दिखाने की अपील करता यह नाटक माध्यम फाउंडेशन की तरफ से लगातार दो दिन मंचित किया गया। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से मंचित इस नाटक का निर्देशन धर्मेश मेहता ने किया। नाटक के जरिए मेहता ने यह बताने की कोशिश की कि मनुष्य का मूल्यांकन उसके गुणों के आधार पर होना चाहिए ना कि उसकी जाति, धर्म और रंग के आधार पर।

ये रहे कलाकार- विशाल तिवारी, गुंजन कुमार, आर नरेंद्र, चित्रा श्रीवास्तव, विभा सिन्हा, विवेक कुमार, सरविंद कुमार, राकेश मेहता, सुनीता भारती, युरेका किम, कुणाल सिकंद, अजय कुमार श्रीवास्तव, सुधीर कमल, रानू कुमार, डॉ विकास कुमार, अमित कुमार, मो. सद्दरूदीन, रणधीर,फहीमुद्दीन, शोभा सिन्हा, सौरभ कुमार।

नाट्य रूपांतरण – विवेक कुमार और धर्मेश मेहता, मंच परिकल्पना और निर्देशन- धर्मेश मेहता

top

5. MEENU (By Ravindranath Tagore)

जागरण सिटी
पटना

पटना, 9 मई

..खो गया मीनू का अल्हड़पन

ालिदास रंगालय में रवींद्र जयंती उत्सव शुरू, पहले दिन नाटक 'मीनू' का किया गया मंचन

नटखट और हठी नारी प्रकृति हमेशा
ड़ और जंगल में दौड़ती हिरण की तरह
ई देती है। ऐसे चेहरे एक बार देख लेने
द भुलाए नहीं भूलते।' ये संवाद मीनू
ल्हड़पन को बखूबी बयां करते हैं। एक
ी जो दुनिया से बेखबर होती है।
ादास रंगालय में शुक्रवार से शुरू हुए
जयंती उत्सव में 'मीनू' नाटक का
किया गया। बिहार आर्ट थिएटर द्वारा
जित इस उत्सव का विधिवत उद्घाटन
सभा सांसद रवींद्र किशोर सिन्हा, उपी
ी सम्मान योजना के सलाहकार परिषद
यरमेन मिथिलेश कुमार तथा हैदराबाद
सिद्ध फोटो पत्रकार सत्यनारायण
कर किया। रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी
ति पर आधारित इस नाटक का नाट्य
रण अरुण कुमार सिन्हा तथा निर्देशन
क घोष ने किया।

मन का किया सजीव चित्रण

नू एक अल्हड़ लड़की है। उसे दुनियां
ोई परवाह नहीं। वह बड़ी हो गई है,
भी बच्चों के साथ खेलती है। उसकी
होती है, किंतु उसके स्वभाव में फिर
छ भी बदलाव नहीं आता। तंग होकर
ा पति उसे मायके छोड़ देता है। मीनू
जाती है। 'ईश्वर की तलवार ऐसी ही
क है। उन्होंने मीनू के बचपन और
ी के बीच ऐसा वार किया कि उसे पता
हीं चल सका। और आज न जाने कैसे
ा बचपन जवानी से अलग जा गिरा।'
संवाद से इस बदलाव को सहज ही
स किया जा सकता है।

कालिदास रंगालय में मीनू नाटक के मंचन के दौरान बिहार आर्ट थियेटर के कलाकार। जागरण

नेपथ्य सहयोग भी रहा बेहतर

नाटक को नेपथ्य से भी बेहत
सहयोग प्राप्त हुआ। गुप्तेश्वर
की प्रकाश परिकल्पना तथा च
घोष एवं शशांक घोष की रूप
को सबने सराहा। मंच परिकल्
प्रदीप गांगुली की थी । संगीत
परिकल्पना मारिया प्रवीण तथ
अलका शर्मा ने मिलकर किय
राजकुमार शर्मा, उपेंद्र कुमार,
सुजीत कुमार, कृष्णा नायडू,
कुमार, हीरा मिस्त्री, सफ़ुद्दीन,
संजय, बीरबल तथा विनोद अ
नेपथ्य सहयोगी थे।
उद्घोषणा अरूण कुमार
सिन्हा तथा सहनिर्देशन रंजन
ने किया। इस अवसर पर कुम
अनुपम, अमीय नाथ चटर्जी,
सुमन कुमार, अशोक प्रियदर्श
उषा वर्मा आदि की उपस्थिति
प्रमुख थी।

अभिनय एवं निर्देशन ने जीता दिल

नाटक के अभिनय ने दर्शकों को जितना प्रभावित किया उसके निर्देशन का पक्ष भी उतना ही मजबूत दिखा। कलाकारों की बेहतरीन संवाद अदाय
भाव-भंगिमा तथा बेहतर मंच और प्रकाश प्रयोग से नाटक प्रखर होकर दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ। एक ओर शांति प्रिया ने मीनू के चरित्र को
निभाया, तो दूसरी ओर दीपांकर शर्मा ने अपूर्व के चरित्र में जान फूंक दिया। अपूर्व की मां की भूमिका में सुनिता भारती के अभिनय को भी दर्शक
काफी सराहा। इनके अलावा आलोक गुप्ता, अभिषेक कुमार, अलका शर्मा, श्रेयाण चटर्जी, नीतिश कुमार, मुन्ना कुमार राय, रविकांत चौधरी तथा
प्रियांशु कुमार ने भी अपने अभिनय से सबको प्रभावित किया।

रवीन्द्र जयंती पर 'मीनू' का मंचन

पटना (एसएनबी)। रवीन्द्र नाथ टैगोर की 154 वीं जयंती उत्सव पर कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर की ओर से उनकी कहानी 'समाप्ति' पर आधारित नाटक 'मीनू' का मंचन किया गया।

गांव की भोलीभाली नटखट मीनू हमेशा नन्हें लड़कों के संग ही रहती है। अपूर्व की मां की इच्छा न होते हुए भी बेटे के पसंद के कारण मीनू से विवाह करना पड़ता है। विवाह के बाद भी मीनू में कोई परिवर्तन नहीं

- कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति

आता जिसके कारण बार-बार वे अनबन होती है। अपूर्व अपनी पत्नी मीनू को उसके मायके में छोड़ शहर चला जाता है। गांव में अपूर्वा की मां और कलकत्ता में बेटा अपूर्व जहां बसने के बावजूद एकाकी महसूस कर रहे होते हैं वहीं मीनू भी अपने मायके में एकाकी हो जाती है। अचानक उसका बालपन मृत हो जाता है और वापस अपने ससुराल पहुंच जाती है। नाटक में मीनू का अभिनय शांति प्रिया, अपूर्व का दीपांकर शर्मा, अपूर्व की मां का सुनीता भारती, दयाल का आलोक गुप्ता, इंद्र का अभिषेक कुमार, कमला का अलका शर्मा, राखाल का श्रेयश, पारस का नीतीश कुमार व वनमाली का अभिनय मुन्ना कुमार राय ने निभाया।

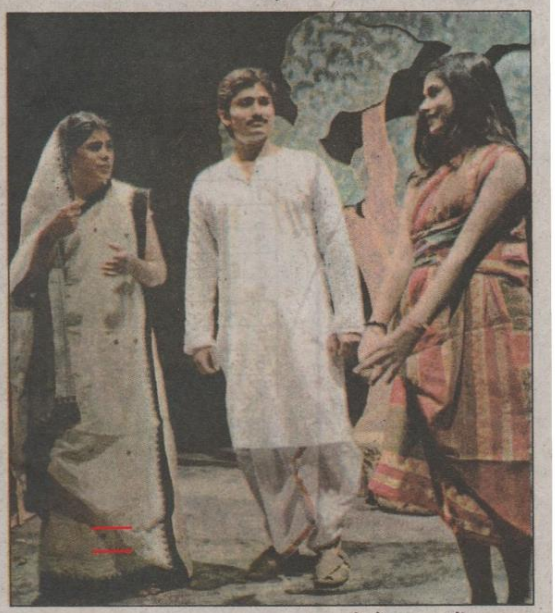

नाटक मीनू के एक दृश्य में कलाकार।

top

6. BADNAM (By Ravindranath Tagore) 2 shows

कविगुरु की 154वीं जयंती पर हुआ आयोजन

'बदनाम' ने दिया देश को एक रहने का संदेश

टैगोर की चर्चित रचनाओं में शामिल है 'बदनाम'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

एक तरफ पति के लिए कर्तव्य पथ पर सहयोगी बनने की मजबूरी और दूसरी तरफ देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन. इन दोनों के बीच में संतुलन बना कर भारतीय नारी के संकल्प शक्ति और चारित्रिक ऊंचाई की कहानी. रवींद्र परिषद् पटना के द्वारा रवींद्र भवन में आयोजित कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर के 154वें जयंती समारोह में उनकी कृति 'बदनाम' का बखूबी मंचन किया गया. इस प्रस्तुति का नाट्य रुपांतर गणेश प्रसाद सिन्हा और परिकल्पना व निर्देशन सुमन कुमार ने किया. इस मौके पर रवींद्र परिषद् के सचिव प्रोभास रॉय, बिहार संगीत अकादमी के उपाध्यक्ष प्रदीप्तो मुखर्जी, नीशित कुमार बोस, शंकर गुहा समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे.

दिखी भारतीय नारी की संकल्प शक्ति

कहानी के अनुसार क्रांतिकारी अनिल अपने जमानत के शर्तों का उल्लंघन कर के पुलिस के पहुंच से बाहर हो जाता है. उसे पकड़ने के लिए ब्रिटिश शासन का इंस्पेक्टर विजय चक्रवर्ती अपनी हर कोशिश करता है लेकिन अनिल उसके पकड़ में नहीं आता है. इंस्पेक्टर विजय को यह जानकारी मिलती है कि अनिल को किसी संभ्रांत महिला का वरदस्त प्राप्त है और उसी के द्वारा उसे सारी सूचनाएं मिल जाती हैं. इंस्पेक्टर विजय अपनी पत्नी सौदामिनी उर्फ सद्दू से कहता है कि वह उस महिला के बारे में जानकारी एकत्र करने में सहयोग करे तब सद्दू अपने पति से वादा करती है कि वह शिवालय में अनिल और उसके सहयोगी को गिरफ्तार करा देगी. तय समय पर इंस्पेक्टर शिवालय पहुंचता है और यह जानकर स्तब्ध रह जाता है कि अनिल को सहयोग करने वाली महिला कोई और नहीं बल्कि खुद उसकी पत्नी सद्दू है. यह जानते हुए भी कि वह समाज में बदनाम होगी, सौदामिनी देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए अपने पति के कर्तव्य पथ पर सहयोगी बनती है.

इस प्रस्तुति में सौदामिनी के रुप में उज्जवला गांगुली, इंस्पेक्टर विजय के रुप में चक्रपाणी पांडेय और अनिल के रुप में उदित कुमार ने तो वहीं मासी मां के रोल में सुनिता भारती के साथ अलग अलग रोल में उमाशंकर, नीरज कुमार, मुन्ना कुमार राय, मो.जइमुद्दीन समेत अन्य कलाकारों ने भी बखूबी अपने अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन किया.

नाटक बदनाम का दृश्य

रवींद्र संगीत के कार्यक्रम में झूम उठे दर्शक

■ कालिदास रंगालय में हुआ आयोजन ■ गायन और नृत्य का हुआ अनोखा संगम

पटना . रवींद्र जयंती के अवसर पर कालिदास रंगालय में 'पथ' विषय पर आधारित रवींद्र संगीत और नृत्य का अनुष्ठान किया गया. इसमें कई कलाकारों ने अपनी-अपनी प्रतिभा के द्वारा लोगों का मन मोह लिया. इसका आयोजन 'संचारी' की तरफ से किया गया. इस मौके पर 'कर्ण-कुंजी-संवाद' कविता पाठ का आयोजन हुआ. आलेख्य रचना डॉक्टर रात्रि राय और आलेख्य पाठ श्रुति सेनगुप्ता ने किया.

गायन -नृत्य से झंकृत हुआ रंगालय: रवींद्र जयंती के अवसर पर आयोजित हुए इस आयोजन में गौतम राय चौधरी, सनातन मुखर्जी, शर्बरी राय, कस्तूरी दासगुप्ता, सुतपा सांजरा, सुलग्ना मुखर्जी और मैत्रेयी बनर्जी ने जहां गायन की प्रस्तुति दी वहीं नेहा बनर्जी, सृष्टि पॉल, अंबिका, नीलांजना बनर्जी, सोमा सरकार, रेनेसा दास, स्वास्तिका मंडल, देवोजित भट्टाचार्य और अर्कदीप बनर्जी ने नृत्य प्रस्तुत किया. इस दौरान तबले पर सुमन्तो दासगुप्ता और सिन्थेसाइजर पर शिवम ने साथ दिया. नृत्य की परिकल्पना तापसी चक्रवर्ती और सुतापा ने किया.

कालिदास रंगालय में रवींद्र संगीत पर नृत्य करते कलाकार.

top

7. ASHOK (By Dr. Siddhnaath Kumar)

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
हलचल

युद्ध से हत्या होती है, विजय नहीं

आखिर विजय क्या है? एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए लाखों लोगों की मौत क्या वाकई किसी की जीत है? क्षत-विक्षत शवों के ढेर, तड़पते घायल, विलाप करती विधवाएं! इसमें विजय कहां है? कलिंग युद्ध के बाद इन सवालों ने सम्राट अशोक के दिलोदिमाग में उथलपुथल मचा दिया। जीत का जश्न मनाने की जगह उनका दिल रो उठा। तब उन्हें एहसास होता है कि असली जीत राज्यों को जीतने से नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं को जीतने से हासिल होती है। वे शांति और अहिंसा का व्रत लेते हुए बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। ये ऐतिहासिक दृश्य बुधवार को कालिदास रंगालय के मंच पर प्रस्तुत हुए। मौका था सातवें डॉ चतुर्भुज अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का। महोत्सव के पहले दिन कला जागरण पटना द्वारा नाटक 'अशोक' का मंचन का किया गया। सिद्धनाथ कुमार के लिखे नाटक की सुमन कुमार के निर्देशन में प्रस्तुति हुई।

अशोक के हृदय परिवर्तन की कहानी

नाटक में मौर्य सम्राट अशोक के जीवन का एक विश्लेषणात्मक चित्रण है। मंच पर तक्षशिला, पाटलिपुत्र एवं कलिंग की पृष्ठभूमि दिखाते हुए अशोक के जीवनकाल के विभिन्न हिस्सों को प्रस्तुत किया गया। अशोक ने जब मगध साम्राज्य का सिंहासन संभाला तो उनके मन में विस्तार की विराट महत्वाकांक्षा जाग उठी। उन्होंने राज्यों को जीतना शुरू कर दिया। अनेक युद्ध किए। आखिर में उनकी निगाह में कलिंग आया। उसे जीतने के लिए उन्होंने भयानक युद्ध किए। कई दिनों तक युद्ध चलते रहा। आखिर अशोक को विजय हासिल तो हुई, लेकिन लाखों मौतों और जख्मों की कीमत पर। युद्धभूमि के दृश्य देखकर उनका दिल दहल गया। उन्हें एहसास हुआ कि मानवता का कितना नुकसान हुआ है। वे प्रायश्चित करने की राह पर निकल पड़ते हैं और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। पूरी दुनिया में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने लगते हैं। अशोक का जीवन पूरी तरह बदल जाता है।

कालिदास रंगालय में 'अशोक' नाटक का मंचन करते कलाकार जागरण

मंच पर कलाकार	
सम्राट अशोक	आमिर हक
राधागुप्त	रूबेश कुमार
अमात्य	मिथिलेश प्रसाद सिन्हा
शाक्य कुमारी	सुनीता भारती
असंधिमित्रा	प्रीति सिंह
मुनादी	अमित
प्रतिहारी	विवेक, दीपक
संघमित्रा	नेहा
बिंदुसार	सरविंद कुमार
कलिंगराज	शंकर सुमन
नेपथ्य कलाकार	
रूप सज्जा	हीरालाल राय
वस्त्र निर्माण	मोहम्मद सदरुद्दीन
मंच सज्जा	अविनाश कुमार
मंच निर्माण	हीरा लाल मिस्त्री

नाट्य महोत्सव का उद्घाटन बिहार संगीत नाट्य अकादमी के अध्यक्ष और वरिष्ठ कवि आलोक धन्वा व दूरदर्शन पटना के निदेशक पीएन सिंह ने किया। डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में स्मारिका का विमोचन भी किया गया। युवा लेखक व फिल्मकार रविराज पटेल को डॉ. चतुर्भुज नाट्य पत्रकारिता सम्मान दिया गया। मौके पर डॉ. अरविंद कुमार, नीरज बावरिया, सुशील शर्मा आदि मौजूद थे।

कालिदास रंगालय में सुमन कुमार के निर्देशन में 'अशोक' नाटक के साथ शुरू हुआ अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव

...और महत्वाकांक्षी अशोक बदल गया

पटना | कार्यालय संवाददाता

सत्ता के लिए इतना रक्तपात...महत्वाकांक्षा मनुष्य से क्या-क्या नहीं कराती...महत्वाकांक्षाएं मरती नहीं, उनका स्वरूप बदलता है...इस तरह के संवादों से पूरा नाटक भरा था। संवाद दर्शकों को बेहद पसंद आ रहे थे। हर दो-चार मिनट पर तालियां बज रही थी। कालिदास रंगालय में बुधवार शाम 'अशोक' नाटक का पहली बार मंचन हुआ और इसी के साथ अखिल भारतीय नाट्योत्सव की शुरुआत भी हो गई। कला जागरण के कलाकारों ने डॉ. सिद्धनाथ लिखित नाटक को सुमन कुमार के निर्देशन में मंच पर उतारा। **पूरी तैयारी के साथ :** सम्राट अशोक के जीवन पर केंद्रित इस नाटक को

नाट्योत्सव में आज

- स्पार्टकस लेट्स फाइट
- प्रस्तुति-बंगाल नाट्य दल, सुबुझ सांस्कृतिक मंच
- समय-6.30 बजे से

कलाकारों ने बेहद प्रभावी तरीके से मंच पर उभारा। हालांकि मंच सज्जा के लिहाज से कुछ खास नहीं दिखा, लेकिन कलाकारों ने अपने अभिनय से इस कमी को लगभग ढंक दिया। चाहे अशोक की भूमिका निभा रहे आमिर हक हो, पत्नी की भूमिका निभा रही सुनिता भारती व प्रीति सिंह हो, इन कलाकारों ने अपने चरित्र के साथ पूरा न्याय किया। कैसे सत्ता के लिए अशोक ने अपने भाईयों की हत्या तक करवा दी और आखिर में कैसे बौद्ध धर्म की शरण में चला गया, इसे मिथिलेश सिन्हा, अमित, सरविंद, शंकर सुमन, सुधीर कमल, विवेक, दीपक, नेहा, खालिद खान, पारितोष, सूरज लाल, चंदन जैसे कलाकारों ने प्रभावी तरीके से उतारा। पिछली अन्य प्रस्तुतियों की अपेक्षा कला जागरण की यह प्रस्तुति ज्यादा प्रभावी दिखी। **डॉ. चतुर्भुज नाट्य सम्मान :** पहले दिन युवा लेखक व समीक्षक रविराज पटेल को डॉ. चतुर्भुज नाट्य पत्रकारिता सम्मान दिया गया। इस मौके पर संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा, डीडी बिहार के निदेशक पीएन सिंह, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, गणेश प्रसाद सिन्हा, मिथिलेश कुमारी, डॉ. बीएन विश्वकर्मा, अमियनाथ चटर्जी, कन्हैया, नीलेश्वर उपस्थित रहे।

कालिदास रंगालय में अखिल भारतीय नाट्योत्सव के पहले दिन बुधवार अशोक नाटक का मंचन करते कलाकार। ● हिन्दुस्तान

top

8. KADAMBINI (By Ravindranath Tagore) 2 shows

यहां जीवित होने का देना पड़ता है सबूत

नाटक 'कादंबिनी'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित कहानी कादंबिनी काफी चर्चित कहानी है. इसमें यह बताया गया है कि एक अकेले इनसान द्वारा कही बातों का कोई विश्वास नहीं करता है. चाहे वह अपने जीवित होने का प्रमाण ही क्यों न दे. कालिदास रंगालय में बुधवार से शुरू हुए उत्सव मौसम 2014 के पहले दिन इसी नाटक का मंचन हुआ. यूं तो यह नाटक पहले भी हो चुका है, लेकिन इस बार कुछ अलग कलाकारों ने नाटक में अभिनय किया. बिहार आर्ट थियेटर के चार कलाकारों को छोड़ सभी कलाकार नये थे. नाटक का निर्देशन अशोक कुमार घोष ने किया. दर्शकों ने 20 रुपये का टिकट लेकर नाटक देखा.

नाटक मंचन

यह थी कहानी

कादंबिनी एक जमींदार परिवार की विधवा बहू रहती है. वह अचानक एक दिन बेहोश हो जाती है. बेहोश कादंबिनी को मरा हुआ समझ कर जमींदार शारदा शंकर रातों-रात उसका दाह-संस्कार कराने के लिए अपने आदमियों के हाथों उसके शरीर को शमशान घाट भिजवा देता है. कादंबिनी का कोई नहीं होता है, फिर भी शारदा उसका दाह-संस्कार खुद नहीं करता है. वह सोचता है कि कहीं लोगों को शक न हो जाये कि उसकी हत्या कर दी गयी है. शमशान घाट पर लाश के रूप में लायी गयी बेहोश कादंबिनी को होश आ जाता है. लोग उसे भूत समझने लगते हैं. कादंबिनी खुद को जीवित समझाने के लिए काफी ज्यादा कोशिश करती है, लेकिन वह नाकाम रहती है. अंत में वह नदी में कूद कर अपने प्राण त्याग देती है. उसके बाद लोगों को समझ आता है कि वह भूत नहीं थी. इस नाटक में सुनीता भारती, आलोक गुप्ता, कनिज फातिमा, शांतनु, निक्की सिंह, राजू सिंह, रंजन कुमार, राजेश कुमार सिन्हा, नीतिश कुमार, प्रवीण कुमार आदि ने अभिनय किया.

जान देकर देना पड़ा जिंदा होने का सबूत

DB स्टार . PATNA

कालिदास रंगालय में नाटक के मंचन का एक भावपूर्ण दृश्य।

डीबी स्टार » पटना

आप कैसा महसूस करेंगे जब आप जिंदा हो और लोग आपके जिंदा होने पर ही सवाल उठाने लगे। एक अच्छे भले इंसान को समाज भूत मान ले यह स्थिति जितनी हास्यप्रद है उतनी दुखदायक। कुछ ऐसी ही परिस्थितियां बुधवार को दिखी कालिदास रंगालय में मंचित हुए नाटक कादम्बनी में. जिसकी मुख्य पात्र कादम्बनी को अपने जिंदा होने का सबूत देने के लिए मौत को गले लगाना पड़ा। जब तक वह जिंदा थी और चीख-चीख कर खुद के जीवित होने की बात कह रही थी तो किसी को उस पर यकीन नहीं हो रहा था और सब उसे मृतक की आत्मा समझ रहे थे।

नाटक कादम्बनी का मंचन कालिदास रंगालय में बिहार के प्रसिद्ध फिल्मकार गिरिश रंजन की याद में बुधवार से शुरू हुए चार दिवसीय नाट्योत्सव के पहले दिन हुआ। रवीन्द्र नाथ ठाकुर की लिखी कहानी और बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति इस नाटक के निर्देशक थे अशोक घोष वहीं इसके नाट्य कार थे अरुण कुमार सिन्हा।

पश्चिम बंगाल की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक की कहानी बाल विधवा कादम्बनी के इर्द-गिर्द घूमती है। कम उम्र में ही उसकी शादी जमींदार परिवार में हो जाती है और शादी के कुछ ही समय के बाद पति का निधन भी हो जाता है। पति की मौत के बाद वह ससुराल में जेठ और जेठानी के साथ रहती है। जेठ का छोटा चाची के पास रहता है।

एक दिन अचानक कादम्बनी की तबियत खराब होती है और वह बेहोश हो जाती है। ससुराल वाले उसे मरा हुआ समझ लेते है और पुलिस के डर से जल्दी जल्दी रात में ही उसका अंतिम संस्कार करने के लिए श्मशान भेज देते हैं। उसकी अर्थी को जमींदार के नौकर श्मशान जाते हैं। वहां जब अर्थी रखी जाती है तो कादम्बनी उठ खड़ी होती इसे देख नौकर भूत समझ भाग खड़े होते हैं। कादम्बनी खुद को श्मशान में पाकर परेशान हो जाती है उसे खुद समझ में नहीं आता कि वह जिंदा है या मर चुकी है। यहां से वह ससुराल न जाकर अपने बचपन की सहेली योगमाया के घर चली जाती है। सहेली अपने पति से आज्ञा लेकर उसे अपने यहां पनाह देती है। कुछ दिनों बाद योगमाया को अपने पति पर कादम्बनी को लेकर शक होने लगता है कि उसका पति कादम्बनी को ओर आकर्षित हो रहा है। इसके बाद वह उसे अपने घर से निकाल देती है, इस पर कादम्बनी रोते हुए अपने ससुराल पहुंचती है। ससुराल में जाकर अजीब संकट का सामना करना पड़ता है, वहां सब उसे कादम्बनी की आत्मा समझने लगते हैं और जिंदा मानने से इंकार कर देते है। ससुराल वालों के व्यवहार से आहत होकर कादम्बनी अपने जिंदा होने का सबूत देने के लिए तालाब में डूब कर अपनी जान दे देती है। उसके मरने के बाद लोगों को

दिलजीत परफॉर्मेंस

रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी कादम्बिनी को अरुण कुमार सिन्हा ने कालिदास के रंगालय में इस कदर पेश किया कि दर्शक देखकर दंग रह गए. बेहतर अभिनय पेश कर दिल जीत लिया.

top

9. KANCHANRANG (By Shombhu Mitro) 2 shows

जब लगती है पांचू की लौटरी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

बंगाल के लेखक नाटककार शंभू मित्र एवं अमित मित्र लिखित नाटक 'कांचनरंग' का मतलब होता है सोने का रंग. कालिदास रंगालय में बुधवार को प्रस्तुत नाटक हास्य शैली में दिखाया गया. इसमें दिखाया गया कि सोने (धन) का लालच आदमी को किस प्रकार खुद के विवेक से भटका देता है.

नाटक का मुख्य किरदार पांचू एक सीधा-साधा मंदबुद्धि इनसान है. एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार के मुखिया यदु गोपाल बाबू के घर में वह रहता है. यदु गोपाल के दो बेटे हैं अमर और समर. दोनों ही फैशनपरस्त और बेकार होते हैं. एक बेटी है सीमा, जो किसी मिलन नाम के लड़के के प्रेम में है. यदु गोपाल बाबू दूर के रिश्ते से पांचू के मौसा लगते हैं और पांचू को गांव से इसलिए ले आये हैं कि बगैर पगार के रुखी-सूखी खाकर घर का सारा काम काज करे.

नाटक मंचन

नाटक में हर सीन के साथ चलनेवाला म्यूजिक नाटक को काफी बेहतरीन बना देता है. पांचू का किरदार कर रहे अशोक घोष की एक्टिंग काफी सराहनीय थी. उनकी मंदबुद्धि के एक्टिंग पर अंत तक तालियां बजती रहीं.

कहानी में उस वक्त मोड़ आता है, जब पांचू को सवा लाख रुपये की लॉटरी मिलती है. परिवार का हर सदस्य उससे अपनापन जताने लगता है और उसके लॉटरी के रकम से अपने सपनों को साकार करने की कोशिश में लग जाता है. यहां तक कि पांचू को घर का दामाद बनाने का भी फैसला ले लिया जाता है. इधर पांचू का भी मिजाज सातवें आसमान पर होता है, लेकिन तभी खबर आती है कि लॉटरी पांचू को नहीं मिली. फिर क्या था, परिवार के सभी सदस्य गिरगिट से भी जल्दी अपना रंग बदल लेते हैं. पांचू को उसकी औकात बता कर लात-जूते से उसकी खबर लेना शुरू कर देते हैं. ठीक उसी वक्त अचानक टेलीग्राम आता है कि लॉटरी का विजेता पांचू ही है, पहली खबर गलत थी. उस वक्त घर वालों को सांप सूंघ जाता है.

नाटक में सभी को सबसे ज्यादा पांचू का किरदार पसंद आया.

पात्र-परिचय

■ पांचू : अशोक घोष ■ यदु गोपाल बाबू (गृहस्वामी) : उमेश कुमार ■ गृहस्वामिनी : सविता श्रीवास्तव ■ तरला : सुनीता भारती ■ सीमा : उज्ज्वला गांगुली ■ महिला (किरायेदार) : चंदना घोष ■ बट्टू : सुनील ■ चित्तो बाबू : उमंग ■ अमर : आशीष राज ■ समर : धीरज कुमार ■ फिल्म डायरेक्टर : अजय श्रीवास्तव

top

10. BHAMASHAH (By Dr. C. N. Singh)

मंच पर आये नये नाटक

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शहर में नाटकों का मंचन मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन है. नाटक अगर अच्छे हो, तो पूरा हॉल भर जाता है. पिछले कुछ सालों से एक ही नाटक का मंचन लगातार किया जा रहा था. प्रभात खबर ने एक नाटक को बार-बार दोहराये जाने पर 27 दिसंबर के अंक में 'लोग पुराने नाटकों से बोर हो चुके हैं' शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी. इस खबर को पढ़ने के बाद सोशल मीडिया में रंगमंच से जुड़े लोगों व कला प्रेमियों ने इस मुद्दे पर चर्चा की. कई ने इस बात को स्वीकारा कि नये नाटक भी होने चाहिए, ताकि दर्शक बोर न हो. प्रभात खबर की खबर का असर अब पटना में नजर आ रहा है. पिछले कुछ दिनों में कई नये नाटकों का मंचन हुआ है. नये नाटकों को देख रहे लोगों ने प्रभात खबर को धन्यवाद कहा और सभी नाटकों की तारीफ भी की.

लाइफ इंपैक्ट

बिहार आर्ट थियेटर एवं कालिदास रंगालय के संस्थापक नाट्यकार, निर्देशक, स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय अनिल कुमार मुखर्जी की 98वीं जयंती के अवसर पर आयोजित 23वां पटना थियेटर फेस्टिवल के आयोजन का सोमवार को आखिरी दिन था. आखिरी दिन नाटक भामा साह का मंचन किया गया. लेखक छोटू नारायण सिंह ने महाराणा प्रताप की कहानी को नाट्य लेख रूप दिया. वहीं निर्देशक उपेन्द्र कुमार ने कलाकारों से काफी अच्छी अदाकारी करवायी. नाटक हल्दी घाटी की लड़ाई के बाद की कहानी को मंच पर दिखाता है. जिस लड़ाई के बाद महाराणा प्रताप को अरावली के जंगलों में शरण लेनी पड़ी थी. इसके बाद भी वे अकबर से हार नहीं माने थे और मुगलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध करते रहे. नाटक में सतवीर कुमार, स्नेहा रानी, राजु सिंह, उदय कुमार सिह, सुनीता भारती, कुमार सोनू शंकर, अभिषेक कुमार ने बेहतरीन एक्टिंग की.

प्रकाशित खबर

खबर के बाद हुए नये नाटक

■ **1 जनवरी :** अंधेर नगरी, दरोगा जी चोरी हो गयी, विरोध ■ **4 जनवरी :** गड्ढा (अभियान संस्कृति मंच) ■ **6 जनवरी :** पोलटीस (प्रेरणा संस्था) ■ **12 जनवरी :** धरती आबा (निर्माण कला मंच) ■ **12 जनवरी :** डाक घर (बिहार आर्ट थियेटर) ■ **14 जनवरी :** दो हाथ (बिहार आर्ट थिएटर)

मंच पर इन दिनों हुए नये नाटक

■ 15 जनवरी : मास्क (मॉडर्न माइम सेंटर) ■ 15 जनवरी: जानेमन (एचएमटी) ■ 16 जनवरी : साउंड ऑफ वूमेन (सरगम आर्ट्स) ■ 16 जनवरी : अधिष्ठाता (चेतना समिति) ■ 17 जनवरी : जूता का आविष्कार (कृष्णायण) ■ 18 जनवरी : अंधा मानव (श्री गणेश कला संस्थान) ■ 18 जनवरी: जो लौट नहीं सकते (आर्ट एंड आर्टिस्टको) ■ 19 जनवरी : सुपनवा का सपना (इप्टा, मधेपुरा) 20 जनवरी – भामा–शाह (बिहार, नाट्यकला प्रशिक्षणालय)

नये नाटक देखने को मिलता है, तो एक एक्साइटमेंट होता है कि अब आगे क्या होगा. इस सीन के बाद क्या सीन होगा

■ शिवाशीष मुखर्जी, रांची

पुराने नाटक में कोई क्योरिसिटी नहीं रहती है, पहले से पता होता है कि इसके बाद ऐसा होगा और उसके बाद ऐसा होगा. देखने में बिलकुल भी मजा नहीं आता है.

■ मुक्ताली मुखर्जी

पुराने नाटक टाइम पास होते थे, लेकिन इधर नये नाटक देखने के लिए टाइम निकलना पड़ता है क्योंकि उनमें लोगों का इंट्रेस्ट जाग जाता है. उसमें कलाकार भी नये–नये किरदार में नजर आते हैं.

■ पिंटू

23 वां पटना थियेटर फेस्टिवल संपन्न, आखिरी दिन भामाशाह नाटक का मंचन

फेस्टिवल के आखिरी दिन भामाशाह की दानशीलता मंच पर

पटना | कार्यालय संवाददाता

अरावली की झाड़ियां। झाड़ियों के बीच महाराणा प्रताप। बेचैन और हताश महाराणा, आखिर में बोल पड़ते हैं, लगता है राजस्थान की गरिमा अकबर के पैरों के अधीन आनेवाली है। रानी कहती हैं, महाराज, राणा सांगा की कुलवधु होने का मुझे गर्व है...आप इस तरह हताश नहीं हो सकते। आत्मसमर्पण नहीं कर सकते...फिर महाराणा जोश में आ जाते हैं। इसी दृश्य के साथ भामाशाह नाटक का आगाज हुआ। कालिदास रंगालय में सोमवार की शाम इतिहास की बातें मंच पर एक बार फिर जीवंत हुई।

भामाशाह की त्यागशीलता

कहानी यह थी कि महाराणा प्रताप अकबर के कारण जंगल में थे। मेवाड़ की जनता को झुकाने के लिए मुगल सल्तनत ने कूटनीति का सहारा लिया। जासूसों के अनाज खरीद कर बाहर भेजा जाने लगा, ताकि मेवाड़ में भुखमरी की स्थिति आ जाए। मेवाड़ के धनाढ्य सेठ व देशप्रेमी भामाशाह को इसकी भनक लग गई। उन्होंने खुद अन्न-संग्रह करना शुरू कर दिया, ताकि बाहर अन्न न जा सके। बिहार नाट्यकला प्रशिक्षण के कलाकारों ने डॉ छोटू नारायण सिंह लिखित और उपेंद्र कुमार निर्देशित नाटक को अपने अभिनय से शानदार बना दिया। सतवीर कुमार (महाराणा प्रताप),राजू सिंह(भामाशाह),स्नेहा रानी, सुनीता भारती, उदय कुमार सिंह, कुमार सोनू शंकर, अभिषेक, तेंदुलकर चौहान, शहादत हसन, आशीष राज और अमित का अभिनय प्रशंसनीय था, लेकिन रूप-सज्जा व परिधानों में कुछ कमी थी।

संजय सहाय और नूतन आनंद को सम्मान

हंस पत्रिका के संपादक संजय सहाय और राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित नूतन आनंद को अनिल मुखर्जी शिखर सम्मान 2014 से सम्मानित किया गया। फेस्टिवल के आखिरी दिन जल संसाधन मंत्री, विजय कुमार चौधरी के हाथों इन्हें सम्मानित किया गया। शेषांत और टीपी जैसी चर्चित कहानियां लिखनेवाले व कई नाटकों का निर्देशन करनेवाले संजय सहाय तो सम्मान समारोह में जरूर पहुंचे, पर बीमार होने के कारण नूतन आनंद नहीं पहुंच पाई। उनकी जगह उनके प्रतिनिधि ने यह सम्मान लिया। इस अवसर पर डॉ निहोरा प्रसाद यादव, अशोक घोष, अरुण कुमार सिन्हा और गुप्तेश्वर कई लोग उपस्थित थे।

top

11. GHAR JAMAI (By Premchand)

प्रमचंद हमार राल माडल बन सकत ह। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के

मो.अजीमुद्दीन ने अभिनय किया।

मिश्र सहित कई लोग उपस्थित थ।

साहत कइ लाग उपस्थित थे।

'घरजमाई' ने खूब किया मनोरंजन

पटना | कार्यालय संवाददाता

मेहरारू नहीं ब्लडप्रेशर की दुकान थी...चमक कर चलती थी...झमक कर बोलती थी...खखुआती थी, झंझुआती थी अउर बबुआ बेचारे माथा पीटते रह जाते थे...ज्यादा चांव-चांव करते थे तो सास, सरहज भी हहुआ के टूट पड़ती थी...अउर बबुआ बेचारा पाहुना बन कर रह जाते थे...यह सब देख दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो रहे थे। कालिदास रंगालय में 'घरजमाई' नाटक ने लोगों का खूब मनोरंजन किया।

प्रेमचंद जयंती पर प्रेमचंद लिखित कहानी को बैट के कलाकारों ने गुरुवार को भोजपुरी में मंचित किया। अरुण कुमार सिन्हा के निर्देशन में कलाकारों ने अपने अभिनय से आखिर तक दर्शकों को बांधे रखा।

प्रयोग नहीं कहानी पर जोर

बैट यानी बिहार आर्ट थियेटर कहानी प्रधान नाटकों की प्रस्तुति के लिए जाना जाता है और गुरुवार को भी ऐसा ही दिखा। नाटक में पूरा जोर कहानी पर था। न तो लाइट-साउंड के लेकर कोई प्रयोग था और न ही मंच को लेकर। पर नाटक दर्शकों को बांधने में सफल रहा। गंवई संस्कृति कैसी होती है और गांव के लोग कैसे बतियाते हैं, घरजमाई बना युवक कैसे ससुराल में उपेक्षित होता है और आखिर में कैसे अपने गांव लौट आता है, इसको बड़े ही सधे हुए अंदाज में मंच पर उतारा गया। शुक्रवार को ईदगाह नाटक का मंचन होगा।

प्रेम प्रदर्शन... बैट के कलाकारों ने प्रेमचंद की कृति घरजमाई का दृश्य।

इनका रहा शानदार अभिनय

रविभूषण- हरिधन(घरजमाई), अनीता कुमारी- गुमानी (हरिधन की पत्नी), उज्वला गांगुली (सास), अरविंद कुमार, अनीता कुमारी वर्मा, सुनीता भारती, रानू, अभिषेक, सुदीप, उमेश, अमित, दीपक, सिद्धिश्री, फातिमा, आसिफ इकबाल, रंजन,मदन, शांतिप्रिया, प्रवीण, सुजीत, शांतनु और अरुण।

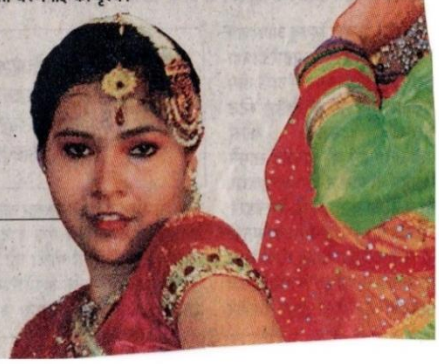

आज

पटना महानगर

मुंशी प्रेमचंद की रचना समुद्र के समान : मंत्री

(आज समाचार सेवा)

पटना। मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विनय बिहारी ने प्रेमचंद रंगशाला में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि किसी लेखक के विषय में सब कुछ समझ जाना कोई कम बड़ी बात नहीं है। मुंशी जी की रचना एक समुंदर के समान है, जिसे समझना आसान भी है और कठिन भी है। जो जितना डूबकी मारेगा, उतरा मोती पायेगा। उन्होंने प्रेमचंद की रचनाओं का अपने ऊपर पड़े प्रभाव का जिक्र करते हुए कहा कि पंच परमेश्वर की एक पंक्ति कि-'क्या बिगाड़ की डर से ईमान की बात नहीं कहोगे'-हमेशा याद रखता हूं। विद्वान ही विद्वान की कद्र करता है। मैंने मुंशी प्रेम को आत्मसात किया है। उन्होंने देश के सामने उपस्थित नैतिक संकट के इस दौर में प्रेमचंद की रचनाओं को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना। इस अवसर पर विधान पार्षद डा. रामवचन राय ने पंडित जनार्दन झा द्विज ने उनके पाण्डुलिपि का प्रकाशन पूर्व सम्पादन दिया। संचालन सोमा चक्रवर्ती ने किया।

प्रेमचंद रंगशाला में जयंती पर कफन का मंचन

प्रेमचंद के बहाने 'घरजमाई'

(आज समाचार सेवा)

पटना। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्दकी जयन्तीके अवसरपर बिहार आर्ट थियेटर का द्विदिवीय नाट्य प्रस्तुतिका आरंभ अरुण कुमार सिन्हा लिखित एवं निर्देशित भोजपुरी नाटक घरजमाई की प्रस्तुति से हुआ। नाट्य प्रस्तुतिका उद्घाटन दीप जलाकर आपूर्ति विभागकी ओएसडी प्रतिभा सिन्हा, साहित्यकार अमियनाथ चटर्जी बैठके निहोरा प्रसाद यादव एवं डा. शंकर प्रसादने किया।

नाटककी कथा वस्तु घरजमाईके जीवनका सत्य उद्घाटित करती है। इसमें घरजमाई बनना, ससुरालका जीवन और अंततः घरजमाईके बन्धनसे आजाद होनेकी स्थितिको व्यक्त किया गया है। नाटकको मंचपर साकार किया-हरिधन घरजमाईकी मुख्य भूमिकामें रविभूषण सहित अनीता कुमारी वर्मा, उज्वला गांगुली, अरविन्द कुमार, सुनीता भारती, रानू, अभिषेक रंजन, सुदीप कुमार, उमेश कुमार, अमित कुमार सिन्हा दीपक मिश्रा, दीपक कुमार, अनीता कुमारी, सिद्धि श्री फातिमा, आसिफ इकबाल, रंजन कुमार, मदन कुमार, शांतिप्रिया, प्रवीण कुमार, सुजीत कुमार शर्मा, शांतनू एवं अरुण कुमार ने।

नाटकमें गीत एवं संगीत संयोजन गुप्तेश्वर कुमारने किया। मंच परिकल्पना प्रदीप गांगुली, रूप सज्जा अशोक घोषने किया। उमेश पासवान और अमित सिन्हा नाटकके गीतकार हैं। सहायक निर्देशन अभिषेक रंजन एवं सुदीप कुमारने किया। नाट्य प्रस्तुति कुमार अनुपमने किया। नाट्य प्रेमियोंने आरंभसे अंत तक रोचक संवादोंका आनन्द उठाया।

प्रेमचंद के बिना हिन्दी साहित्य गरीब : रामवचन

(आज समाचार सेवा)

पटना। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की धरोहर है। यदि वे नहीं होते, तो हिन्दी भाषा साहित्य के बिना काफी गरीब होती। वे हिन्दी भाषा ही नहीं, राष्ट्र के गौरव हैं। यह कहना है बिहार विधान परिषद् सदस्य प्रो. (डा.) रामवचन राय का। वे बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। कहा कि जब वे मिर्जापुर में स्कूल के शिक्षक थे, तब छात्रों के साथ फुटबाल खेला करते थे। वे प्रायः छात्रों का मनोबल बढ़ाया करते थे। वे अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन में काफी सक्रिय रहे। उनकी तुलना प्रायः चीन के उनके समकालीन लेखक लु शुन से की जाती रही है। वे किसान चेतना के लेखक थे। शुरू में वे गांधीवाद के प्रभाव में रहे। बाद में उनका झुकाव मार्क्सवाद की तरफ हुआ। उनकी अंतिम कहानी 'कफन' एवं अंतिम उपन्यास 'गोदान' का अतिक्रमण साहित्य की दृष्टि से अभी तक किसी रचना ने नहीं किया है। उन्होंने भाषा की बेहतरीन मिसाल हमारे सामने रखी। हिन्दी पत्रकारिता ने भी उनकी बोधगम भाषा को अपनाया। वे कालजयी रचनाकार थे। आनेवाली पीढ़िया सदैव उनसे प्रेरित होती रहेंगी। भवन निर्माण एवं कला संस्कृति विभाग के सचिव चंचल कुमार ने विश्वविद्यालयों के शोध छात्र-छात्राओं से अपील की कि वे राष्ट्रभाषा परिषद् के साहित्यिक भंडार एवं समृद्ध विरासत का लाभ उठायें। उन्होंने आश्वासन दिया कि युवाओं को कला-संस्कृति एवं साहित्य से जोड़ने के लिए विभाग द्वारा सक्रियता बढ़ायी जायेगी। कार्यक्रम में हरेराम, प्रो. डा. सुनील कुमार, डा. मिथिलेश कुमारी मिश्र सहित अन्य लोगों ने भी अपनी बातें रखीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. जयकृष्ण मेहता ने की। संचालन ओमप्रकाश पाण्डेय प्रकाश ने किया।

top

12. SADGATI (By Premchand) 2 shows

पंडितजी शादी का मुहूर्त कब निकालेंगे...

पटना | वरीय संवाददाता

पंडितजी हमारी बेटी की शादी करनी है। आपसे बड़ा पंडित कौन है यहां। पंडितजी हमरी बेटी की शादी के लिए आप बढ़िया से बढ़िया मुहूर्त निकाल दीजिए ना। आप मुहूर्त निकालिएगा तो हमर बेटी शादी के बाद खूब सुखी रहेगी। हां-हां दुखिया जरूर निकालेंगे। पर पहले जरा इ काम सब तो निबटा लो।

कालिदास रंगालय में गुरुवार की शाम यह संवाद पंडित घासीराम व दुखिया के बीच चल रहा था। मुंशी प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'सद्गति' पर आधारित नाटक का मंचन हो रहा था। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर बिहार आर्ट थिएटर की ओर से आयोजित दो दिवसीय नाट्य समारोह इस नाटक के मंचन के साथ संपन्न हुआ। शाम 7 बजे हॉल दर्शकों से भर चुका था। प्रेमचंद की कहानी होने के कारण दर्शकों में नाटक को लेकर काफी उत्साह दिखा। हर बेहतरीन संवाद पर हॉल तालियों से गूंज रहा था। पर्दा उठने के बाद मंच पर पं. घासीराम के घर का दृश्य नजर आया। गांव का दलित दुखिया पंडित के घर पहुंचता है। वह उनसे अपनी बेटी की खातिर मुहूर्त निकालने को कह रहा था। पंडितजी इसकी मजबूरी का खूब फायदा उठाते हैं। दिनभर उससे बेगार करवाते। दुखिया सद्गति को लालायित था। उसकी इच्छा अगले जन्म में ऊंची जाति में पैदा होने की थी। लेकिन भूखे-प्यासे बेगारी करते हुए एक दिन उसके प्राण निकल गए। पंडित की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी अरुण कुमार सिन्हा ने दर्शकों को काफी प्रभावित किया।

नाटक का मंचन

- दो दिवसीय नाट्य उत्सव का समापन
- कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थिएटर का आयोजन

रंगमंच

नाटक: सद्गति
लेखक : प्रेमचंद
नाट्यरूपांतरण: अरुण कुमार सिन्हा
निर्देशक : अजीत गांगुली
प्रकाश: राजकुमार, ध्वनि :उपेन्द्र कुमार, रूपसज्जा: सुनील कुमार
प्रस्तुति प्रभारी :प्रदीप मांगुली

पात्र-परिचय
पंडित घासीराम: अरुण कुमार सिन्हा
पंडिताइन: सविता श्रीवास्तव,
दुखिया: मो.आसिफ इकबाल,
दुखिया की बेटी: सुनीता भारती,
चिखुरी: उमेश कुमार

कालिदास रंगालय में प्रेमचंद्र की कहानी पर आधारित नाटक 'सद्गति' की हुई प्रस्तुति।

बढ़िया मुहूर्त निकलवाने को बेगारी करता था दुखिया

पटना | वरीय संवाददाता

कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थिएटर की ओर से स्व. अजीत गांगुली की स्मृति में शिक्षक दिवस के अवसर पर गुरुवार को हिन्दी नाटक 'सद्गति' का मंचन हुआ। बिहार आर्ट थिएटर की यह प्रस्तुति मुंशी प्रेमचंद की रचना पर आधारित थी। पिछले माह भी इस नाटक का मंचन यहां हुआ था।

नाटक शुरू होता है और मंच पर दुखिया नजर आता है। वह पंडित घासी राम के घर के बाहर खड़ा था। वह उनसे अपनी बेटी की खातिर मुहूर्त निकालने को कह रहा था। पंडितजी हमारी बेटी की शादी करनी है। आपसे बड़ा पंडित कौन है यहां। हमरी बेटी की शादी के लिए बढ़िया मुहूर्त निकाल दीजिए। हां-हां दुखिया निकालेंगे। पर पहले जरा इ काम सब तो निबटा लो। पंडितजी इसकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। दिनभर उससे बेगार करवाते। दुखिया सद्गति को लालायित था। उसकी इच्छा अगले जन्म में ऊंची जाति में पैदा होने की थी। लेकिन बेगारी करते हुए उसके प्राण निकल गए।

शिक्षक दिवस पर नाट्य शिक्षक स्व. अजीत गांगुली की स्मृति में बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति 'सद्गति' नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

रंगमंच

नाटक: सद्गति
लेखक : प्रेमचंद
नाट्यरूपांतरण: अरुण कुमार सिन्हा
निर्देशक : स्व.अजीत गांगुली
प्रकाश: राजकुमार, ध्वनि :उपेन्द्र कुमार, रूपसज्जा: सुनील कुमार
प्रस्तुति प्रभारी :प्रदीप गांगुली

पात्र-परिचय
पंडित घासीराम: अरुण कुमार सिन्हा,पंडिताइन: सविता श्रीवास्तव,
दुखिया: मो.आसिफ इकबाल,
दुखिया की बेटी: सुनीता भारती,
चिखुरी: उमेश कुमार

अंधविश्वास ने ले ली गरीब दुखिया की जान

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

मुंशी प्रेमचंद ने अंधविश्वास से जुड़ी कई कहानियां लिखीं है. उन्हीं से एक कहानी है 'सद्गति', जिसका मंचन गुरुवार को कालिदास रंगालय में किया गया. नाटक में दिखाया गया है कि पुराने जमाने के लोग जब शादी का मुहूर्त निकालने ब्राह्मण के पास जाते थे, तो बदले में उन्हें काम करना पड़ता था.

अकसर छोटी जाति के लोगों को ऊंची जाति के लोग परेशान किया करते थे. है कि वह उसके घर का सारा काम कर दे. दुखिया घर का सारा काम करना शुरू कर देता है. पहले तो पंडित घासीराम उससे घर की साफ-सफाई करवाता है, फिर उसे पोंछा लगाने को कहता है. हद उस वक्त हो जाती है जब पंडित एक लकड़ी को काटने के लिए कहता है. पंडित की इस मनमानी को देख कर दुखिया कहता है कि मैं अपनी बेटी को घर पर छोड़ आया हूं. फिर भी पंडित के मुहूर्त नहीं निकालने पर वह दमा का मरीज दुखिया लकड़ी काटने चला जाता है. काम ज्यादा करने से उसकी मृत्यु हो जाती है और पंडित उसे खेत में ले जा कर फेंक देता है.

नाटक मंचन

पंडिताइन अपने पति को समझाती हुई कि मजबूर का फायदा उठाना गलत है.

कलाकार :
- पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा
- पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव
- दुखिया : आसिफ इकबाल
- चिखुरी : उमेश कुमार
- बेटी : सुनीता भारती

इस भावुक नाटक का निर्देशन स्वर्गीय अजीत गांगुली ने किया था. नाटक के प्रस्तुति प्रभारी प्रदीप गांगुली और नाट्यकार अरुण कुमार सिन्हा थे.

सद्गति : नाटक एक चमार जाति के दुखिया पर केंद्रित है, जो अपनी बेटी की शादी का मुहूर्त निकालने के लिए पंडित के घर जाता है. बदले में शातिर पंडित चाहता

[top](#)

13. KHUCHCHAR (By Premchand)

मुंशी प्रेमचंद ने भारतीय समाज को नई दिशा दी

जयंती पर श्रद्धांजलि

पटना | कार्यालय संवाददाता

शहर के साहित्यकार-कलाकार मुंशी प्रेमचंद की जयंती मनाने प्रेमचंद रंगशाला में शाम पहुंचे। बिहार संगीत-नाटक अकादमी ओर से कथा सम्राट प्रेमचंद की 136 वीं जयंती रविवार को मनाई गई। कला संस्कृति मंत्री शिवचंद्र राम ने दीप जलाकर दो दिवसीय आयोजन की शुरुआत की। इसके पहले उन्होंने जयंती पर रंगशाला परिसर में पौधारोपण भी किया। इस मौके पर उन्होंने रंगशाला परिसर में मुंशी प्रेमचंद की आदमकद प्रतिमा लगाने की घोषणा की।

प्रेमचंद के जीवन पर प्रकाश : संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष कवि आलोक धन्वा ने कहा कि हिंसा के इस दौर में प्रेमचंद को याद करना बहुत जरूरी है। कला संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद ने कहा कि शायद ही कोई हिंदी भाषी होगा जिसने प्रेमचंद की कोई न कोई कृति न पढ़ी हो। सचिव तारानंद वियोगी ने कहा कि 20 वीं सदी में प्रेमचंद ने भारतीय लेखन को एक नई दिशा और मार्गदर्शन दिया।

कहानियों का मंचन : इस मौके पर अभियान सांस्कृतिक मंच की ओर से अनीश अंकुर के निर्देशन में मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'गुल्ली-डंडा' का मंचन हुआ। नाटक में अनीश अंकुर, जयप्रकाश, रघु, कुणाल, गौतम और उत्तम ने बढ़िया अभिनय किया। वहीं दूसरी प्रस्तुति के रूप में माध्यम फाउंडेशन के कलाकारों ने धर्मेश मेहता के निर्देशन में 'खुच्चड़' नाटक किया। नाटक में ऑफिस और घर के खुच्चड़पन को दिखाने के बहाने जीवन में सुझबुझ के महत्व को बताया गया। मौके पर कवि सत्यनारायण, फणीश सिंह, कासिम खुर्शीद, शंकर कैमूरी, सुमन कुमार, विभा सिन्हा, सोमा चक्रवर्ती, मुन्ना जी सहित कई लोग उपस्थित थे। संचालन रूपम ने किया। सोमवार को भी नाटक होगा।

उधर, विकास मंच की ओर से निशा सांई दरबार हॉल हरनीचक बेउर में मुंशी प्रेमचंद जयंती पर बैठक आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता नंद किशोर यादव ने की। प्रेमचंद-शरतचंद्र जयंती समारोह कमेटी ने मुंशी प्रेमचंद की 136वीं जयंती पर सभा का आयोजन किया। कमेटी के अध्यक्ष प्रो पुर्णेन्दु मुखर्जी ने प्रेमचंद को महान मानवतावादी साहित्यकार बताया।

प्रेमचंद रंगशाला में मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'गुल्ली-डंडा' का मंचन कर दी गई श्रद्धांजलि। • हिन्दुस्तान

जागरण सिटी हलचल

पटना, 1

कलाकारों ने खेला 'गुल्ली-डंडा'

- कलाकारों ने प्रेमचंद की कहानियों का मंचन कर दी श्रद्धांजलि
- गुल्ली-डंडा व खुच्चड़ का प्रेमचंद रंगशाला में किया मंचन

कलाकारों ने प्रेमंचद को उनकी जयंती पर अपने अंदाज में श्रद्धांजलि दी। प्रेमचंद रंगशाला में कथा सम्राट की जयंती के मौके पर उनकी कहानियों का मंचन किया गया। आयोजन कला संस्कृति युवा विभाग एवं बिहार संगीत नाटक अकादमी ने किया था। अनीश अंकुर द्वारा निर्देशित प्रेमचंद की कहानी गुल्ली डंडा के नाम से एवं धर्मेश मेहता के निर्देशन में खुच्चड़ का मंचन हुआ। गुल्ली डंडा में कहानी बड़े भाई साहब का भी समायोजन था। कार्यक्रम का उद्घाटन कला संस्कृति एवं युवा विभाग के प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद व बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा ने किया।

खेल-खेल में छोटा भाई बन जात है अफसर : नाटक गुल्ली-डंडा में बड़ा भाई दिनरात मेहनत कर पढ़ाई करता है लेकिन वह बार-बार परीक्षा में फेल हो जाता है। दूसरी ओर छोटा भाई पढ़ाई के साथ खेलकूद भी खूब करता है। फिर भी वह अव्वल दर्जे से पास होता है। इसी तरह समय गुजारते हुए छोटा भाई अफसर बन जाता है और बड़ा भाई खेती बाड़ी का काम संभाल लेता है। नाटक में उत्तम कुमार, रघु, जय प्रकाश, अनीश अंकुर आदि कलाकारों के अभिनय को दर्शकों ने सराहा।

प्रेमचंद रंगशाला में प्रेमचंद की कहानियों का मंचन करते कलाकार जागरण

जीवन में सही सूझ-बुझ की जरूरत : खुच्चड़ नाटक में कलाकारों ने जिंदगी जीने का संदेश दिया। मुंशी के कार्यालय में चार मित्रवत स्टाफ और एक नौकर गरीबदास है, जो सीधा-सादा अपने काम में मगन रहने वाला है। ऑफिस के स्टाफ उसे बेवजह परेशान करते हैं और बात-बात पर ताने देते हैं। इसे देखकर मुंशी गरीबदास को प्रतिष्ठा प्राप्त करने का रास्ता बताता है, जो बाद में मंहगा पड़ता है। कलाकारों में धर्मेश मेहता, सुनीता भारती, राकेश कुमार, गुंजन कुमार, आर नरेंद्र, आमिर, दीपक कुमार, कुणाल सिकंदर, पुष्पा कुमारी आदि ने अभिनय किया।

अमृतराय ने प्रेमा को दी जिदंगी

पटना : अनिल कुमार मुखर्जी शताब्दी वर्ष व कला संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार सरकार के सौजन्य से बिहार आर्ट थियेटर द्वारा मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'प्रतिज्ञा' का मंचन कालिदास रंगालय में रविवार को हुआ। निर्देशन अरुण कुमार ने किया। नाटक में बदरी प्रसाद के परिवार में उनका पुत्र कमला, पुत्रवधू सुमित्रा, पुत्री प्रेमा और नौकर बदलू के साथ प्रेमा की सहली पूर्णा रहती है। प्रेमा के घर से जाने के बाद उसका भाई कमला प्रेमा कीं विधवा सहेली पूर्णा के साथ व्यभिचार करता है। पूर्णा की आबरू बचाने के लिए अमृतराय आगे आता है। अरूण, अनिता, उज्ज्वला, सुदीप, निक्की कुमारी आदि ने अभिनय किया।

top

14. VADH STHAL SE CHHALANG (By Hrishikesh Sulabh) 2 shows

दैनिक जागरण

जागरण सिटी

हलचल

मरा नहीं है अभी, वह लौट सकता है...

'बीच चौराहे पर एक लड़की के कपड़े खोलने वाले गुंडे, जिसके इशारे पर आए थे। मैंने पूरी साक्ष्य के साथ उसका पता लगा लिया है।' ये कहता है एक पत्रकार, लेकिन आगे क्या होता है? 'पत्रकारिता के सच और कविता के झूठ में बहुत फर्क होता है।' इस संवाद ने बहुत कुछ बयां कर दिया। शुक्रवार की शाम कालिदास रंगालय में मौका था नाटक 'वध स्थल से छलांग' की प्रस्तुति का। कला जागरण के कलाकारों ने दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी। हृषिकेश सुलभ की कहानी 'वध स्थल से छलांग' का नाट्य रूपांतरण कन्हैया ने किया था। निर्देशन सुमन कुमार ने किया।

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन

मूल्यों को बचाने की कहानी

पत्रकारिता के बदलते सरोकारों को केंद्र में रखकर इस नाटक की रचना की गई है। पत्रकारिता के व्यवसायीकरण में एक आदर्शवादी व्यक्तित्व का इंसान किस तरह पिसता है। नाटक का मुख्य पात्र भी अपने मिटते आदर्शों को बचाने के लिए पत्रकारिता छोड़ देता है।

मंच के कलाकार

अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, सरबिंद कुमार, सुनिता भारती, डॉ. शंकर सुमन, नितीश कुमार, अनुप्रिया, ऋषिकांत चतुर्वेदी, सुनील कुमार भगत, सूरज लाल, आमिर हक, रूबेश कुमार, राहुल उपाध्याय, मो. जईम, सुधीर कमल, नीरज बावरिया, कुमारी तान्या, सोनाली सरकार, कुमार चंदन, सत्यजीत कुमार पाठक, सदरुद्दीन, तेजू व शशांक शेखर।

नाटक वधस्थल से छलांग ने उठाए मानवीय संवेदनाओं पर सवाल

DRAMA

डीवी स्टार » पटना

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, एक बेहतर समाज के निर्माण में पत्रकार दिन रात-मेहनत कर योगदान देते हैं लेकिन जनतंत्र के इस रखवाले में भी आज कई खामियां आ चुकी हैं। पूंजी का बढ़ता दबाव इसे अपने उद्देश्यों से भटका रहा है। कुछ इन्हीं बातों को दिखा गया शुक्रवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक वध स्थल से छलांग।

नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से से मंचित यह नाटक हृषिकेश सुलभ का लिखित कहानी पर आधारित था। वहीं इसका निर्देशन किया वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार ने। नाटक में दिखाया गया कि समाज में तीव्र गति से होते बदलाव से पत्रकारिता जगत भी अछूता नहीं है। यह बदलाव सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। बदलते समाज में आज विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर तरह-तरह के खतरे मंडरा रहे हैं। ईमानदारी से अपने पेशे को ही अपना धर्म मानने वाले पत्रकारों पर लगातार हमले हो रहे हैं। नाटक की कहानी ऐसे पत्रकार रामप्रकाश तिवारी के इर्द गिर्द घूमती है जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों के दुख दर्द को उठाता है। लेकिन बदले में उसे मिलती है संवेदनहीन बन चुके लोगों से मानसिक प्रताड़ना। कदम-कदम पर उसे टकराना पड़ता सत्ता की नुमाइंदगी कर रहे भ्रष्ट लोगों से जो उसकी ईमानदारी का मजाक उड़ाते हैं और काम करने से रोकते हैं। नाटक दर्शकों को झकझोरता है कि आए दिन हमारे आस पास महिलाओं और कमजोर तबके पर अत्याचार होता है इसके बावजूद समाज चुप रहता है। राजनेताओं, पूंजीपतियों और अपराधियों का भ्रष्ट गठजोड़ समाज पर हावी हो एक ईमानदार इंसान की आवाज को दबाता जा रहा है। नाटक में सभी कलाकारों ने उम्दा अभिनय कर दर्शकों को अंत तक नाटक से बांधे रखा।

ये थे कलाकार

अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, डॉ शंकर सुमन, ऋषिकांत चतुर्वेदी, आमिर हक, मो. जईम, कुमार तान्या, सरबिंद कुमार, नीतिश कुमार, सुनील कुमार भगत, रूबेश कुमार, सुधीर कमल, सोनाली सरकार, सुनिता भारती, अनुप्रिया, सूरज लाल, राहुल उपाध्याय, नीरज बावरिया, कुमार चंदन, सत्यजीत कुमार पाठक, मो. सदरुद्दीन, विवेक कुमार, तेजू, शशांक आदि।

कालिदास रंगालय, नाटक वध स्थल से छलांग का मंचन करते कलाकार।

Scenes From the 1st Show

top

15. KABIRA KHADA BAZAR MEN (By Bhishma Shahni)

कालिदास रंगालय में 'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक की प्रस्तुति

न धर्म और न ही जात है कबीरा की

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

झीनी झीनी बीनी चदरिया. काहे का ताना, काहे की भरनी. कौन तार से बीनी चदरिया. इंगला-बिंगला ताना मानी. सुसमिन तार से बीनी चदरिया. सुर-नर-मुणि सब ने ओढ़ी. ओढ़ के मैली कीनी चदरिया. दास कबीर जतन ने ओढ़ी, ज्यों के त्यों रहन दीनी चदरिया.

लेखक भीष्म साहनी द्वारा लिखित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' के इस गीत का काफी महत्व है. गीत से ही कहानी का सार समझ आता है. दरअसल यह एक गीत नहीं, बल्कि कबीर द्वारा कहा गया एक दोहा है. कालिदास रंगालय में बिहार नाट्य कला प्रशिक्षणालय (बैट) द्वारा इस नाटक की प्रस्तुति हुई. सुमन सौरभ द्वारा निर्देशित इस नाटक द्वारा लेखक कहना चाहते हैं कि कबीर की न कोई जात थी, न कोई धर्म. इस कारण ही कबीर जन के बीच में रहते थे. सबके चहेते थे. शासकों ने हमेशा जात-धर्म के नाम पर लोगों को लड़ाया है. नाटक शिक्षक दिवस के मौके पर

मंच पर कलाकारों ने खूब जमाया रंग

हुआ. बैट के शिक्षक और स्टूडेंट्स द्वारा प्रस्तुत नाटक की शुरुआत कबीर के जन्म-कथा के रहस्योद्घाटन के साथ होती है. वे एक विधवा ब्राह्मणी की नाजायज औलाद थे, जिसे एक जुलाहा दंपत्ति नीरू और नीमा ने पाला-पोषा था. यह जानने के बावजूद कि नीमा उनकी सगी मां नहीं है, कबीर के मां के प्रति प्रेम में कमी नहीं आती. कबीर मुल्ले और पंडित के दुश्मन बन जाते हैं, क्योंकि कबीर की वाणी किसी को बख्शती नहीं है. कबीर अकसर अपमान सहते हैं, धमकियां सुनते हैं, लेकिन सच और खरी बात करने से नहीं चूकते हैं. वे गलियों और नुक्कड़ों पर अपने मित्रों के संग सत्संग करते हैं और भजन करते हैं, जो पंडितों और मौलवियों को अच्छा नहीं लगता है.

इसी बीच दिल्ली के सुलतान सिकंदर लोदी बिहार फतह के बाद लौटते हुए दो दिनों के लिए काशी में पड़ाव करते हैं और कोतवाल से कहते हैं कि कबीर से मुलाकात करनी है. लोदी कबीर से मिलता है और बात करता है. सिकंदर लोदी कबीर से उसका मजहब पूछते हैं. कबीर का जवाब होता है, 'एक निरंजन अल्लाह मेरा. हिंदू तुर्क दुई नहीं मेरा'. यह सुन कर सिकंदर लोदी नाराज हो जाता है और कबीर को नगर से निकलवा देता है.

इनकी अदाकारी बेहतरीन

नाटक में कुछ ही सीन के लिए आये बैट के शिक्षक अरूण सिन्हा, कबीर उदित कुमार, कोतवाल बने इरफान समेत शंकर सुमन, सुनिता भारती, राजू कुमार, रणविजय सिंह, अजीत कुमार, सत्येन्द्र, ज्ञान प्रकाश, मुन्ना रॉय, अमरदीप, प्रवीण, विशाल वैभव, सुजीत ने भी बहुत अच्छी अदाकारी की.

जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय

बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति सुमन सौरभ निर्देशित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' का मंचन

भास्कर न्यूज|पटना

दुख में सुमिरन सब करे सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोय तू फूल, तोहि फूल को फूल है वाको है तिरसूल। बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर, पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

कबीर दास के ये दोहे शुक्रवार की शाम कालिदास रंगालय में गाए जा रहे थे। हर दोहा जीवन के गहरे दर्शन को अपने में समेटे था, जो कि चंद शब्दों में ही बहुत बड़ी बात कह रहा था। यह सब हो रहा था यहां बिहार आर्ट थियेटर की ओर से मंचित और सुमन सौरभ निर्देशित नाटक कबीरा खड़ा बाजार में के मंचन के दौरान। नाटक में कबीर के दोहों की गीत और संगीत के साथ शानदार प्रस्तुति दी गई। इस संगीतमय नाटक में कबीर के विचारों को मंच पर उतारा गया। नाटक में कबीर के जीवन के विभिन्न हिस्सों को दिखाया गया। कबीर के बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की पूरी यात्रा को नाटक के जरिये मंच पर उतारा गया। नाटक में कबीर के समय के समाज की परिस्तिथयों, उस समय की सामाजिक कुरातियों घर-घर फैले अंधविश्वास को भी दिखाया गया।

निर्देशक- सुमन सौरभ।
कलाकार- उदित, अमरदीप कुमार, इरफान अहमद, राजू कुमार, डॉ शंकर सुमन, सुनीता भारती, दिव्या।

कालिदास रंगालय में कबीरा खड़ा बाजार नाटक का प्रभावपूर्ण तरीके से मंचन करते कलाकार।

top

16. SUR SUNDARI (By Dr. Shanti Jain)

ा तो नाम चलेगा. | है. बिहार में ऐसे आयोजन हो. | वाले गांव के दबंग के जरिए हर फ्रेम को बखूबी प्रस्तुत किया गया. | तैयार नहीं हो रहे हैं. | के गांधी मैदान में मुख्य व

टक मंचन

‘सुरसुंदरी’ के जरिये बताया, क्या होती है नारी शक्ति

चांदी के सात सिक्कों की कहानी है सुरसुंदरी

पटना

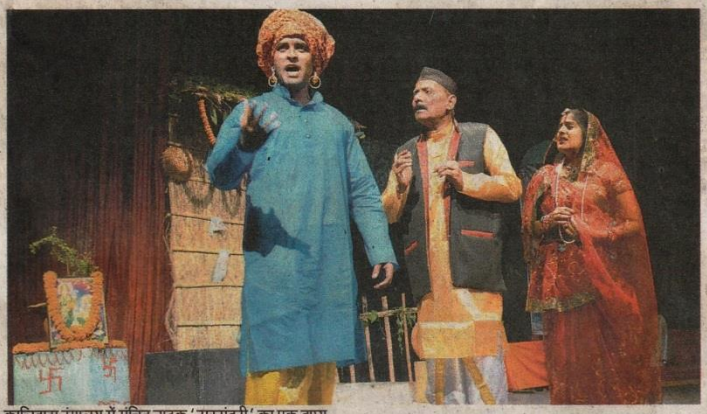

यापारी ही निकला.
ं आकर मुझे इस
या. मेरे साथ इतना
मैं क्या सोच कर
ा हो गया, लेकिन
मर्यादा में रह कर
इस अपमान का
ुंदरी से शादी करने
आधी रात को उसे
देता है, तो वह कुछ
ने गुस्से को जाहिर
ी की यह कहानी
कालिदास रंगालय
कला जागरण मंच
क का मंचन किया
रने के लिए मंच को
ा सजाया गया था.

कालिदास रंगालय में मंचित नाटक ‘सुरसुंदरी’ का एक दृश्य.

ये थे कलाकार

सुनीता भारती, आमिर हक, डॉ शंकर सुमन, सर्विन्द कुमार, प्रीति सिंह, विभा श्रीवास्तव, मिथिलेश कुमार सिन्हा, रूबेश कुमार, सुधीर कमल, नेहा, रिया, सूरज लाल, परितोष कुमार चित्रांश, विवेक कुमार, अमित कुमार, वसुधा, दीपक कुमार, आयुष कुमार.

नाटक में कभी राजमहल, तो कभी घने जंगल के दृश्यों को बखूबी पेश किया गया. नाटक का निर्देशन सुमन कुमार ने किया. बता दें कि नारी शक्ति पर आधारित सुरसुंदरी नाटक जैन शास्त्रों से ली गयी कथा के आधार पर रचा गया है. सुरसुंदरी राजा रिपुमर्दन और रानी रतिसुंदरी की कन्या थी. सुरसुंदरी एक विद्यालय में पढ़ती थी, जहां उसके साथ

अमर कुमार भी पढ़ रहा था.
सुरसुंदरी विद्यालय प्रांगण में स
उसके आंचल में सात चांदी
बंधे थे, जिन्हें खोलकर अ
मिठाई मंगाता है और मित्रों में
है. सुरसुंदरी के जगने पर अम
बताता है. सुरसुंदरी क्रोधित हो
को फटकारती है. अमर क्रु
कहता है कि सात सिक्कों से ज
है राजा का राज्य ले लेती. सु
चुनौती देते हुए कहती है, हां..
सात सिक्कों से राजा का राज्य
समय बीतता है. दोनों का
जाता है. विवाह के कुछ दिन
दोनों बाहर निकलते हैं, तो अ
बचपन में सुरसुंदरी की दी हु
याद आती है. वह बदला ले
आंचल में सात सिक्के बांध
छोड़ देता है.

नारी जब ठान ले तो कर गुजरती है

पटना (एसएनबी)। कला जागरण के तत्वावधान में बृहस्पतिवार को कालिदास रंगालय में नाटक ‘सुरसुन्दरी’ का मंचन किया गया। नाटक जैन शास्त्रों से उद्धत कथा के आधार पर थी। नाट्य रूपांतरण डॉ. शान्ति जैन और निर्देशन सुमन कुमार का था।

■ कालिदास रंगालय में सुरसुंदरी का मंचन

कथासार : नाटक में सुरसुंदरी राजा रिपुमर्दन और रानी रतिसुन्दारी की इकलौती पुत्री है। इस परिवार की जैन धर्म में गहरी आस्था है। सुरसुन्दरी विद्यालय में पढ़ती है जहां उसके साथ साहूकार धनावह और धनपति का पुत्र अमर कुमार भी पढ़ाई करता है। सुरसुन्दरी एक दिन विद्यालय में फूल चुनते-चुनते सो जाती है। उसके आंचल में सात चांदी के सिक्के बंधे रहते हैं, जिन्हें खोलकर अमर मिठाई मंगाता है और मित्रों में बांट देता है। सुरसुन्दरी के जगने पर अमर उसके हिस्से की मिठाई उसे देता है। साथ ही बताता है कि उसके आंचल में चांदी के सिक्के बंधे थे, उसी से मिठाई मंगा कर बांटी है। सुरसुन्दरी क्रोधित होकर अमर को डांटती है। अमर भी गुस्से में कहता है कि सात सिक्कों से जैसे लगता है राजा का राज्य ले लेती। सुरसुन्दरी भी उसे चुनौती देती है। समय बीतता है दोनों विवाह योग्य हो जाते हैं। राजा अपनी बेटी के विवाह के लिए चिंतित है। रानी अमर से सुरसुन्दरी के विवाह का प्रस्ताव रखती हैं। दोनों का विवाह हो जाता है। विवाह के कुछ दिन बाद दोनों व्यपार के लिए नगर से बाहर जाते हैं। रास्तें में जब दोनों विश्राम करते हैं तभी अमर को बचपन में सुरसुन्दरी की दी हुई चुनौती याद आती है। वो बदला लेने की भावना से उसके आंचल में सात सिक्के बांध कर लिख देता है- सात सिक्कों से राज्य लेकर रानी बनो और वह उसे छोड़ कर चल जाता है। नींद खुलने के बाद सुरसुन्दरी संदेश पढ़ कर व्याकुल हो जाती हैं। तभी एक साहूकार आता है और उसे अपने साथ ले जाता है, लेकिन वह उसके प्रति बुरी नीयत रखता है। सुरसुन्दरी वहां से भाग निकलती है और विमल वाहन नामक पुरुष वेष में रह कर व्यपार करने लगती है। वह व्यपार में सफल होती है। कुछ समय बाद अमर व्यपार के सिलसिले में वहां आता है। सुरसुन्दरी उसे पहचान लेती है, उसे उदास देखकर कारण पूछती है। अमर उसे पिछली सारी बातें बताता है। उसे लगता है अब सुरसुन्दरी जीवित नहीं होगी। सुरसुन्दरी वेश बदल कर सामने आती है और कहती है- सात सिक्कों से अर्जित यह राज्य आपके सामने है। यह एक चुनौती थी, लेकिन नारी जब किसी काम के लिए प्रतिबद्ध होती है तो उसकी शक्ति प्रखर हो उठती है। अमर उससे माफी मंगता है, फिर दोनों एक हो जाते हैं।

नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

नाटक में सुनीता भारती, सर्विन्द कुमार, मिथिलेश कुमार सिन्हा, नेहा, रिया, विवेक कुमार, दीपक कुमार, आमिर हक, प्रीति सिंह, रुबेश कुमार, सूरज लाल, विवेक कुमार, अमित कुमार, आयुष कुमार, वसुधा, डॉ. शंकर सुमन, विभा श्रीवास्तव, सुधीर कमल, परितोष कुमार चित्रांश आदि ने अभिनय किया।

top

17. TUKDO-TUKDO ME AURAT (play adaptation Arvind Kumar) 2 shows

पूर्ण अस्तित्व के लिए संघर्ष करती रही स्त्री

पटना (आससे)। स्थानीय कालिदास रंगालय में कला जागरण द्वारा तीन दिवसीय 'आदिशक्ति नाट्य महोत्सव' की शुरुआत हुई। तीनों दिन

- टुकड़ों-टुकड़ों में औरत, अक्स और सफर का मंचन
- देवेन्द्र राज अंकुर को 'प्रेमनाथ स्मृति सम्मान'
- आदिशक्ति नाट्य महोत्सव शुरू

चर्चित लेखिका ममता में मेहरोत्रा की 7 कहानियों का 3 दिनों में मंचन किया जायेगा। कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नयी दिल्ली के पूर्व निदेशक देवेंद्र राज अंकुर को 'प्रेमनाथ स्मृति सम्मान' प्रदान कर किया गया।

इस अवसर पर ममता मेहरोत्रा लिखित कहानियों की नाटक रुपांतरित पुस्तक 'टुकड़ों-टुकड़ों में औरत' का विमोचन भी किया गया जिसका नाट्य रूपांतरण अरविंद कुमार ने किया है। इसके बाद उनकी तीन कहानियां टुकड़ों-टुकड़ों में औरत अक्स और सफर का नाट्य मंचन सुमन कुमार के निर्देशन में किया गया। कहानी 'अक्स' भोगवादी और बाजारवाद से ग्रस्त एक स्त्री का मनोविश्लेषण है जो अपने विवर छिपाकर दूसरों में छिद्र ढूंढती फिरती है। अपने आत्मा से साक्षात्कार होने पर सत्य को स्वीकारने पर मजबूर होती है।

इस कहानी की प्रस्तुति में आत्मालोचना को एक छाया पुरुष के रूप में स्त्री के साथ संवादरत दिखाया गया है। दूसरे कहानी 'टुकड़ों-टुकड़ों में औरत' पूरी स्त्री जाति के पूर्ण अस्तित्व के लिए संघर्ष करती एक स्मिता कथा है-शीर्षक रूप में चित्रित किया गया है। कहानी में गांव की मासूम और भोली-भाली बसंती अपने भूखे बच्चों के लिए रोटी और अपना तन ढकने के लिए एक साड़ी की तलाश में शहर आती है।

तब उसे मानवीय गुणों से रहित एक नग्न समाज का दर्शन होता है। जो अपने बच्चों की जीवन रक्षा के लिए रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं ले जा सकी मुर्दों के इस समाज से। बसंती की भूमिका में अपनी संवेदना पूरे दर्शकों में बिखेरने में सुनीता भारती पूरी तरह कामयाब रही। तीसरे और अंतिम कहानी 'सफर' वास्तव में सफरनामा है मुफ़लसी और मजदूरी के जबड़े में पिसते एक इंसान सुद्, गरीब महेश दो जून की रोटी की खातिर भटकता उड़ीसा में नौकरी करने पर मजबूर है, फिर भी अपने परिवार का पेट नही भर पाता। पत्नी सावित्री को समाज का लांछन सहना पड़ता है। जिंदगी के लिए ताउम्र खाक छानता रहा। अंत में दोनों की जिंदगी खाक बनकर बिखर जाती है और सफर खत्म नही होता।

विभिन्न भूमिकाओं को मंच पर जीवंत करनेवालों कलाकारों में थे- अदिति सिंह, नीतीश कुमार, गुंजन कुमार, मिथिलेश कुमार सिन्हा, करिश्मा कुमारी, अभिषेक कुमार, राकेश कुमार, आराध्या सिन्हा, मौसमी भारती, सानू कुमार, रविंद्र कुमार, डा. शंकर सुमन, विभा सिन्हा, तृप्ति कुमारी, राहुल उपाध्याय, आकाश कुमार, चक्रपाणि पांडेय, हरे कृष्ण सिंह मुन्ना, अनुपम कुमार, सितेश कुमार सिंह, मोहम्मद सदरुद्दीन, आदर्श प्रियदर्शी, कृष्ण कुमार, मोनू, अनुपम।

प्रभात खबर
prabhatkhabar.com
लाइफ@पटना

कालिदास रंगालय. टुकड़ों-टुकड़ों में औरत का मंचन

अपनी अस्मत बचाने के लिए जिंदगी तक गंवा दी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

समाज में औरतों को किस-किस तरह की परेशानियों का सामना करना होता है. कैसे वह अपनी अस्मत को बचाने के लिए खुद की जिंदगी गंवा देती है. औरतों की इस कहानी को कालिदास रंगालय के मंच पर प्रस्तुत किया गया. गुरुवार को तीन दिवसीय प्रेमनाथ खन्ना स्मृति आदि शक्ति नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया. इस नाट्योत्सव के दौरान हर दिन कला जागरण द्वारा नाटकों का मंचन किया जायेगा. इस आयोजन में चर्चित लेखिका ममता मेहरोत्रा की सात कहानियों का तीन दिनों में मंचन किया जा रहा है. इस कार्यक्रम की शुरुआत विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक देवेन्द्र राज अंकुर को प्रेम नाथ स्मृति सम्मान प्रदान कर किया गया. शुरुआत में ममता मेहरोत्रा लिखित कहानियों की नाट्य रूपांतरित पुस्तक टुकड़ों-टुकड़ों में औरत का विमोचन किया गया. इसके बाद उनकी तीन कहानियों टुकड़ों-टुकड़ों में औरत, अक्स और सफर नाटक का मंचन किया गया. नाटक में कलाकारों की बेहतरीन अभिनय को देख दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायीं. वहीं, नाटक देख दर्शक खामोश नजर आये. इस नाटक का निर्देशन सुमन कुमार द्वारा किया गया.

गुरुवार को कालिदास रंगालय के मंच पर नाटक का मंचन करते कलाकार.

अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष करती महिला

नाटक टुकड़ों-टुकड़ों में औरत तीन कहानियां अक्स, सफर और टुकड़े-टुकड़े में औरत का समिश्रण है. इसमें इमैजिनेशन की हुई कहानी प्रस्तुत की गयी है. इस नाटक की कहानी को सूत्रधार की भूमिका निभाते हुए प्रस्तुत करता है. कहानी अक्स भोगवादी और बाजारवाद से ग्रस्त एक स्त्री का मनोविश्लेषण है, जो परिस्थितियों के आगे बेबस रहती है. इसमें एक आलोचात्मक कहानी है, जिसमें महिला की आत्मा उसे धिक्कारती है. नाटक में पुरुष और स्त्री का संवाद भी दिखाया गया है. दूसरी कहानी टुकड़ों-टुकड़ों में औरत के अस्तित्व की कहानी है, जिसमें महिला अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करते रहती है. इसमें दिखाया गया है कि गांव की मासूम और भोली-भाली बसंती अपने भूखे बच्चों की लिए रोटी और अपने तन ढकने के लिए एक अदद साड़ी की तलाश में शहर आती है, जहां उसे संवेदनाए, नैतिकता और अस्मिता जैसे मानवीय गुणों से रहित एक एक ऐसा समाज दिखता है, जिसमें उसे कही परेशानियों का सामना करना होता है.

रोटी की खातिर बाहर जाने को मजबूर

इस शहर से वह अपने भूखे बच्चों की प्राण-रक्षा के लिए रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं ले जा सके, लेकिन उसकी अस्मिता के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं. वहीं, तीसरी सरी कहानी में वास्तव में एक सफरनामा है. मुफलिसी और मजबूरी के जबड़े में पिसते एक इंसान की, जो गरीब महेश दो जून की रोटी की खातिर सुदूर उडीसा में नौकरी करने पर मजबूर है. फिर भी अपने परिवार का पेट नहीं भर पाता और न ही परिवार के साथ रह पाता है. उसकी पत्नी सावित्री को समाज का लांक्षंण सहते हुए दूसरे घरों में काम करना पड़ता है. उसका बेटा बिट्टु इन सब के लिए महेश को जिम्मेदार समझता है और अपने पिता से नफरत करने लगता है, जब बिट्टू को नैकरी मिल जाती है, तो वह पिता को बिना खबर दिए ही अपनी मां को साथ ले कर नौकरी पर चला जाता है, सावत्रि की ममता तो परवान चढ़ी, पति के प्यार की प्यास सीने में ही जज्ब हो कर रह गयी. तीनों कहानी में औरतों की दास्तान पेश किया गया है.

top

18. GANDHI KE CHARAN CHAMPARAN ME (By A. P. Sinha)

बिहार में व्यापार करना आसान हुआ है। वे डूइंग बिजनेस के विभिन्न आयामों पर बोल रहे थे।

इंडस्ट्रियलिस्ट मौजूद रहे।

कंठ ने कहा कि सच की तलाश करना और

कालिदास रंगालय

आठवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के पांचवें दिन नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से नाटक का

गांधी के चरण चंपारण में दिखा निलहे गोरों का आतं

पटना • डीबी स्टार

चंपारण से गांधी देश में एक जननेता के रूप में उभरे और स्वतंत्रता के लिए चलाए जा रहे आंदोलन के नेतृत्वकर्ता बने। कालिदास रंगालय में सोमवार की शाम मंचित नाटक 'गांधी के चरण चंपारण' में, कालिदास रंगालय में चल रहे आठवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के पांचवे दिन नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से इस नाटक का मंचन किया गया था। अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा के लिखे इस नाटक का निर्देशन किया था वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार ने। नाटक में दिखाया गया कि चंपारण में नील के कारोबारी अंग्रेज या निलहे गोरों का आतंक काफी बढ़ा हुआ था। ऐसे में चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल ने किसानों की समस्या दूर करने के

लिए गांधीजी से मिलने और उन्हें चंपारण लाने की ठानी। वह गांधी जी से मिलने के लिए लखनऊ, कानपुर, कोलकाता आदि शहर गए, गांधी जी उन्हें टालते रहे लेकिन उनकी जिद के आगे झुकते हुए चंपारण आने को राजी हुए। गांधी बने अखिलेश्वर प्रसाद, राजकुमार शुक्ल बने सरविंद कुमार और ब्रजकिशोर प्रसाद बने आमीर हक। अन्य कलाकारों में मिथिलेश सिन्हा, सुनीता भारती, हीरा लाल राय, आकाश, विजय, तृप्ति, राकेश, शुभम् सिंह, अंकेश राज, मनीष कुमार दास, विवेक तिवारी, मुकेश यादव, अर्पित शर्मा, सीतेश सिंह, संतोष राजपूत आदि थे। नाटक में मंच परिकल्पना प्रदीप गांगुली की थी।

नाटक ने दिया संदेश धरती के लिए जरूरी है

पटना | नाट्य संस्था रंगसृष्टि की ओर से सोमवार को प्रेमचंद रंगशाला में नाटक सृष्टि का मंचन हुआ। महेश कटारे द्वारा लिखित आदमी, आग और सृष्टि पर यह नाटक आधारित था। इस नाटक के निर्देशक थे सनत कुमार।नाटक में दार्शनिक अंदाज में कथा आगे बढ़ती है। नाटक का पात्र एक मनुष्य है यह मनुष्य अपनी निरंतर यात्रा करते हुए एक समय के एक ऐसे धुंध में फंस जाता है जहां से उसे आगे निकलने का मार्ग नहीं मिलता। निरंतर यात्रा के क्रम में अपने अनुभव और ज्ञान को अपनी पीठ पर अपनी पीठ पर उठाए वह व्याकुलता वश अपने स्वान(कुत्ते) मित्र के आगमन पर बहुत खुश होता है।

ये थे कलाकार : धीरज कुम भारती, रवि कुमार, चंदन कु राजदीप कुमार, उज्जवल कु कुमार , रंधीर कुमार।

हिन्दुस्तान

में नाटकों का मंचन, दोनों जगह मानव जीवन की यात्रा पर केंद्रित दो नाटकों को कलाकारों ने किया जीवंत

क लिए निकला तो कोई खुद के लिए

दो नाटक देखने को मिले और दोनों मानव की यात्रा पर केंद्रित नाटक थे। सोमवार शाम कालिदास रंगालय और प्रेमचंद रंगशाला दोनों जगह नाटक हुए। कालिदास रंगालय में गांधी की चंपारण यात्रा को मंच पर उभारा गया, तो प्रेमचंद रंगशाला में महत्वाकांक्षी मानव की यात्रा को दिखाया गया।

पटना | कार्यालय संवाददाता

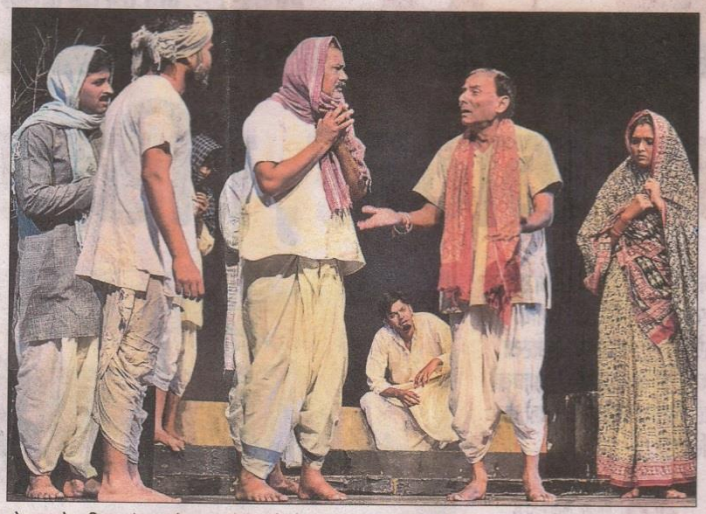

सोमवार को कालिदास रंगालय में कलाकारों ने गांधी की चंपारण यात्रा को मंच पर उतारा। • हिन्दुस्तान

गांधी के चरण चंपारण में के कलाकार : अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, सरविन्द कुमार, आमीर हक, मिथिलेश कुमार सिन्हा, सुनीता भारती, हीरा लाल राय, आकाश कुमार, विजय कुमार, तृप्ति कुमारी, राकेश कुमार, शुभम सिंह, अंकेश राज, मनीष कुमार दास, विवेक कुमार तिवारी, मुकेश कुमार यादव, अर्पित शर्मा, सितेश कुमार सिंह, संतोष राजपूत।

सृष्टि नाटक के कलाकार धीरज कुमार, पूजा कुमारी, रवि कुमार, चंदन कुमार, राजदीप कुमार, उज्वल कुमार, अनुराग कुमार, रंधीर कुमार।

जीवन की यात्रा भी अजीब होती है। कोई खुद के लिए ताउम्र जीता है, तो कोई पूरी जिंदगी समाज को समर्पित कर देता है। दोनों तरह के लोगों की अपनी-अपनी दुनिया होती है। इसी दुनिया को अपने-अपने अंदाज में कलाकारों ने मंच पर उतारा। कालिदास रंगालय में 'गांधी के चरण चंपारण' का मंचन हुआ, तो प्रेमचंद रंगशाला में 'सृष्टि' नाटक का महत्वाकांक्षाओं का संसार दिखा।

गांधी की यात्रा : अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा लिखित आलेख को सुमन कुमार के निर्देशन में मंच पर उतारा गया। कला जागरण के कलाकारों ने महात्मा गांधी राजकुमार शुक्ल किसानों की प्रतिनिधि बन गांधी जी से मिले और उन्हें बुलाकर लाए और आंदोलन हुआ, इन तमाम चीजों को छोटे-छोटे दृश्यों के जरिए मंच पर उतारा गया। खास बात यह रही कि राजनीतिक इच्छा शक्ति दिखी, उसे अखिलेश्वर प्रसाद ने अपने अभिनय से जीवंत करने की अच्छी कोशिश की।

मत्वाकांक्षी युवा : प्रेमचंद रंगशाला में रंगसृष्टि संस्था के कलाकारों ने का मार्ग ही नहीं मिलता। लेकिन वो रूकता नहीं है। जल्द से जल्द सब कुछ पा लेना चाहता है। सब कुछ पा लेने की उसकी महत्वाकांक्षा किन-किन राहों से लेकर जाती है, इसे प्रतिकात्मक अंदाज में कलाकारों ने मंच पर उतारा। नाटक दौरान यह दिखाने की कोशिश की गई कि आज कैसा दौर आ गया है कि कुत्ता बे-रोक-टोक हर जगह जा सकता है, लेकिन मनुष्य पर पहरा है। दरअसल यह पहरा इसलिए है कि आज का मनुष्य सिर्फ अपने बारे में सोच रहा है।

top

19. ACCIDENT (By S. P. Singh) / Acting (central role) **2 shows**

ACTIVITY

नाटक • कालिदास रंगालय में एसपी सिंह लिखित नाटक एक्सीडेंट में क

धर्म के नाम पर कबतक

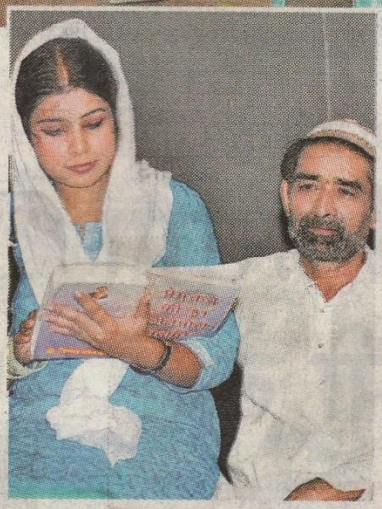

पटना • डीबी स्टार

21 वीं सदी में भी देश के ज्यादातर लोगों के सामने रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या मुंह बाएं खड़ी है। महंगाई दिनों दिन बढ़ती जा रही है, शिक्षा और स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएं पाना आम आदमी के बस से बाहर की चीज होती जा रही है। देश में बेरोजगारों की फौज खड़ी है लेकिन आज भी कई राजनेता जाति और धर्म के नाम पर राजनीति कर लोगों में नफरत के बीज बोते हैं और वोट पा लेते हैं। ऐसे में शनिवार की शाम कालिदास रंगालय में शंभु पी सिंह लिखित नाटक एक्सीडेंट के मंचन ने सवाल उठाया कि आखिर हम कब धर्मांधता से ऊपर उठेंगे और धर्म के नाम पर लड़ना बंद करेंगे। यहां माध्यम फाउंडेशन के बैनर तले धर्मेश मेहता निर्देशित इस नाटक का मंचन किया गया। नाटक में दो अजनबी मुसाफिरों की कहानी दिखाई गई जिनकी मुलाकात एक बस एक्सीडेंट में होती है। दोनों के बीच गहरी दोस्ती होती है, लेकिन समाज के व्यवहार से उन्हें दुख होता है कि आज भी हमारी पहचान हिन्दू और मुसलमान के तौर पर है। नाटक कहता है कि हमारी पहली पहचान एक इंसान के तौर पर होनी चाहिए।

ये थे कलाकार

▪ गुंजन कुमार, पंकज सिंह, सुनीता भारती, चित्रा श्रीवास्तव, आर नरेंद्र, सरबिंद कुमार, सौरभ सिंह, पारस कुमार, सौरभ कुमार, मो. सर्फुद्दीन, अजय कुमार श्रीवास्तव, रंधीर सिंह, राहुल सिन्हा, शुभम कुमार आदि।

[top](#)

20. PARIDA UD GAYA (By Dinanath Sahni)/ Acting

नाट्य प्रस्तुतिकरण का नया विधान

'परिंदा उड़ गया' से उठा 'मास्टर-साहेब' से पर्दा गिरा

(आज समाचार सेवा)

पटना। कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में आर. पी. तरुण की स्मृति में तीन दिवसीय नाट्योत्सव के दूसरे दिन डॉ. दीनानाथ साहनी की तीन कहानियां मंच पर साकार हुईं।

मंचन के जरिये 'परिंदा उड़ गया', 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर-साहेब' की प्रस्तुति ऐसी रहीं कि तीनों ही नाट्य प्रस्तुतियां एकाकार हो गयीं। इसमें 'परिंदा उड़ गया' को आधार में रख कर, शेष दो कहानियां 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर-साहेब' को प्रस्तुत किया गया। कला जागरण की इस प्रस्तुति में पहली कहानी के कलाकार ही सूत्रधार की भूमिका निभाते हैं। कहानी के नाट्य प्रस्तुतिकरण का यह नया विधान है, जिसकी शुरूआत जाने-माने निर्देशक सुमन कुमार ने 'टुकड़ों-टुकड़ों में औरत' से शुरू किया है। इसे दर्शकों एवं साहित्य-प्रेमियों ने काफी सराहा है। आधार नाटक 'परिंदा उड़ गया' एक भाव प्रधान प्रस्तुति है। इसमें रंगमंच के कालाकारों की अपनी जीवंत मित्र मंडली के बिखराव के दर्द को चित्रित किया गया है। एक समय होता है, जब दोस्तों की एक अपनी अलग दुनिया होती है जिसमें वे चहकते, फुदकते और अपनी-अपनी भावनाओं को आपस में बांटते हैं। ऐसा लगता है, यह दुनिया कभी खत्म न होने के लिए है। लेकिन, जिंदगी की भाग दौड़ में यह प्यारा संसार बिखर जाता है और जिंदगी उस खाली पिंजड़े की तरह रह जाती है, जिससे निकल कर परिंदा उड़ गया हो।

'विद्रोही स्त्री', वर्तमान समय में नारी शोषण और इसके प्रतिक्रिया स्वरूप नारी-शक्ति के पुनर्जागरण का एक सुंदर उदाहरण है। शारदा अपनी स्थिति से समझौता कर लेती है। लेकिन, विद्रोह का छोटा सा स्वर उसका पति सह नहीं पाता और उसकी हत्या कर देता है। उसके पति रघुनाथ की रखैल कमला यह सब देखती है और बड़ी बहादुरी से उसका प्रतिकार करती है। कमला कहती है कि 'मुझे ऐसा सधवा नहीं बनना कि अत्याचार झेलो और मर जाओ। दुनिया में मेरे लिए दूसरे भी मर्द हैं।' नारी जाति के अंदर दमन के खिलाफ फूट पड़े ज्वालामुखी का वह लावा है, जो नारी को निकृष्ट समझने वाले अत्याचारियों के अहं को खाक करने के लिए काफी है।

तीसरी कहानी 'मास्टर-साहेब', भ्रष्ट शिक्षकों के कारण विद्यालयों की नष्ट होती पवित्रता और हमारी नयी पौध पर उसके कुप्रभाव को दर्शाता है। भरत सर एक ऐसे शिक्षक हैं, जो बच्चों को तो चरित्र की उज्ज्वलता का पाठ पढ़ाते हैं, परंतु उनका अपना ही चरित्र इतना गिरा हुआ है कि जब इसका रहस्योद्घाटन होता है, तो गुरुभक्त और सबसे सरल मासूम बच्चे के मुंह से भी उनके लिए गाली निकल जाती है। मंच पर शुभम सिंह, डॉ. शंकर सुमन, सुनीता भारती, नितीश कुमार, आमिर हक, राहुल उपाध्याय, रूबी खातून, अरविंद कुमार, आराध्या सिन्हा, मिथिलेश सिन्हा, अनंत, पुष्कर एवं अमित ने पात्रों को जीवंतता के साथ जिया। गुंजन कुमार का संगीत प्रभावपूर्ण रहा। नाट्य रूपांतरण अरविंद कुमार ने किया था।

सदस्यों ने किया शपथ ग्रहण

कुमार सिंह, विमल चौधरी सहित कई गणमान्य समाजसेवी उपस्थित थे। खचाखच भरे संघ भवन में नवनिर्वाचित अध्यक्ष ब्रह्मानंद सिंह, उपाध्यक्ष रणविजय कुमार व अशोक कुमार, महासचिव ई. सुनील कुमार

एनपीसीसी में विश्वकर्मा पूजा का भव्य आयोजन

पटना। भगवान विश्वकर्मा की पूजा के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी एनपीसीसी (भारत सरकार का उपक्रम), पटना

सरोज दास ने

पटना (आससे)। बहुदेशीय सांस्कृतिक परिसर भारतीय नृत्य कला मंदिर में भारतीय सांस्कृतिक, संबंध परिषद एवं कला संस्कृति एवं युवा

आइसीसीआर

21. NAYA BANGLA (By Anil Kumar Mukharji)

सहित कई स्कूलों के बच्चों ने हिस्सा लिया।

कालिदास रंगालय • अनिल मुखर्जी लिखित 'नया बंगला' का निर्देशन किया सुमन कुमार ने

पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है भ्रष्टाचार से कमाया हुआ धन

पटना • डीबी स्टार

धन कमाने की इच्छा हर मनुष्य में होती है, हर कोई बेहतर जीवनस्तर के लिए धन कमाना चाहता है लेकिन कई बार लोग धन कमाने के लिए अनैतिक कार्यों या भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। लेकिन वह भूल जाते हैं कि भ्रष्ट तरीके से आने वाला धन जिस तेजी से आता है उससे कहीं तेजी से चला भी जाता है। भ्रष्टाचार से कमाया धन कमाने वाले के साथ उसके पूरे परिवार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। कुछ इन्हीं बातों को दिखा गया कालिदास रंगालय में मंगलवार की शाम मंचित नाटक 'नया बंगला'।

अनिल कुमार मुखर्जी के लिखे इस नाटक का निर्देशन वरिष्ठ निर्देशक सुमन कुमार ने किया था। नाटक में दिखाया गया कि हरेंद्रनाथ और उसकी पत्नी रुक्मिणी अपनी दो संतान अमित और अरुणा के साथ एक खुशहाल जिंदगी बिताते हैं। वहीं जीवन एक बंगलादेशी शरणार्थी है जिसे वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त करते हैं साथ ही अपने घर में आश्रय देते हैं। हरेंद्रनाथ ठेकेदारी करता है, ठेकेदारी में भ्रष्ट तरीकों से काफी धन कमाता है। वह शहर के पॉश इलाके में एक नया बंगला बनवाता है। रुक्मिणी के पास जब अच्छे पैसे आने लगते हैं तब वह मध्यम वर्ग की जीवनशैली को तुच्छ समझने लगती है और उच्च वर्ग के तौर तरीकों की नकल कर उच्च वर्गीय कहलाने की कोशिश करती है। इसके कारण पति-पत्नी में तकरार भी होती है। नाजायज तरीके से कमाया धन अपना प्रभाव दिखाना शुरु करता है, उनके बच्चे नशेबाज और चरित्रहीन हो जाते हैं। रुक्मिणी मुहल्ले में रहने वाले जिलाधिकारी कृष्णकांत से फ्लर्ट करती है और जीवन के साथ भी अनैतिक संबंध बना लेती है। इसका पता जब परिवार के दूसरे सदस्यों को लगता है तब वह एक झूठा आरोप लगाकर जीवन को घर से भगाने का हुक्म सुनाती है। बेसहारा जीवन अपने चरित्रहनन से बेहद आहत होता है वहीं पूरे परिवार की सुख-शांति खत्म हो जाती है।

कलाकार

▪ सुनीता भारती, डॉ शंकर सुमन, रिया कुमारी, गुंजन कुमार, आमिर हक, नीतीश कुमार आदि।

कालिदास रंगालय में अभिनय करते कलाकार।

रंगकर्म के उत्थान के संकल्प के साथ नाट्य महोत्सव पूरा

खगौल | केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के सौजन्य से रेलवे स्कूल में चल रहा सूत्रधार का तीन दिवसीय खगौल विरासत नाट्य महोत्सव नाट्य रंगकर्म के उत्थान का संकल्प लेते हुए मंगलवार को संपन्न हो गया। समापन समारोह में उपस्थित केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री रामकृपाल यादव ने कहा कि खगौल की जमीन सांस्कृतिक मामलों में उर्वरक रही है। समारोह में विधायक भाई वीरेंद्र, सूत्रधार के महासचिव नवाब आलम, मशहूर रंगकर्मी उदय कुमार, आलोक धन्वा, अवधेश, बिनोद अनुपम, उदय यादव, अनिल, इस्लामुद्दीन, सफ्दर, सज्जाद, शोएब कुरैशी, रेयाज अहमद, मनीष पाल मौजूद थे। सूत्रधार की पत्रिका का विमोचन भी हुआ।

अंतिम दिन दो नाटकों का मंचन

खगौल विरासत नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन दो नाटकों का मंचन हुआ। पहली प्रस्तुति सांस्कृतिक संस्थान, बिहटा की 'औरतें' थीं। इसे उदय कुमार ने लिखा एवं मो. नसीमुद्दीन ने निर्देशित किया। विनय, नसीमुद्दीन, इस्लाम, अजित, श्रीनाथ, सद्दाम, रिंकू देवी, आशा, ममता, वकील राम, रामनाथ तथा अमरजीत ने अभिनय किया। दूसरी प्रस्तुति मंथन कला परिषद खगौल की प्रमोद त्रिपाठी निर्देशित भिखारी ठाकुर की रचना 'गबरघिचोर' की थी। अंजलि, सारिका, हैबिन्स, भीम, तेज नारायण, विशाल, अमन, श्यामकांत, जितेंद्र, राजेश, रजनीकांत, पूजा, शिखा ने अभिनय किया।

4 से 10 फरवरी तक होगी फिल्म मेकिंग कार्यशाला

पटना • डीबी स्टार

कला संस्कृति विभाग का बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम लिमिटेड आगामी चार से 10 फरवरी तक फिल्म मेकिंग कार्यशाला का आयोजन करवा रहा है। गोलघर के पास स्थित निगम के कार्यालय मॉरिसन भवन में सुबह दस से शाम चार बजे तक होगी। इसमें फिल्म निर्माण की तकनीक सीखने के इच्छुक लोग भाग ले सकते हैं।

इसमें भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को एक हजार रुपये का शुल्क देकर रजिस्ट्रेशन करवाना होगा। कार्यशाला में चयन प्रतिभागियों की योग्यता और साक्षात्कार के बाद किया जाएगा, जिनका चयन इसमें नहीं होगा उनका रजिस्ट्रेशन शुल्क लौटा दिया जाएगा। इसमें शामिल होने के लिए रजिस्ट्रेशन शुरु किया जा चुका है और यह 28 जनवरी तक चलेगा। इसमें प्रतिभागियों को स्टील फोटोग्राफी और मूविंग इमेज के सिद्धांत, लाइट, फिक्शन और नॉन फिक्शन फिल्मों समेत फिल्म निमार्ण से संबंधित विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके बारे में जानकारी देते हुए बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम के प्रबंध निदेशक गंगा कुमार कहते हैं कि चार से 14 फरवरी तक चलने वाली इस कार्यशाला में फिल्म निर्माण से जुड़ी जानकारी दी जाएगी। बिहार के छात्र, युवा, रंगकर्मी समेत विभिन्न तबके के लोग इसका लाभ ले सकते हैं।

top

22. VEER GATI

पाया. इस स्कार म आतरिक्त रनों की संख्या दहाई (10) में थी. टीम सी

एवं टेबल टेनिस खेलों के मुकाबले शुरू हो जायेंगे.

ने कहा कि बजट का स्कलेटन तैयार है बस उसे फाइनल रूप देना बाकी है.

दिल्ली रवाना किया जायेगा. ये छात्र गणतंत्र दिवस देखने के अलावा

होगा 'माना कि अंधेरा घना है, लेकिन दीया जलाना कहां मना है'.

आठवां दिन: 25वें पटना थियेटर फेस्टिवल के अंतर्गत मंचित हुआ नाटक

पैसों के बल पर दबा देते हैं गला

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आमतौर पर मन में कई तरह की बातें चलती रहती हैं. लोग एक-दूसरे के कर्मों को कई तरह से देखते हैं. कोई करना कुछ चाहता है और कर कुछ बैठता है और सामने वाला उसे कुछ और समझ लेता है. कुछ ऐसा ही देखने को मिला नाटक वीरगति में, जिसमें नाटक के एक किरदार सुकुमार का मन धन बंटोरना नहीं, बल्कि कुछ और रहता है. नाटक की यह कहानी देखने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर. यहां मंगलवार को 25वें पटना थियेटर फेस्टिव अनिल कुमार मुखर्जी शताब्दी नाट्योत्सव के आठवें दिन निर्माण रंगमंच हाजीपुर द्वारा वीरगति नाटक का मंचन किया गया. यह नाटक दर्शकों को शुरू से लेकर अंत तक पसंद आया. नाटक में कई दृश्यों को देख और एक से बढ़ कर एक डायलॉग्स को सुनते हुए दर्शकों ने भरपूर तालियों से कलाकारों का हौसला बढ़ाया. इस नाटक की परिकल्पना और निर्देशन क्षितिज प्रकाश का था.

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

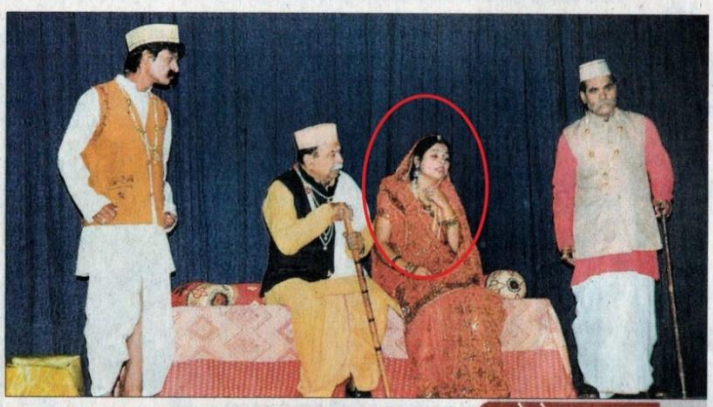

नाटक की कहानी

सुकुमार तीन साहुकारों के परिवार का एकमात्र वारिस है. उसका मन धन-दौलत को बंटोरने का नहीं करता बल्कि अमीरी-गरीबी को देख उसका हृदय विचलित रहता है. वह हमेशा समाज की भलाई के लिए आगे रहता है. समाज के लिए ही कुछ करना चाहता है, लेकिन सुकुमार का यह विचार साहूकार परिवारों के लिए चिंता का विषय बना रहता है. इसलिए लोग उसकी शादी करा देते हैं, लेकिन शादी के बाद भी उनका मन नहीं लगता है. इसलिए साहूकार परिवार की चिंता और बढ़ने लगती है. इधर सुकुमार राजा के दरबार में जा कर गालियां देता है. लेकिन साहूकार के मंत्री के साथ का विद्रोह उसकी जय-जयकार के शोर में दब जाता है और सक्रिय विरोध का गला पैसों के बल पर घोंट दिया जाता है.

ये थे कलाकार

सुकुमार : अमित कुमार
राजकुमारी : रूबी खातून
मां : सुनीता भारती
साहूकार : 1. क्षितिज प्रकाश, 2. रवि शंकर पासवान 3. गुलशन कुमार
ठाकुर : प्रफुल कुमार
महामंत्री : जिवेश कुमार सिंह
राजा : उमेश कुमार निराला

शांत मन से पढ़ें, तो होगा बेहतर

पटना. ज्ञान का भंडार खुला हुआ है, लेकिन इसमें गोता लगाने के लिए आपको रीडिंग का तरीका सीखना होगा. अगर रीडिंग स्किल आपने सीख लिया तो किसी से भी रू-ब-रू हो सकते हैं.

यह बातें अमिटी के मार्केटिंग मैनेजर अनिल कुमार पांडेय ने कहीं. वे मंगलवार को श्री अरविंद महिला कॉलेज में अंगरेजी डिपार्टमेंट द्वारा 'कैसे करें रीडिंग स्किल डेवलप' विषय पर आयोजित परिचर्चा को संबोधित कर रहे थे.

■ श्री अरविंद महिला कॉलेज में 'कैसे करें रीडिंग स्किल डेवलप' विषय पर परिचर्चा आयोजित

कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि हायर एजुकेशन के स्टूडेंट्स को ज्यादा बोलकर नहीं पढ़ना चाहिए. शांत मन से पढ़ाई करने की आवश्यकता है. रीडिंग सीखने पर दुनिया खुली होती है.

वहीं, अंगरेजी डिपार्डमेंट की एचओडी डॉ सरिता सिन्हा ने छात्राओं को कहा कि रीडिंग समुद्र की तरह है. हमेशा याद रखने के लिए रीडिंग स्किल बेहतर होना चाहिए.

हायर एजुकेशन में बोल कर पढ़ने से रीडिंग की स्पीड कम हो जाती है. इस मौके पर छात्राओं ने सवाल-जवाब भी किया, जिसमें रीडिंग के अनेक टिप्स दिये गये.

---

6 | I next, Patna, 20 January 2016 | www.inextlive.com/patna | CITY EVENTS/CHAI-TIM

How could I not? You defended me for my 'body paint' when most of the world wanted to lynch me! Gratitude. @PoojaB1972

'कालिदास' में सपना रह गया अधूरा

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

patna@inext.co.in

PATNA(19 Jan) : निमार्ण रंग मंच हाजीपुर ने मंगलवार को कालिदास रंगालय में नाटक वीरगति का मंचन किया. निर्देशन विनित प्रकाश ने किया.

अमीरी गरीबी खत्म हो...

सुकुमार तीन धनाढ्य साहुकारों में अकेला संतान है. उसका मन धन बटोरने का नहीं है, बल्कि अमीरी गरीबी के फासले को दूर करने का है. मन विचलित है. वह समाज के लिए कुछ करना चाहता है. जिसके चलते उसके पिता काफी परेशान रहते हैं. विवाह के बाद भी उसका मन नहीं लगता. चोरों की पिटाई को देख उन्हें छुड़वा देना. डकैटों को सही रास्ता दिखाता. वो समाज के लिए काम करता है. मगर सफलता नहीं मिलती.

पैसा में बहुत ताकत है....

एक दिन सुकुमार को उसके पिता कहते हैं पैसा में बहुत ताकत है. इससे प्रतिष्ठा, यश, माया, विद्या, बल, सत्ता सब खरीद सकते हैं. सुकुमार नजरअंदाज करता है और काम क रहता है. इससे समाज में सुकुमार अलग प्रतिष्ठा मिलती है. राजा के द में चाटुकार महामंत्री से विद्रोह उस जय जयकार की शोर में दब क जाती है. अंत में पैसे के बल पर सुकु का सपना घोंट दिया जाता है. ना में अमित, रूबी, सुनिता, रवि श पासवान, गुलशन, जीवेश और उमेश निराला ने अभिनय किय

कुछ यूं भी दिखा अभिनय...

PICS: I NEXT

हर जगह भ्रष्टाचार...

बिहार स्ट्रीट थिएटर अकादमी ने मंगलवार को कालिदास रंगालय में नुक्क नाटक भ्रष्टाचार महोत्सव का मंचन किया. नाटक का निर्देशन नीरज कुम ने किया. इसमें सरकारी संस्थान में हो रहे भ्रष्टाचार को दिखाया गया.

top

23. DOSHI KAUN? (By A. K. sinha) Acting

सिटी हैपनिंग

प्रभात खबर
www.prabhatkhabar.com

कालिदास रंगालय में हुआ नाटक 'दोषी कौन' का मंचन

शहर के चकाचौंध में भी लोगों को होता है पछतावा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शहर की रौनक सबको प्यारी लगती है. चाहे वह गांव का कोई गंवार हो या शहर में रह रहा अमीरजादा. इस रौनक के चकाचौंध में लोग आकर यहीं के बन जाते हैं. कई तो इतने चौंधिया जाते हैं कि उन्हें अपनी सीमा तक का पता नहीं रहता है. गांव छोड़ लोग शहर में तो आ जाते हैं, लेकिन वे यहां आकर रंगरेलियां भी मनाने लगते हैं.

इन रंगरेलियों के बीच उन्हें कुछ समय बाद पछतावा भी होता है. ऐसी ही एक कहानी को शनिवार को कालिदास रंगालय में दिखाया गया. वरिष्ठ रंगकर्मी, निर्देशक और कहानीकार अरुण कुमार सिन्हा द्वारा लिखित इस कहानी को नाटक 'दोषी कौन' के रूप में न सिर्फ दिखाया गया, बल्कि समाज की सच्चाई को भी प्रदर्शित किया गया. लोगों को संदेश भी दिया गया कि लोग अपने दायरे को कतई ना भूला करें. बिहार आर्ट थियेटर द्वारा मंचित इस नाटक का निर्देशन भी अरुण कुमार सिन्हा ने किया.

यह थी कहानी

शारदा शहीद फौजी की एक विधवा है, जो गांव में खेती-बाड़ी संभाल कर अपनी अनाथ भतीजी (अपने भाई की बेटी) पुष्पा का पालन-पोषण करती है.

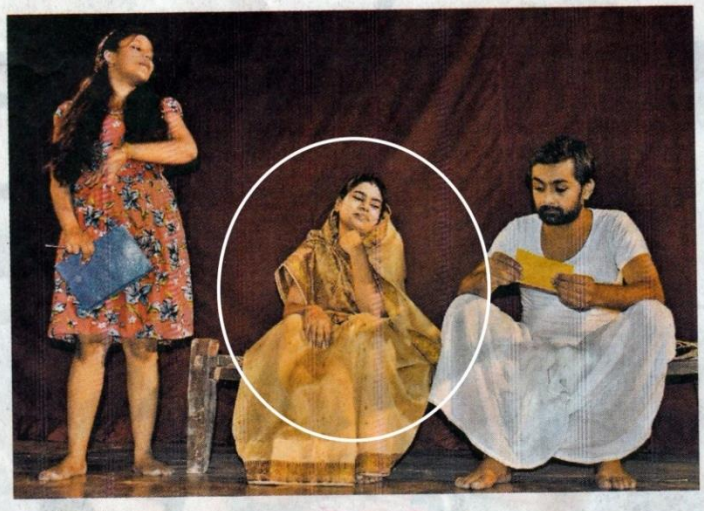

नाटक में हिस्सा लेते कलाकार.

वह अपने पुत्र को शहर के हॉस्टल में रख कर बेहतर शिक्षा प्रदान कर रही है, जो अपने गांव में काफी दिनों से नहीं आया है.

बीमार शारदा के इलाज के लिए, दवा लेने गयी पुष्पा का अपहरण हो जाता है. शारदा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बिरजू पुष्पा की तलाश करता रह जाता है, लेकिन वह नहीं मिलती है. इधर अपने बचपन के दोस्त जयमंगल के परामर्श पर बिरजू गांव की संपत्ति बेच कर शहर आ जाता है. गलत संगत के कारण बिरजू शराब और शबाब में डूब जाता है. एक दिन उसकी मुलाकात स्वरूपाबाई से होती है, तो वह उसकी सुंदरता के मोहपाश में बंध जाता है. रंगरेलियां और अंतरंगता बढ़ जाती है. तभी कुछ दिनों बाद उसे पता चलता है कि यह पुष्पा है, जो बचपन में खो गयी थी. इस बात को जानने के बाद वह स्वरूपाबाई आत्महत्या कर लेती है. उस बात के पश्चाताप के लिए बिरजू भी जहर की शीशी की तरफ बढ़ जाता है.

इन्होंने किया अभिनय

नाटक में पुष्पा और स्वरूपाबाई का किरदार उज्जवला गांगुली ने निभाया. बिरजू का किरदार अभिषेक ने और शारदा का किरदार सुनिता भारती ने निभाया. इनके अलावा अमृता कुमारी, रविभूषण शर्मा भट्ट, अभिषेक सिंह, विशाल तिवारी, उमेश कुमार, नंदलाल सिंह, दीपांकर शर्मा, एस कृष्णन (नायडू), प्रदीप कुमार ने भी अभिनय किया. इसके अलावा नेपथ्य में मंच परिकल्पना में प्रदीप गांगुली, प्रकाश संचालन में राज कुमार शर्मा, प्रकाश परिकल्पना में सुमन सौरभ और सुजीत कुमार शर्मा, ध्वनि प्रभाव में उपेन्द्र कुमार ने बेहतरीन सहयोग किया.

दोहरी मंच सज्जा से बढ़ गयी खूबसूरती

नाटक में गांव के परिवेश और शहर के परिवेश को दिखाया गया था. इसके लिए दो तरह की मंच सज्जा की गयी. पहले परदे के उठते ही सामने गांव का परिवेश था. उसके बाद दूसरे परदे के पीछे शहर के परिवेश को दिखाया गया था. नाटक में कहानी के अनुरूप ही मंच सज्जा को दिखाया गया था.

शनिवार को कालिदास रंगालय में 'दोषी कौन' नाटक का भावपूर्ण दृश्य। • हिन्दुस्तान

...और स्वरूपाबाई ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली

पटना | कार्यालय संवाददाता

एक और नया नाटक शनिवार को देखने को मिला। कालिदास रंगालय में बिहार आर्टथियेटर के कलाकारों ने 'दोषी कौन' नाटक का मंचन किया। अरुण सिन्हा लिखित और निर्देशित इस नाटक में एक लड़की की जिंदगी की कहानी के जरिए जिस्मफरोशी व नारी शोषण पर सवाल उठाया गया। पूछा गया कि इसके लिए दोषी कौन? वह लड़की या समाज।

कहानी ही सब कुछ : नाटक की कहानी एक फौजी परिवार की थी। फौजी की विधवा शारदा गांव में रहती है। अपनी अनाथ भतीजी पुष्पा के साथ। और पुत्र बिरजू को पढ़ने के लिए शहर भेजती है। शारदा बीमार पड़ती है। पुष्पा दवा लाने के लिए जाती है। इस बीच उसका अपहरण हो जाता है। बिरजू गांव आता है, तब तक मां की मृत्यु हो जाती है और बहन भी नहीं मिलती है। दोस्त की सलाह पर खेत बेचता है। शहर में जाकर बसता है और रंगरेलियों में डूब जाता है। कोठेवाली बाई स्वरूपाबाई से अंतरंगता बढ़ती है और आखिर में पता चलता है कि स्वरूपा ही पुष्पा है। फिर क्या था, स्वरूप लज्जित होकर जहर खा लेती है। बिरजू पश्चाताप में डूब जाता है। उज्वला गांगुली (स्वरूपाबाई), अभिषेक (बिरजू), अमृता कुमारी (पुष्पा), सुनिता भारती (शारदा) आदि ने अभिनय किया।

मंचन

- बैट स्थापना दिवस समरोह में 'दोषी कौन?' नाटक का मंचन
- अरुण कुमार सिन्हा लिखित व निर्देशित नाटक का मंचन

top

24. KURSI PURAN / Acting

विटी

prabhatkhabar.com

लाइफ@पट

www.prabhatkhabar.co

पॉलिटिकल ड्रामा. नाटक में नेता और कुरसी की दिखायी गयी लीला

यहां कुरसी जाते ही जैसे मिट जाती है 'खास' की पहचान

कालिदास रंगालय के मंच पर कुरसी के लिए मारामारी की कहानी बयां करते कलाकार.

नाटक का मंचन करते कलाकार.

■ **कलाकारों ने दिखाया नेता बनना है कितना आसान**

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अजी नेता बनना, तो बहुत आसान काम है, लेकिन मुझे भाषण देनी नहीं आती रामू की इस सवाल पर प्यारेलाल कहता है कि तू भी कमाल करता है. चुनावी भाषण के लिए और करना ही क्या होता है? एक फॉर्मूला याद रखना बस. अरे ऐसे मौके पर सत्ता में आने के पहले देश की गड़बड़ियों के पीछे सरकार सरकार का हाल बताइयेगा और सत्ता में आने के बाद उन्हीं गड़बड़ियों के पीछे किसी विदेशी शक्ति का हाल. सत्ता में आने के लिए ये बातें किसी गांव या शहर में नहीं, बल्कि कालिदास रंगालय के मंच पर देखने को मिला. गुरुवार को यहां नाट्य संस्था कला जागरण द्वारा कुरसी पुराण नाटक का मंचन किया गया, जिसमें कुर्सी पाने के लिए कई तरह के दृश्यों को दर्शाया गया, जिसे देखने के लिए दर्शकों की भीड़ जमते गयी. नाटक के कई दमदार डायलोग्स व दृश्यों को देख दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी. इस हास्य नाटक का निर्देशन सविंन्द कुमार द्वारा किया गया. नाट्य में कई हास्य पात्र थे, जिन्होंने लोगों को हंसने पर मजबूर कर दिया.

यहां धोखा ही धरम है

झूठ और फरेब की दुनिया में कोई भी इनसान किसी का नहीं होता. यहां धोखा ही धरम है. स्वार्थ ही ईमान है और एक दूसरे की लाश पर चढ़ कर अपनी मंजिल हासिल करना चाहते हैं. राजनीति की दुनिया में यह बातें आम होती है. नाटक में कुछ इन्हीं बातों का जिक्र किया गया. यहां बेजान कुर्सी ही इनसान की पहचान होती है. कुरसी गयी तो पहचान मिट जाती है. यहां प्यारे लाल राजनीति पार्टी का अध्यक्ष है और वह अपनी चालाकी से एक सीधे-साधे इंसान रामू को राम प्रसाद औरत वाला के अवतार में एम पी के चुनाव में खड़ा करता है. वे अवसरवादी चमचें, कलयुगि बाबाओं और झूठे वादों के बदौलत एमपी बन भी जाते हैं. वे समाज में नारी सशक्तीकरण, दलित और लोगों का कल्याण तो नहीं होता है, लेकिन यहां राम प्रसाद जैसे नेताओं का कल्याण जरूर होता है. ऐसे में रामप्रसाद की प्रेमिका को आगे के लिए कुछ बातें सुझती है और वे प्यारेलाल को सबक सिखाने के लिए जुट जाती है. कोतवाल की मदद से शहर में दंगा करवा कर उसकी जिम्मेवारी प्यारे लाल पर मढती है. इसके बाद उसे उसे राम प्रसाद की पार्टी का अध्यक्ष बना दिया जाता है और प्यारे लाल की कुर्सी चली जाती है. कुर्सी जाते लोग उसे पहचानना छोड़ देते हैं. नाटक में कुर्सी पुराण की कहानी को कलाकारों ने बखूबी अंदाज में पेश किया.

मंच पर

- प्यारे लाल– गुंजन कुमार
- पचपन– रूबेश कुमार
- कोतवाल सिंह– डॉ शंकर सुमन
- चित्रा– सुनीता भारती
- छप्पन– सुनीता कुमारी
- अखबारी लाल– कुमुद रंजन
- राम प्रसाद– आमिर हक
- भोला– अमित कुमार
- सफाया स्वामी– मिथिलेश सिन्हा

अच्छे सोच के लिए अच्छा 150 बच्चों को मफ्त में

top

25. BHRUN HATYA EK ABHISHAP

पटना, 5 जुलाई 2016 www.jagran.com III

हलचल

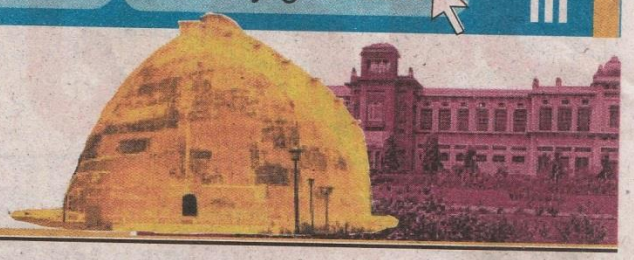

...धनों का अभाव

स्पेशियल्टी अस्पताल

...एं।

...में एक ही टेक्नीशियन है। ...र डॉट सेंटर का टेक्नीशियन ...टीबी संबंधी जांच और दवा ... उपलब्ध है।

...लिए एक ही शौचालय

... महिलाएं सुबह आठ बजे ...तजार कर रही थीं, मगर ...-रे में दो टेक्नीशियन ड्यूटी ... चल रहा था। परिसर में ...रीजों के लिए एक ही ... है। शिशु टीकाकरण केंद्र ...क भी मरीज नहीं थे।

> अल्ट्रासाउंड के लिए सुबह नौ बजे से इंतजार कर रही हूं, मगर डॉक्टर नहीं हैं। यह स्थिति आए दिन रहती है । इससे मैं ... हूं, अन्य लोगों की भी
>
> – रेखा मौर्य

> जरूरत पड़ने पर रोगी कल्याण समिति से डेंगू और एचआइवी किट मंगाकर जांच की जाती है। करीब चार माह पहले एलिजा रीडर और सीबीसी मशीन मंगाने के लिए स्वास्थ्य विभाग को लिखा गया था। प्रधान सचिव ने बिहार मेडिकल सर्विसेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कारपोरेशन लिमिटेड को मशीन खरीदने को कहा था। अस्पताल को जल्द ये मशीनें मिल जाएंगी। पारामेडिकल स्टाफ की कमी है, भर्ती की कवायद जारी है। अल्ट्रासाउंड की डॉक्टर का फोन आया था। उनकी सास के पैर में फ्रेक्चर हो गया, इसलिए आने में विलंब हो रहा है। सर्पदंश की दवा नहीं मिल पाई है। जल्द ही खरीद ली जाएगी।
>
> – डॉ. मनोज कुमार सिन्हा, अधीक्षक, न्यू गार्डिनर रोड हॉस्पिटल

ड्रेसर का पद खाली

अस्पताल में कोई ड्रेसर नहीं है। नर्स के सहारे ड्रेसिंग रूम का काम चलाया जाता है। करीब चार माह पहले यहां का ड्रेसर सेवानिवृत्त हो गया है, तब से यह पद खाली है। ड्रेसिंग रूम और एक्स-रे रूम के सामने फूलों की क्यारी में रूई आदि मेडिकल वेस्ट बिखरे पड़े थे। अस्पताल में ओपीडी में 20 और इनडोर में 31 प्रकार की दवाएं उपलब्ध थीं। इस सीजन के लिए जरूरी सर्पदंश की दवा उपलब्ध नहीं थी। इमरजेंसी में डायरिया और उल्टी के एक-दो मरीज पहुंच रहे थे, जिनका उपचार किया जा रहा था।

> सुबह आठ बजे से अल्ट्रासाउंड कराने के लिए बैठी हूं। मगर पता नहीं अभी तक डॉक्टर क्यों नहीं आई। पूछने पर भी कहीं से जानकारी नहीं मिल रही है ।
>
> – रंजीता सुख, बोरिंग रोड

बेटी बचाने के लिए दीपिका को लेनी पड़ी कानूनी मदद

'भ्रूण हत्या अभिशाप' का मंचन करते कलाकार। जागरण

मां मुझे बचा लो। मैं इस दुनिया में आना चाहती हूं। मैं भी सरोजनी नायडू और इंदिरा गांधी बनकर देश की सेवा करनी चाहती हूं। मुझे दादा क्यों मारना चाहते हैं। क्यों मुझे दुनिया में नहीं आना देना चाहते। बताओ मां। कुछ ऐसे ही मार्मिक संवाद कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में सुनने को मिले। मौका था बिहार कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सौजन्य से शुभेच्छु सेवा द्वारा आयोजित नाटकं 'कन्या भ्रूण हत्या अभिशाप' के मंचन का। एसी गौतम द्वारा लिखित एवं कुमार मानव के निर्देशन में कलाकारों ने एक मां के दर्द और गर्भ में पल रहे बच्ची की वेदना को प्रस्तुत कर घटते लिंगानुपात को बखूबी दिखाया। सेठ करोड़ीमल सूद का कारोबार करता है। लड़कियों से बेहद नफरत करता है। इसके उलट सेठानी लड़कियों की पक्षधर हैं। इसे लेकर पति-पत्नी में आए दिन झगड़ा होता है। सेठ का लड़का राकेश बंगलुरू में रहकर पढ़ाई करता है। इस दौरान उसे दीपिका नाम की लड़की से प्यार हो जाता है। दोनों विवाह कर घर लौटते हैं। इससे करोड़ीमल काफी नाराज होता है। उसे घर में रहने की जगह नहीं देता। दोस्त रामलाल के समझाने पर सेठ इसकी सर्शत इजाजत देता है, प्रसव के समय बहू को सेठ की बात माननी होती है। कुछ दिन बाद दीपिका गर्भधारण करती है। उसकी जांच के लिए सेठ बहाने बनाकर एक डॉक्टर के पास ले जाता है। डॉ. सक्सेना कन्या भ्रूण की जानकारी देता है। यह सुन सेठ बच्ची को गर्भ में मारने की योजना बनाता है। दीपिका स्वप्न में गर्भ में पल रही बच्ची के साथ बात करती है। वह इस दुनिया मे लाने का वादा बच्ची से करती है। उधर डॉक्टर गर्भ में पल रही बच्ची को मारने की तैयारी करता है, तभी दीपिका फोन करके थानेदार को अस्पताल में बुला लेती है। थानेदार लिंग परीक्षण एवं भ्रूण हत्या कराने को लेकर डॉक्टर और सेठ को जेल भेज देता है।

मंच पर कलाकार	
सेठ	सरबिंद कुमार
सेठानी	विभा सिन्हा
राकेश	कुमार मानव
दीपिका	सुनीता भारती
रामलाल	ओम कपूर
डॉ. सक्सेना	अंश्विनी कुमार
थानेदार	बलराम कुमार
मंच से परे कलाकार	
प्रकाश व्यवस्था	सुभाष चंद्रा
रूप सज्जा	विजय कुमार चौधरी

top

26. PANDE JI KA PATRA

नृत्यांगना नीलम चौधरी विषय पर प्रकाश डालेंगे।

रंगमंच : कालिदास रंगालय में 'पांडे जी का पतरा' नाटक का हुआ मंचन

पतरा में लिखल बात मानी त भूखे मर जायम

शास्त्र के अनुसार हमनी चले लगम त भूखले मर जायम। जेतना बात पांडे जी के पतरा में लिखल रह हई ओतना तो पड़िआइन के अंचरे में रह हई। कुछ ऐसे ही संवाद कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में गुरुवार को प्रस्तुत हो रहे थे। सभागार में बैठे दर्शक ठेठ मगही अंदाज में कलाकारों द्वारा प्रस्तुत संवाद सुन लोट-पोट हो रहे थे। कला संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार सरकार के सौजन्य से अहसास कलाकृति संस्था द्वारा मगही लेखक अभिमन्यु प्रसाद एवं कुमार मानव के निर्देशन में पांडे जी के पतरा का मंचन किया गया। पंडिताइन की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी सुनीता भारती के अभिनय को दर्शकों ने खूब सराहा। सत्यदेव का बेटा संतोष अपने दोस्तों के साथ गदहा को मारकर खा जाता है। अपने बेटे के इस पाप से मुक्त होने के लिए सत्यदेव गांव के पुरोहित पांडेय जी के यहां जाता है। पाप से मुक्ति के लिए पंडित ने सत्येदव को सभी लड़कों के वजन अनुसार सोना के गदहा बना कर दान करने की बात कहता है। लड़कों के झुंड में पंडित का लड़का संतोष की बात आते ही पंडित फिर से पतरा देख नया नियम बनाने की योजना बनाता है। पंडित कहता है कि पांच सात लइकन, एक संतोष, गदहा मारे के एको न दोष। यह बात सुनकर सत्यदेव आग बबूला हो जाता है। उधर गांव के ताड़ीखाना में मंगरू और ढोढाई ताड़ी पीकर आपस में झगड़ा कर कहते हैं कि जो नर मछली खात है मुंडा पोछ समेत, सो बैंकुठ जात है नाती पोता समेत। दोनों इसी बात पर झगड़ा कर कहते हैं कि पांड जी अपने अनुसार नियम बनाकर लोगों को ठगते हैं। अपने ऊपर जब बात आती है तो सारा पतरा और पैतरा दोनों बदल जाता है।

कलिदास रंगालय में 'पांडे जी का पतरा' नाटक का मंचन करते कलाकार ।

ये थे कलाकार	
पंडिताइन	सुनीता भारती
झगड़ानाथ पांडेय	सरबिंद कुमार
सरस्वती	विभा सिन्हा
महेश	कुमार मानव
मंगरू	विजय कुमार चौधरी
ठाकुर	ओम कपूर
सत्यदेव शर्मा	भुवनेश्वर शर्मा

पटना. धर्म. समाज. संस्था

...ब्रीफ

...नाई गई

...कृष्णा निकेतन में कृष्णा सिंह ...ी की सालगिरह मनाई गई। ...वं झारखंड के सभी विद्यालयों ...ने उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि ...व बच्चों एवं वृद्धों को भोजन ...के कृष्णा सिंह ने स्त्रियों को ...ा पर बल दिया था।

...ड़ी शनिवार को

...न विकास एवं वित्त निगम द्वारा आयोजित श्रृंखला सिने ...वार शाम पांच बजे आयोजित ...शक गंगा कुमार ने कहा कि ...कलाप्रेमियों के लिए एक मंच ...बहार के तमाम कलाकारों एवं ...ल्म क्लब अपनी सक्रियता दर्ज ...ारी देते हुए क्लब के संयोजक ...ा पटेल ने बताया कि इस बार ...सनेमा में गीत-संगीत एवं नृत्य ... बातचीत करने के लिए संगीत ...ा सिंह एवं शास्त्रीय नृत्यांगना ...क्रम फिल्म विकास निगम के ... आयोजित है।

...का महत्वपूर्ण प्रयास

...ा के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी ...त्री नीतीश कुमार के नशाबंदी ...ते हुए कहा है कि यह समाज ...प्रयास है। शराब और नशा के

कालिदास रंगालय | संस्था अहसास कलाकृति ने नाटक पांडें जी के पतरा का मंचन किया

वैज्ञानिक युग में भी पंडा-पुरोहित के चक्कर में पड़कर ठगे जा रहे हैं लोग

सिटी रिपोर्टर|पटना

कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सौजन्य से कला के प्रति समर्पित संस्था अहसास कलाकृति ने नाटक पांडे जी के पतरा का मंचन कालिदास रंगालय में किया। मगही के स्तंभ लेखक अभिमन्यु प्रसाद मौर्य एवं युवा रंगकर्मी कुमार मानव के निर्देशन में मंचित नाटक को कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवंत कर दिया। झगड़नाथ पांडे की भूमिका में सरबिंद कुमार ने दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं। पड़िआइन की भूमिका में सुनीता भारती को दर्शकों ने पसंद कियां। कचौरी ठाकुर की भूमिका में ओम कपूर ने दर्शकों को अपने अभिनय से खूब गुदगुदाया। नाटक पांडे जी के पतरा में यही दर्शाया गया कि आज हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। फिर भी पंडा और पुरोहित के चक्कर में पड़कर ठगे जाते हैं और वो कर बैठते हैं, जो हमें नहीं करना चाहिए।

नाटक के अन्य कलाकार : अपराजिता नाथ, विभा सिन्हा, विजय कुमार चौधरी, बलराम कुमार, मंतोष कुमार, पृथ्वी राज पासवान, भुवनेश्वर कुमार, रितेश कुमार।

गुरुवार को कालिदास रंगालय में नाटक पंडित जी का पतरा का मंचन करते कलाकार।

top

27. MADUYAMINI & LORHANATH (Maithili)

LIVE

मंगलवार, 15 नवम्बर, 2016, पटना

फिल्म फेस्टिवल शुरू हुआ।

रंग जमाया कलाकारों ने : लोकनृत्य और फिल्म दोनों का तड़का बच्चों ने लगाया। झुमक भारी हो झुमक भारी...हाली-हाली बरस इनर देवता...जैसे गीतों पर लोकनृत्य किए, तो देश रंगीला रंगीला देश मेरा रंगीला...सहित कई गानों पर शानदार नृत्य किए। राजस्थान से आए सुब्राती

राजधानी में जीवंत हुई मिथिलांचल की संस्कृति, नाटक लोढ़ानाथ के मंचन के साथ विद्यापति पर्व समारोह संपन्न

चूड़ा-माछ, मखान आओर की चाही बाजू...

विद्यापति पर्व

पटना | प्रधान संवाददाता

ओ विवेका बाबू, चूड़ा-माछ आओर मखानक खीर टेस्ट करियउ...बड नीक छैक...आरो अहिबेर त बगियो अछि...उंह सकरौरी के त बाते नई पुछु...मुदा खमाउरक बचका नहीं देखैत छी..नहि भेटल की एतए...गाम स नहि मंगेलियई..आह इ व्यंजनक स्वाद स गामक याद आबि गेल...आओर की चांही बाजू... सिन्हा लाइब्रेरी परिसर में सोमवार को मैथिली भाषियों के संग पटनावासी भी मिथिलांचल के गाम-घर के पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद चखकर आह्लादित थे।

मिथिलांचल के व्यंजनों की खुशबू फैली चारों ओर : मौका था चेतना समिति की ओर से आयोजित तीन दिवसीय विद्यापति स्मृति पर्व समारोह के समापन दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का। खास आकर्षण रहा राजधानी की मैथिल ललनाओं की ओर से आयोजित आनंद मेला। मैथिली महिला संघ के बैनर तले इसमें प्रेमलता मिश्र प्रेम, रमा खर्गा, कल्पना, विनिता झा आदि ने बगिया, चूड़ा-माछ,मखाना खीर, पान आदि के व्यंजन परोसे। उद्घाटन किया बाल संरक्षण आयोग की निशा झा ने। हालांकि मेले में व्यंजन स्टॉलों के तादाद लगातार घटते जा रहे हैं।

मिथिला, मैथिल के विकास करने वालों को समर्थन दें : शाम में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उद्घाटन करते हुए राजस्व, भूमि सुधार मंत्री मदन मोहन झा ने मैथिली पढ़ने वालों की घटती तादाद पर चिंता जतायी और कहा कि मिथिला, मैथिल के विकास की बात जो करे उसे ही मैथिलीभाषी अपना समर्थन दें। इस मौके पर समिति अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र, सचिव उमेश मिश्र,राम सेवक राय ने भी अपने विचार रखे। संचालन उपाध्यक्ष विवेकानंद ठाकुर ने किया।

हे भोला कहिया हरब हमर क्लेष... : समारोह का खास आकर्षण रहा पं. गोविंद झा लिखित और कुणाल निर्देशित नाटक लोढ़ानाथ। नाटक में सुनीता भारती, आस्था झा, प्रेमलता मिश्र प्रेम, संजीव पांडेय, अंतेश झा, कुशाग्र, सुमित, कुमार गगन ने किरदारों को जीवंत किया।

नाटक के पहले मंच पर भास्कर झा ने जो रे चान जो सनेस लेने जो ...गीत से आनंदित किया। फिर नूपुर चक्रवर्ती ने दर्दी सजना हमरा ले अहां बेदर्दी कहां..गाया। रजनीश झा ने अहां एलियई अनहार में इजोर भए गेलई ...पेश किया। ईशा वैदेही, शरद कश्यप ने भी गीत गाए। ढोलक पर जीवानंद निराला, तबला पर पंकज शर्मा,सिंथेसाइजर पर अविनाथ थे।

बच्चों ने मचाया धमाल

सुबह में बच्चों के लिए आयोजित बाल मेला में गायन, पेंटिंग, निबंध,दौड़ आदि में अपनी प्रतिभा दिखायी। शाम में मंत्री मदन मोहन झा के हाथों विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसमें सुयश कुंवर, विवेक, पूर्णिमा, स्तुति, आस्था, आदित्य, दिव्यम, पुनित, वंदना, दीपिका, भूमिका, सत्यम, जयश, शान्वी शामिल थे।

माछ, मखान के साथ दिखी मिथिला की शान

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

तीन दिवसीय विद्यापति पर्व समारोह का सोमवार को समापन हो गया. इस दौरान स्थानीय सिन्हा लाइब्रेरी परिसर में मिथिला की संस्कृति की पूरी झलक यहां एक जगह पर देखने को मिली. यहां कई आयोजन किये गये और हर आयोजन में मिथिला की खूबसूरती देखने को मिली. चाहे वह मधुबनी पेंटिंग की खूबसूरती हो या पुस्तक प्रदर्शनी या फिर खान-पान में 56 तरह के भोग के स्टॉल. वहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत संध्या में नाटक 'लोढ़ा नाथ' का मंचन किया गया. कार्यक्रम का समापन राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ मदन मोहन झा ने किया. उन्होंने इस दौरान आयोजित हुए विभिन्न खेल, पेंटिंग व अन्य प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को पुरस्कृत भी किया.

56 तरह के लजीज व्यंजनों का उठाया लुत्फ

दोपहर तीन बजे से यहां आनंद मेला के अंतर्गत मिथिला पकवान के 56 तरह के व्यंजनों का स्टॉल यहां लगाया गया. इसमें प्रमुख रूप से मखाना, मछली, पान, तिलकोर का तरुआ, तिल का आचार, कुमरोरी, तिलौरी, पुरुकिया आदि बनाया गया.

बच्चों ने की मस्ती

बाल मेला के दौरान बच्चों के लिए गायन, खेलकूद, पेंटिंग, श्रुति लेख, म्यूजिकल चेयर समेत कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया . गायन में जूनियर में स्तुति, आस्था झा व आदित्य कुमार झा ने मारी बाजी . वहीं सीनियर छात्रों में दिव्यम, सुमित झा, वंदना ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया . म्यूजिकल चेयर में वंदना, शैल व भूमिका ने बाजी मारी . चम्मच दौड़ में मोहन, आदित्य व स्पर्श तथा 50 मीटर दौड़ में जयश, मोहन, दिपिका भारद्वाज ने बाजी मारी .

सांस्कृतिक कार्यक्रम भी

इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया. इसमें गीत संगीत व नृत्य के अलावा पंडित गोविंद झा का नाटक का मंचन किया गया. नाटक में समाज के वैसे लोगों पर प्रहार किया गया जो अंधविश्वास या नाकारात्मक सोच रखते हैं. एक धार्मिक अंध विश्वास से उत्पन्न देवता स्वरूप लोग तो दूसरे सक्षम होने के बावजूद कुछ न करने वाले व अकर्मण्य बने रहने वाले लोगों पर चोट किया.

top

Media Reports -- Costume (Theatre)

1. Teesree Kasam (By Fanishwar Nath 'Renu')

पटना, 23 फरवरी 2016 www.jagran.com

चल

कालिदास रंगालय में 'तीसरी कसम' नाटक का मंचन करते कलाकार।

दिल टूटा तो हीरामन ने खाई 'तीसरी कसम'

कालिदास रंगालय में सोमवार को फणीश्वर नाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी 'मारे गए गुलफाम' उर्फ 'तीसरी कसम' के नाट्य रूपांतरण कर मंचन किया गया। कहानी गाड़ीवान हीरामन और नर्तकी हीराबाई के साथ चलती है। हीराबाई को अपनी गाड़ी पर बिठाकर सोनपुर मेला ले जाता है। उसे हीराबाई से प्रेम हो जाता है, लेकिन हीराबाई की अपनी मजबूरी है। वह दूसरी थियेटर में चली जाती है। हीरामन का दिल टूट जाता है। नाटक का मंचन माध्यम फाउंडेशन ने किया। निर्देशन धर्मेश मेहता ने किया।

यह थी नाटक की कहानी

हीरामन एक गाड़ीवान है। गाड़ी चलाने के दौरान दो ऐसी घटनाएं होती हैं कि हीरामन चोरबाजार का माल नहीं लादने और बांस नहीं लादने की कसम खाई। एक दिन हीरामन को नौटंकी में काम करनेवाली हीराबाई मिलती है। उसे सोनपुर मेला में जाना होता है। रास्ते में दोनों की बात होती है। दोनों एक बीच प्यार का रिश्ता पनपता है। हीरामन उसे चाहने लगता है। हीराबाई उसे नौटंकी का पास हीरामन को देती है। कुछ दिन बाद हीरामन को पता चलता है कि हीराबाई किसी और मेले के लिए जा रही है। इससे उसका दिल टूट जाता है। हीरामन, हीराबाई को खोज में स्टेशन जाता है। स्टेशन पहुंचते ही हीराबाई बताती है कि उसकी हीराबाई को दूसरे सौदागर ने खरीद लिया है। यह सुनते ही हीरामन का दिल टूट जाता है। हीरामन तीसरी कसम खाता है कि अब किसी नौटंकी वाली को गाड़ी में नहीं बैठाएगा।

ये रहे कलाकार

हीरामन : संजय सिंह
हीराबाई : यूरेका
दारोगा : कुमार विक्की
लाल मोहर : कृष्णा कुमार
लहसनवा : आनंद कुमार
सिपाही : रमण रंजन
ग्रामीण : कुणाल सिकंद, राकेश मेहता

नेपथ्य के कलाकार

प्रकाश व्यवस्था : उपेंद्र कुमार
वेश-भूषा : सुनीता भारती
रूप-सज्जा : अशोक घोष
पार्श्व स्वर : चित्रा श्रीवास्तव
मंच प्रभारी : सरविन्द कुमार

top

2. Kaumudi Mahotsav (By Dr. Ram Kumar Verma)

प्यार में हृदय का व्यापार नहीं समर्पण होना चाहिए

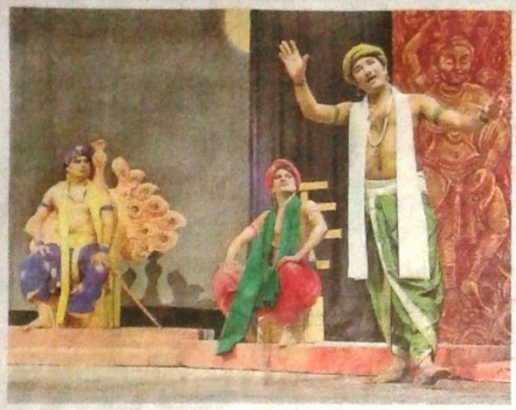

कालिदास रंगालय में नाटक के मंचन का एक दृश्य। इस दौरान बड़ी संख्या मे दर्शक मौजूद थे।

DRAMA

डीबी स्टार » पटना

प्यार हृदय का व्यापार नहीं समर्पण होता है। सच्ची नारी मोहित नहीं होना चाहती, वह तो आत्मसमर्पण करना चाहती है और जो नारी मोहित होती है, वह अपनी रूह का व्यापार करती है, हृदय का समर्पण नहीं।

प्राचीन पाटलिपुत्र शहर या कुसुमपुर की राज नर्तकी अलका के इन संवादों से कालिदास रंगालय का मंच सोमवार की शाम गूंज रहा था। यह मौका था बिहार आर्ट थियेटर की ओर से मंचित नाटक कौमुदी महोत्सव का, डॉ रामकुमार वर्मा लिखित इस नाटक का निर्देशन किया था राजू कुमार ने। नाटक के माध्यम से निर्देशक ने मनुष्य के दोहरे चरित्र को दिखाने का प्रयास किया। नाटक से पटना के अतीत की एक रोमांचक झांकी दिखाई गई।

नाटक की कहानी मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के समकालीन है। इसमें दिखाया गया कि आचार्य चाणक्य की सहायता से चंद्रगुप्त मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पर अधिकार कर संपूर्ण मगध साम्राज्य का अधिपति बन जाता है। वह चाणक्य

लेखक	डॉ रामकुमार वर्मा
निर्देशक	राजू कुमार
सहायक निर्देशक	मारिया परवीन
मंच परिकल्पना	विष्णुदेव कुमार विशु
प्रकाश	प्रदीप गागुली और राजकुमार शर्मा
रूप सज्जा	अशोक घोष और उपेंद्र
संगीत	अरविंद कुमार और आशीष कुमार
परिधान	सुनीता भारती और सुजीत कुमार
कलाकार	धीरज कुमार, इरफान अहमद, राजू कुमार,मारिया प्रवीण, अमरदीप कुमार, डॉ शंकर सुमन।
सैनिक	वैभव, विशाल, उमेश पासवान, अजीत कुमार और मनीष कुमार
नृत्य	आयुषी, शिल्पी, कृतिका गुप्ता, मोनिका कुमारी, खुशबू कुमारी और पूजा कुमारी।

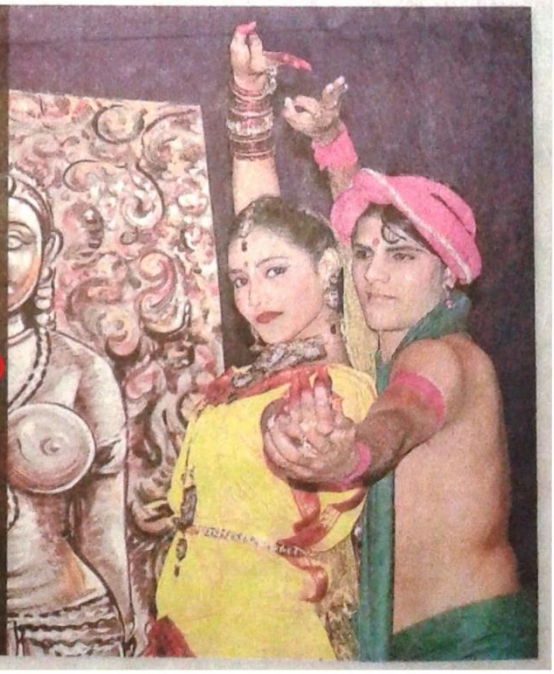

3. Chakravyuh [top]

Media Reports – Street Theatre (Nukkad Natak)

Clean Patna Mission 1000 Ton (स्वच्छता पटना मिशन १००० टन)

नाटक से जागरूकता

लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करने के लिए शुक्रवार को मौर्य लोक परिसर में नुक्कड़ नाटक आयोजित किया गया।

top

Clean Patna Mission 1000 Ton (स्वच्छता पटना मिशन १००० टन)

top

Cleanliness Campaign (स्वच्छता अभियान) Street Play in Schools

स्वच्छता के प्रति नुक्कड़ नाटक से किया अवेयर

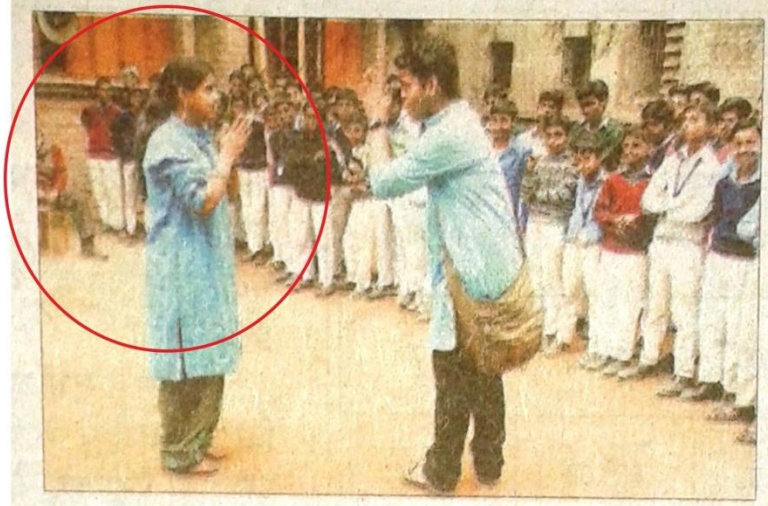

पटना. माध्यम फाउंडेशन द्वारा शनिवार को मुसलिम हाइस्कूल में स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान पर आधारित कार्यशाला, वार्तालाप के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया. इस मौके पर विवेक कुमार द्वारा लिखित व धर्मेश मेहता द्वारा निर्देशित नुक्कड़ नाटक 'मेरा आंगन मेरा देश' का मंचन किया गया. नाटक में बच्चों को साफ-सफाई से रहने एवं अपने आस-पास और सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया गया. नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों में सुनीता भारती, रंजन कुमार, मनोज कुमार, चित्रा श्रीवास्तव, सौरभ कुमार, कृष्णा कुमार, मनव्वर आलम, विक्की कुमार, विभा सिन्हा आदि मौजूद थे. कार्यक्रम में डा संजय कुमार, अनवारूल हसन, काजमी, डा रविंद्र कुमार चंद्र समेत कई लोग मौजूद थे.

top

Media Reports & Telecast Screen Shots– Sunita Bharti TV & Films

TV Serial 'Balchanma' Telecast By DD Kisan & DD Bihar

Played Mother of eponymous protagonist in serial "Balchanma" (2015)
Featuring Prominently in 20 episodes out of 27

दैनिक जागरण
जागरण सिटी — हलचल
पटना,

हमारी मिट्टी से जुड़ा है 'बलचनमा'

● डीडी किसान पर आज रात 9:30 बजे से धारावाहिक का होगा प्रदर्शन ● बलचनमा में सभी कलाकार बिहार के

तेंदुलकर चौहान, पटना

'चौदह बरस की उम्र में मेरा बाप मर गया। परिवार में मां, दादी और छोटी बहन थी। नौ हाथ लंबा, सात हाथ चौड़ा घर था-दो छप्परों वाला। सामने छोटा-सा आंगन था। बाईं ओर आठ-दस धूर बाड़ी थी। उसमें साल के बारहों महीने कुछ-न-कुछ उपजा लिया जाता। पिछवाड़े गिरहथ का इनारा था, पक्की जगत वाला। सामन इन्हीं के खेत फैले पड़े थे।' ये पंक्तियां हैं नागार्जुन लिखित उपन्यास 'बलचनमा' की। विद्वानों ने इस पुस्तक को 'लोक जीवन का सांस्कृतिक इतिहास' कहा है। शायद आपने ये पुस्तक पढ़ी हो, लेकिन अगर नहीं पढ़ी तो अब आप बलचनमा को टेलीविजन पर देख सकते हैं। दूरदर्शन पटना ने डीडी किसान के लिए बलचनमा धारावाहिक का निर्माण किया है। इस धारावाहिक का प्रसारण आज से डीडी किसान पर शुरू हो रहा है। सोमवार से बुधवार तक रात रात 9:30 बजे यह धारावाहिक प्रसारित होगा। कुछ 27 एपिसोड वाले इस धारावाहिक की शूटिंग बिहार में ही हुई है। साथ ही इसके लगभग सारे 124 मुख्य कलाकार भी बिहार के ही हैं।

आज भी सार्थक है बलचनमा : बलचनमा के पटकथा लेखक कुणाल झा कहते हैं कि यह हमारे समाज में आज भी सार्थक है। जिन समस्याओं को नागार्जुन ने देखा। जिसके लिए बलचनमा ने आवाज उठाई, उन सारी चीजों से हमें आज भी निजात नहीं मिल पाई है। आज सूरत बदल गई। चीजें बदल गई। लेकिन आज भी हमारे यहां किसानों की स्थिति वैसी ही है। आज भी शोषित लोगों पर अत्याचार होते हैं। और आज भी ये संघर्ष जारी है। आगे उन्होंने कहा कि बलचनमा को सार्थक रूप में लोगों के समक्ष लाने के लिए पटकथा लिखना बेहद मुश्किल और चुनौती भरा था। मैंने अपनी ओर से पूरी कोशिश की है कि बलचनमा का वास्तविक चित्र दर्शकों के समक्ष आ सके। आगे दर्शक तय करेंगे।

नाटक 'बलचनमा' का एक दृश्य — जागरण

काम करके अच्छा लगा : बलचनमा के निर्देशक लाल विजय शाहदेव ने बताया कि बिहार के कलाकारों के साथ काम करके बहुत अच्छा लगा। बलचनमा को निर्देशित करना आसान नहीं था। मैंने अपनी ओर से भरपूर कोशिश की है कि इसे लोगों के सामने ठीक उसी रूप में प्रस्तुत करूं, जैसी लोगों ने बलचनमा की कल्पना की है। कलाकारों ने इसमें भरपूर सहयोग दिया। मैं मूल रूप से झारखंड से हूं और मुंबई में रहता हूं। मुझे नहीं लगा था कि यहां के कलकारों में इतनी प्रतिभा होगी और वे बखूबी कैमरे को फेस कर पाएंगे। सबने काफी मेहनत की व काफी बेहतर काम किया। मैं चाहूंगा कि आगे भी इन कलाकारों के साथ काम करने का मौका मिले।

आगे भी होगी ऐसी कोशिश : दूरदर्शन पटना के कार्यक्रम अधिशासी अजयकांत शर्मा ने बताया कि डीडी किसान ने हमें बलचनामा बनाने का मौका दिया। यह हमारा पहला बड़ा प्रोडक्शन था। इसमें अब तक हम सफल रहे हैं।

यहां के कलाकारों से भी भरपूर सहयोग मिला। उम्मीद है कि हमें और भी प्रोडक्शन्स मिलेंगे ताकि भविष्य में हम और भी बेहतर कार्य कर पाएं। प्रोडक्शन होगा तो यहां के कलाकारों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। उन्हें कुछ आर्थिक मदद भी मिलेगी।

प्रमुख कलाकार

● पहली बार मुझे इतने बड़े प्रोडक्शन में काम करने का मौका मिला। सभी कलाकार जाने पहचाने थे इसलिए कोई खास दिक्कत नहीं हुई। डायरेक्टर सर ने काफी सहयोग किया।
-रूबी खातून, बलचनमा की बहन।

काफी मिलनसार भाव से काम किया। सेट पर हमें कभी भी सीनियर-जूनियर का फर्क महसूस नहीं हुआ।
- सुनीता भारती, बलचनमा की मां।

● काफी अच्छा अनुभव रहा। मैंने इससे पहले भी काम किया है, लेकिन दूरदर्शन में काम करने का मौका पहली बार मिला। बलचनमा की कई अच्छी यादें हैं। अपने इस काम को मैं हमेशा याद रखूंगी।
- रूचि रानी, बलचनमा की पत्नी।

● बलचनमा को मैं कभी अपने जीवन से अलग नहीं कर पाउंगा। इसने मुझे अपने खुद के जीवन से परिचित कराया। बलचनमा के चरित्र को निभाकर बहुत कुछ सीखने को भी मिला।
- बुल्लू कुमार, बलचनमा।

● सभी लोगों ने बहुत सहयोग किया। दूरदर्शन के प्रोडक्शन से जुड़े लोगों ने

● मुझे खुशी है कि मैं बलचनमा का हिस्सा बन पाया। इस धारावाहिक को लोग हमेशा याद रखना चाहेंगे। एक तो इसमें बिहार के जीवन का चित्रण है। दूसरी ओर इसके सारे कलाकार भी बिहार के ही हैं।
- विक्रांत चौहान, बंगाली की भूमिका में।

मिथिलांचल के सांस्कृतिक विखंडता को दर्शाती है बलचनमा

TV SERIAL

डीबी स्टार » पटना

चालीस-पचास के दशक के सामाजिक विषमता को चित्रित करने वाली धारावाहिक बलचनमा का प्रसारण डीडी किसान चैनल पर इसी सप्ताह सोमवार से शुरू हुआ है। सोमवार से बुधवार रात साढ़े नौ बजे प्रसारित होने वाली यह धारावाहिक बाबा नागार्जुन के प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास बलचनमा पर आधारित है। इसके निर्देशक दूरदर्शन बिहार केंद्र के निदेशक पुरुषोत्तम नारायण सिंह और एपिसोड निर्देशक लाल विजय शाहदेव हैं। रूपांतरण कुणाल और संगीत संयोजन सीताराम ने किया है। इसके प्रोडक्शन का जिम्मा अजय कांत शर्मा ने संभाला है। बाबा नागार्जुन के पुत्र सुकांत नागार्जुन से भी परामर्श लिया गया है।

एक चरवाहे की कहानी

कहानी मिथिलांचल के एक चरवाहे बालचंद(बलचनमा) की है, जो बड़ा होकर स्वराजी(आश्रम का प्रमुख) बन जाता है। जब बलचनमा 14 वर्ष का था, उसके पिता ने जमींदार के बगीचे से एक कच्चा आम तोड़कर खा लिया। इसकी सजा उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। इस घटना के बाद बलचनमा को उसी जमीनदार की भैंस चराने पर मजबूर होना पड़ता है। चरवाहे से लेकर स्वराजी बनने के दौरान बलचनमा को किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, धारावाहिक में इसका चित्रण किया गया है। अंग्रेजों के जुल्म से परेशान रहने के बावजूद मिथिलावासी किस तरह से आपस में बिखरे रहते थे, इस पर कटाक्ष किया गया है। धारावाहिक में बलचनमा का किरदार रोहित और बुल्लु सिंह, उसकी मां का किरदार सुनीता, पिता का किरदार संजीव योगी, छोटे मालिक का मटु और छोटे मालकिन का किरदार रेखा सिंह ने निभाया है। इसके अतिरिक्त 123 मुख्य किरदार और अन्य किरदार हैं।

साहित्यकार बाबा नागार्जुन के प्रसिद्ध उपन्यास बलचनमा पर आधारित धारावाहिक के दृश्य और निर्देशक पुरुषोत्तम नारायण सिंह (बाएं)।

एक महीने में पूरा हुआ शूटिंग

ज्यादातर शूटिंग हाजीपुर के संभोपट्टी और मुजफ्फरपुर के बाधी इस्टेट में हुई है। कुछ हिस्सों को पटना में भी शूट किया गया है। सारे कलाकार बिहार के ही हैं। 27 एपिसोड लंबे धारावाहिक को एक महीने में ही शूट कर लिया गया। निर्देशक पुरुषोत्तम नारायण सिंह ने बताया कि धारावाहिक देखने पर सभी को नयापन का अहसास होगा। क्षेत्रीय चैनलों पर प्रसारित होने वाले अन्य धारावाहिकों की तुलना में इसके कास्ट्यूम, लोकेशन, भाषा आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है।

top

Telecast Snapshots : Balchanma

top

Telecast Snapshots : Balchanma

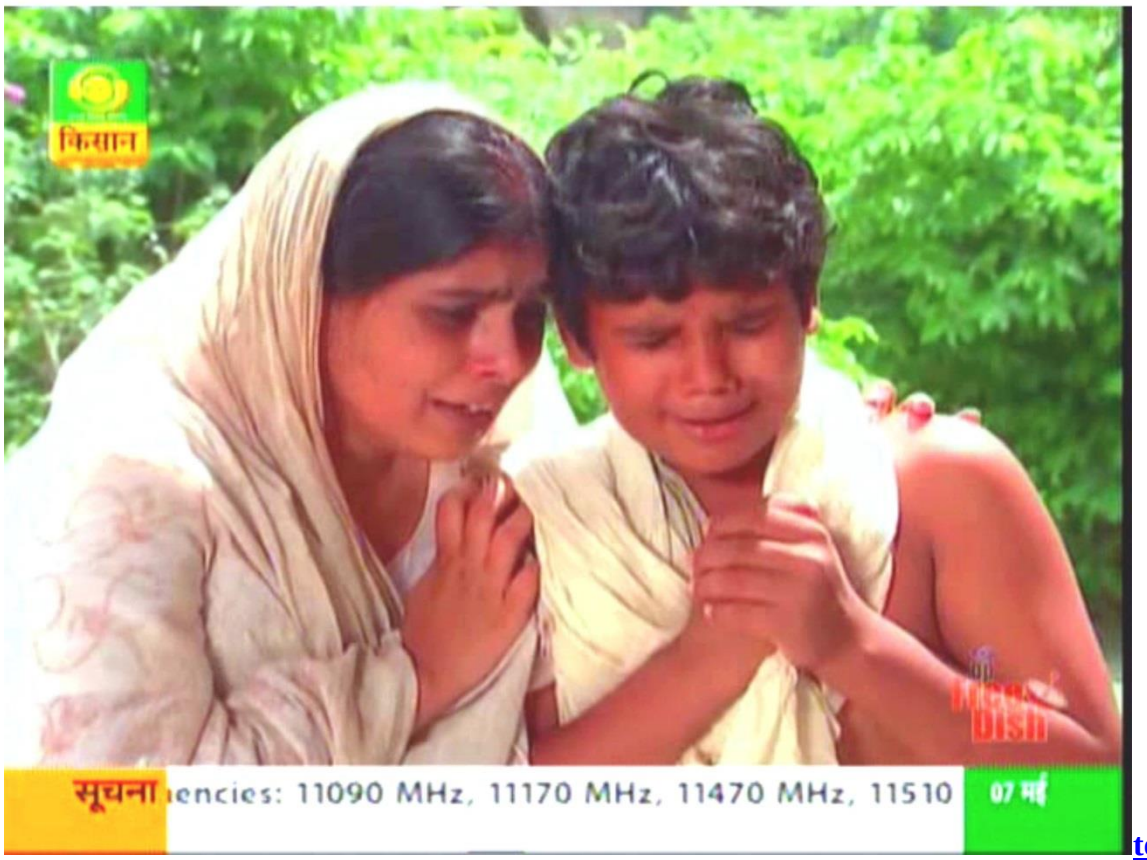

top

Telecast Snapshots : Balchanma

top

Telefilm Kharij (Telecast on DD **National & DD Bihar)**

Written by Subhash Sharma **Directed by** Ajay Kant Sharma

IN THE NEWS

खारिज के जरिए बिहार की कहानी की सामने

वरिष्ठ आईएएस अधिकारी सुभाष शर्मा की कहानी पर बनी फिल्म

फिल्म का एक दृश्य

कभी अपनी हनक से महकमे को हिलाए रखने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी सुभाष शर्मा को एक बार फिर बिहार के लोग याद कर रहे हैं। इस बार उनकी हनक नहीं, उनकी रचनात्मकता के कारण। सुभाष शर्मा ने बिहार में दहेज कुप्रथा को लेकर एक कहानी 'खारिज' लिखी थी, जिसे टेलीफिल्म के रूप में तैयार कर पेश किया है पटना दूरदर्शन ने। पिछले महीने के अंत में आई इस फिल्म के जरिए सुभाष शर्मा तो चर्चा में हैं ही, यह कहानी भी उसी अंदाज में चर्चित हुई है जैसे कभी आईएएस अधिकारी खुद हुआ करते थे बिहार में।

वरिष्ठ कथाकार और आईएएस सुभाष शर्मा की कहानी पर बनी टेलीफिल्म ख़ारिज का निर्देशन अजय कांत शर्मा ने किया है। कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार के आसपास घूमती है, जो अपने बेटे की शादी के लिए लड़की देखने जाते हैं। कथाकार ने इस कहानी के जरिए दिखाया है कि कैसे बिहार में दहेज के नाम पर लड़की के साथ अत्याचार किया जाता रहा है। पिछले दिनों प्रसारित इस टेलीफिल्म में दिखाया जाता है कि कैसे लड़की देखने के नाम पर लड़के वालों की ओर से तरह-तरह की ऊलजलूल मांगों की फेहरिस्त लंबी होती जाती है। लड़की देखने के नाम पर लड़के की मां अमानवीय व्यवहार को आज की उच्च शिक्षा प्राप्त लड़की बर्दाश्त नहीं कर पाती है।

प्रस्तुतकर्ता पटना दूरदर्शन पटना के कार्यक्रम अधिशासी एस. पी. सिंह कहते हैं कि कथाकार सुभाष शर्मा ने बिहारी परिवेश की इस कहानी में भी लड़की के विद्रोह को दिखाकर ऐसे परिवार को ख़ारिज करते हुए नया मानदंड स्थापित किया है। टेलीफिल्म में राकेश कपूर, सुनीता भारती, पंकज सिंह, आमिर हक़, आकाश सोनी, श्वेता सिंह आदि ने मुख्य भूमिका निभाई। टेलीफिल्म के परियोजना निदेशक खुद पटना दूरदर्शन के निदेशक पुरुषोत्तम एन. सिंह हैं। पी. एन. सिंह की मानें तो बिहारी पृष्ठभूमि पर बनी कहानी को बिहारी मूल के कलाकारों ने स्थानीय पुट के कारण बेहतर बनाया है, लेकिन सबसे अच्छी बात इसका कथानक और संदेश है।

top

Screen Shots

Played protagonist in telefilm "Kharij" (2016)
(On DD National produced by DD Bihar)

Telecast Snapshots : Kharij

top

Telecast Snapshots : Kharij

top

Krishi Darshan: (Telecast on DD Kisan & DD Bihar)

A Serial on Agricultural Information written, acted and anchored by Sunita Bharti

Screen Shots

top

किसान
सलाह
सदाबहार किस्म लगा सकते हैं किसान
पूरे भारत में की
09 फरवरी

17:38
म में लोगों की सुनी शिकायतें, अधिकारियों को

top